

प्रभाव मूल्यांकन सीएसआर परियोजनाएं

वित्त वर्ष 2020-21





प्रस्तुतकर्ता: टीएचडीसीआईएल

कॉर्पोरेट कार्यालय, ऋषिकेश
प्रगतिपुरम, बायपास रोड,
ऋषिकेश - 249201 (उत्तराखंड)



तैयारकर्ता:

एसआर एशिया

4 एफ-सीएस-25 और 26, अंसल प्लाजा
मॉल, सेक्टर-1, वैशाली, गाजियाबाद, उत्तर
प्रदेश 201010

प्रस्तावना

परियोजनाओं का प्रभाव मूल्यांकन टीएचडीसीआईएल की एक वार्षिक प्रक्रिया है।

यह अभ्यास और समीक्षा प्रक्रिया, सेवा-टीएचडीसी की सीएसआर पहल के अंतर्गत प्रारंभ की गई है। परियोजनाओं के बुनियादी स्तर पर प्रभाव का आकलन करने में सहायता करती है और कंपनी के सीएसआर और स्थिरता दृष्टिकोण और मिशन के साथ समन्वय करते हुए उपयुक्त भविष्य की रणनीति तैयार करने के लिए उपयोगी जानकारी प्रदान करती है। जो कि कंपनी द्वारा व्यवसाय और इसके संचालन की सामाजिक और पर्यावरणीय संबंधी मामलों का निबटारा करने और समुदायों पर सकारात्मक प्रभाव डालने तथा कंपनी द्वारा संचालित विविध सामुदायिक और पर्यावरण संरक्षण संबंधी टिकाऊ पहलों के माध्यम से पर्यावरण के संरक्षण के लिए इसकी प्रतिबद्धता में एकीकृत है।

एसआर एशिया (सीएसआर परामर्शदात्री एजेंसी) द्वारा की गई पिछली प्रभाव आकलन समीक्षाओं ने समुदाय और स्थानीय क्षेत्र की महसूस की गई आवश्यकताओं के साथ-साथ प्राकृतिक संसाधन क्षेत्र में निवेश के आधार पर सीएसआर नीतियों और कार्यक्रमों को बढ़ाने के लिए सकारात्मक बातचीत की सुविधा प्रदान की है। आगे के पृष्ठ सेवा-टीएचडीसी सीएसआर पहल (नए कंपनी अधिनियम 2013 / सीएसआर प्रभाव आकलन दिशा-निर्देशों के प्रावधानों के अनुसार) के तहत योजनाबद्ध और निष्पादित परियोजना के पर्यावरणीय, आर्थिक, सामाजिक और अन्य प्रभाव संबंधी आंकड़ों के प्रभाव आकलन समीक्षा और टिप्पणियों का एक विश्लेषणात्मक और सुसंगत विश्लेषण प्रदान करते हैं, जिसका उद्देश्य वास्तविक परियोजना प्रभाव को इच्छित प्रभाव की तुलना में मापना है, इसके बाद एक वैज्ञानिक सुदृढ़ प्रभाव आकलन एवं मूल्यांकन मानदंड (ओइसीडी डीएसी मूल्यांकन मानदंड) के आधार पर प्रभाव श्रेणियों के अनुसार आंकड़ों का विश्लेषण किया जाता है।

सेवा-टीएचडीसी के वर्षों (2022 और इससे पहले 22-21, 21-20, 20-19) में सकारात्मक परिणामों की सीमा बढ़ाने के लिए कार्यक्रम के प्रभाव को मापना उचित है, साथ ही सामाजिक और पर्यावरणीय सीएसआर डेटा संचालित प्रभाव आकलन के व्यापक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए बेहतर नीति नियोजन और कार्यान्वयन के लिए मध्य-पाठ्यक्रम सुधार सुनिश्चित करना भी आवश्यक है।

आई ए रिपोर्ट सामाजिक और पर्यावरणीय पहलों के प्रदर्शन और वास्तविक प्रभाव की समीक्षा करने, परिणामों को व्यापक श्रेणी के हितधारकों के समक्ष प्रस्तुत करने और सीएसआर एवं स्थिरता नीति सुझावों और सिफारिशों के लिए रणनीतिक इनपुट प्रदान करने के साथ-साथ अंतर विश्लेषण और प्रभाव की गंभीरता के आधार पर परियोजना कार्यान्वयन साझेदारों को रिपोर्ट करने का एक प्रयास है ताकि सकारात्मक परिणाम और प्रभाव को बढ़ाया जा सके और पहचाने गए जोखिम या नकारात्मक प्रभाव को न्यूनतम करने के लिए शमन के उपाय किए जा सकें, जो आई ए प्रक्रिया और दृष्टिकोण के केंद्रीय घटक के रूप में हितधारकों के साथ गहन परामर्श और सहभागिता पर आधारित डेटा आधारित आई ए समीक्षा प्रक्रिया पर आधारित हो। आई ए रिपोर्ट एक वैज्ञानिक प्रयास है जो एक बाह्य मूल्यांकन साझेदार के रूप में टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के नेतृत्व और प्रबंधन में सामाजिक और पर्यावरणीय प्रभाव पहलों के प्रतिबिंबों को प्रतिबिंबित करता है।

आभार

यह रिपोर्ट सीएसआर एशिया इंटरनेशनल कंसल्टिंग फर्म द्वारा किए गए प्रभाव मूल्यांकन स्टडी का परिणाम है, जो टीएचडीसी के लिए सीएसआर और स्थिरता में किया गया है, जो सीएसआर नियमों / नए कंपनी अधिनियम 2014 / सीएसआर नवीनतम संशोधनों (2021) के प्रावधानों के अनुसार है।

हम सेवा-टीएचडीसी टीम के प्रति अपना हृदय से आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने योजना और अवधारणा चरण से लेकर डेटा संग्रह के लिए टूल्स के निर्माण, साइट विजिट के दौरान मार्गदर्शन, गुणात्मक अंतर्दृष्टि और संबंधों के लिए जानकारी और डेटा के प्रमाणीकरण, प्रशासनिक समर्थन और सुविधा प्रदान करने में अपना पूरा सहयोग और समर्थन दिया है। सीएसआर प्रभाव मूल्यांकन टीम को सम्मानित विभागों, टीमों, कार्यान्वयन एजेंसियों और जमिनी स्तर पर सपोर्ट देने के लिए एवं टीएचडीसी सीएसआर टीम द्वारा साझा किए गए अवलोकन और अंतर्दृष्टि इस अध्ययन के निष्कर्षों और उभरते निष्कर्षों पर पहुंचने में बहुत महत्वपूर्ण रहे हैं।

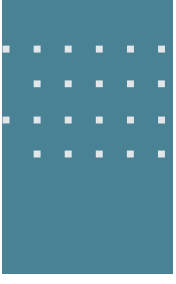
हम अध्ययन के सभी चरणों में सुचारू संचालन के लिए आवश्यक सहायता के लिए विभिन्न कार्यान्वयन एजेंसियों द्वारा दिए गए सहयोग को भी रिकॉर्ड में दर्ज करते हैं। जिन उत्तरदाताओं ने अपना बहुमूल्य समय देकर और साक्षात्कार चर्चाओं में गहराई से उतरकर हमें अपेक्षित प्रतिक्रिया और जानकारी प्रदान की वे सभी विशेष आभार और प्रशंसा के पात्र हैं। अध्ययन के लिए अनुभवात्मक साझाकरण के साथ प्रदान की गई जानकारी डेटा की समीक्षा और विश्लेषण के लिए बहुत महत्वपूर्ण थी। निर्धारित समय सीमा के भीतर परियोजनाओं के प्रभाव आकलन को सफलतापूर्वक संचालित करने के लिए कार्यक्रम प्रबंधकों और अनुसंधान अन्वेषकों को हार्दिक धन्यवाद। यह प्रभाव आकलन रिपोर्ट श्री पी.के. नैथानी, मुख्य महाप्रबंधक (एस एंड ई), बी.पुरम से श्री अरविंद कुमार वर्मा, वरिष्ठ प्रबंधक (सीएसआर), श्री भगवती प्रसाद कपटियाल, प्रबंधक (सीएसआर), कोटेश्वर और श्री सौरभ कुशवाह, एसपीओ (सामाजिक) और सीएसआर एवं एस एंड ई अनुभाग के अन्य अधिकारियों के व्यापक परामर्श, सहभागिता और सहयोग से तैयार की गई है। टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, मसौदा रिपोर्ट की समीक्षा के लिए वरिष्ठ एसोसिएट सलाहकार के रूप में डॉ. मोना नरगोलवाला के योगदान की हार्दिक सराहना करता है।

हम परियोजना स्थलों पर डेटा अंतर्दृष्टि, साइट पर सत्यापन और मूल्यांकन तथा प्रभाव आकलन प्रक्रिया के दौरान लॉजिस्टिक्स/फील्ड सहायता के लिए टीएचडीसी की पूरी टीम के आभारी हैं। सभी हितधारकों और एसआर एशिया सीएसआर प्रभाव आकलन टीम को अपना बहुमूल्य समय देने और अध्ययन को प्रारंभ से लेकर पूर्ण होने तक सुविधाजनक बनाने तथा इसे वर्तमान स्वरूप में एक सार्थक अध्ययन और रिपोर्ट के रूप में परिणत करने के लिए हार्दिक धन्यवाद देते हैं।

बीरेंद्र रतूड़ी

अंतर्राष्ट्रीय निदेशक, एसआर एशिया

फरवरी 2023



मूल्यांकन टीम

नाम	पदनाम
डॉ. लक्ष्मण सेमवाल (पीएचडी)	वरिष्ठ रिसर्च एसोसिएट
श्री अजय कुमार (एम.ए.दर्शनशास्त्र)	जूनियर रिसर्च एसोसिएट
डॉ. स्वाति भट्ट (पीएचडी सीएसआर)	परामर्शदाता
जया यादव (एम.एससी रिसोर्स मैनेजमेंट)	रिसर्च एसोसिएट
सुश्री रमीन अंजुम (एम.ए. समाजशास्त्र)	रिपोर्ट डिजाइनर
सुश्री तरनजीत कौर (एमबीए)	संचार प्रबंधक
सुश्री स्नेहा रतूड़ी (एम.एस सी माइक्रोबायोलॉजी)	टीम सदस्य
श्री आकाश रतूड़ी (बी.ए प्रोग्राम)	टीम सदस्य

संकेताक्षर की सूची

एसीएमटी	: कंप्यूटर और प्रबंधन प्रशिक्षण अकादमी
बीपील	: गरीबी रेखा से नीचे
सीसीए	: सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ
सीएसआर	: कॉर्पोरेट की सामाजिक जिम्मेदारी
सीएचसी	: सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र
सीएमओ	: मुख्य चिकित्सा अधिकारी
सीएचसी	: सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र
डीएम	: जिला अधिकारी
इएमबी	: शिक्षा प्रबंधन बोर्ड
एफडीजी	: फोकस समूह चर्चा
जीओआई	: भारत सरकार
जीओयूपी	: उत्तर प्रदेश सरकार
आईए	: प्रभाव आकलन
आईएलआर	: आइस लाइन रेफ्रिजरेटर
ओबीसी	: अन्य पिछड़ी जाति
ओइसीडी-डीएसी	: आर्थिक सहयोग संगठन- विकास सहायता समिति
यूपी	: उत्तर प्रदेश
पीटीएम	: अभिभावक शिक्षक बैठक
आरएंडआर	: पुनर्वास और पुनर्स्थापन
आरटीइ	: शिक्षा का अधिकार
एसआरएशिया	: सामाजिक उत्तरदायित्व एशिया
एससी	: अनुसूचित जाति
एसटी	: अनुसूचित जनजाति
एसएचजी	: स्वयं सहायता समूह
टीएचडीसी टी.बी.पी.	: टीएचडीसी टिहरी बाँध परियोजना
टीइएस	: टीएचडीसी शिक्षा सोसायटि : संदर्भ की शर्तें

विषयसूची

प्रस्तावना	
आभार	(i)
मूल्यांकन टीम	(ii)
संक्षिप्ताक्षरों की सूची	(iii)
विषय-सूची	(iv)
आंकड़ों की सूची	(v)
तालिकाओं की सूची	(vii)
कार्यकारी सारांश	(ix)
अध्याय 1: परिचय	6
1.1 प्रभाव मूल्यांकन (आईए) का संक्षिप्त अवलोकन	6
1.2 टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के बारे में	7
1.3 टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड सीएसआर और स्थिरता नीति	8
1.4 टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड सीएसआर पहलों की रूपरेखा	9
1.5 सीएसआर पर व्यय	9
अध्याय 2: प्रभाव मूल्यांकन डिजाइन और कार्यप्रणाली	11
2.1 कार्य-क्षेत्र	11
2.2 एस आर एशिया का प्रभाव मूल्यांकन दृष्टिकोण	11
2.3 मूल्यांकन मानदंड (ओइसीडी)	13
2.4 अनुसंधान डिजाइन और कार्यप्रणाली	14
2.5 डेटा संग्रह के उपकरण	14
2.6 अध्ययन की सीमाएँ	15
अध्याय 3: टीएचडीसी निर्मया के तहत स्वास्थ्य पहल	16
3.1 सस्ती और सुलभ स्वास्थ्य सुविधाएँ	16
3.1.1 परियोजना 1: जिले में मोबाइल डिस्पेंसरी सह एम्बुलेंस सेवा, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड	18
3.1.2 परियोजना 2: दीनगांव, प्रतापनगर ब्लॉक, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड में एलोपैथिक डिस्पेंसरी का संचालन	21
3.2 चिकित्सा उपकरणों का प्रावधान	24
3.2.1 परियोजना 3: सीएमओ, टिहरी, जिला टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड को कोविड-19 की रोकथाम के लिए स्वास्थ्य उपकरणों की आपूर्ति	24
3.2.2 परियोजना 4: सीएमओ टिहरी, जिला: टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड के कार्यालय को कोविड-19 के लिए पी.पी.ई. किट उपलब्ध कराने के लिए वित्तीय सहायता	27
3.2.3 परियोजना 5: डीएम, टिहरी, जिला: टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड को कोविड-19 की रोकथाम के लिए स्वास्थ्य उपकरणों की आपूर्ति	30
3.3 कोविड की रोकथाम के लिए कोल्ड चेन उपकरण	33
3.3.1. परियोजना 6: परिवार स्वास्थ्य विभाग उत्तराखंड के लिए डीप फ्रीजर और आईएलआर की खरीद और बेस अस्पताल, श्रीनगर में वॉक-इन कूलर की आपूर्ति और स्थापना	34
3.4 पोषण पहल	39
3.4.1 परियोजना 7: कोटेश्वर, टिहरी, जिला: टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड के विभिन्न गांवों में 'लॉक-डाउन' (कोविड-19 से सुरक्षा के लिए सरकार द्वारा लगाया गया) के कारण प्रभावित 1082 किसानों को खाद्य सामग्री का वितरण	39

अध्याय 4: टीएचडीसी जागृति के अंतर्गत शिक्षा पहले	43
4.1 गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना	43
4.1.1 परियोजना 1: ऋषिकेश और टिहरी में टीएचडीसी शिक्षा सोसाइटी के माध्यम से परियोजना प्रभावित और व्यावसायिक क्षेत्र के परिवारों के लिए एक हाई स्कूल और एक इंटर कॉलेज का संचालन	43
4.1.2 परियोजना 2: कोटेश्वर, टिहरी में जे.एच. स्कूल का संचालन	47
4.2 स्कूल में निर्माण, पुनर्निर्माण और मरम्मत पहले	50
4.2.1 परियोजना 3: राजकीय इंटर कॉलेज में प्रयोगशाला का निर्माण	50
4.2.2 परियोजना 4: राजकीय मिडल स्कूल, सुनारगांव (अठुरवाला), देहरादून की मरम्मत और रखरखाव	52
4.2.3 परियोजना 5: परियोजना 5: राजकीय इंटर कॉलेज खोला कड़ा कोट ब्लॉक कीर्तिनगर की क्षतिग्रस्त छत का पुनर्निर्माण और मरम्मत कार्य	54
अध्याय 5: टीएचडीसी दक्ष के तहत कौशल विकास और आजीविका सृजन पहले	57
5.1 परियोजना 1: ब्लॉक थौलदार जिला: टिहरी गढ़वाल में मशरूम प्रशिक्षण और उत्पादन केंद्र	58
5.2 परियोजना 2: कौशल विकास के तहत 20 युवाओं को एनएसक्यूएफ स्तर का कंप्यूटर प्रशिक्षण	61
5.3 परियोजना 3: उपली रमोली पट्टी, प्रतापनगर ब्लॉक, टिहरी में सतत आजीविका और संसाधन प्रबंधन	64
अध्याय 6: टीएचडीसी के तहत ग्रामीण विकास पहले	69
उत्थान	70
6.1 परियोजना 1: कोटेश्वर के जखोली गांव में सामुदायिक भवन का निर्माण	72
6.2 परियोजना 2: 02 बहुउद्देशीय कार्यशाला/भवन का निर्माण	
6.3 परियोजना 3: विभिन्न सिविल कार्य (सामुदायिक हॉल और नाली कार्य के साथ चारदीवारी का निर्माण)	74
6.4 परियोजना 4: उत्तराखंड जल संस्थान, नई टिहरी को ट्रक माउंटेड वाटर टैंकर उपलब्ध कराना	77
अध्याय 7: विविध परियोजनाएँ	79
7.1 परियोजना 1: ब्लॉक जाखणीधार, टिहरी में सनदना वाटरशेड परियोजनाएँ (नाबार्ड/सेवा-टीएचडीसी)	80
7.2 परियोजना 2: विभिन्न सरकारी होम्योपैथिक अस्पताल में वॉशरूम, रैंप का निर्माण और मरम्मत कार्य	84
7.3 परियोजना 3: सैनिटरी नैपकिन उत्पादन इकाई की स्थापना	87
7.4 परियोजना 4: ब्लॉक कीर्तिनगर और हिंडोलाखाल (टिहरी) के 150 महिला मंडल दल के लिए कीर्तन सामग्री की आपूर्ति	90
अध्याय 8: निष्कर्ष एवं समापन	93
अध्याय 9: सुझाव और संस्तुति	97
फोटो गैलरी	99

आकृतियों की सूची

फिगर 1	: परियोजनाओं की प्रभावशीलता रेटिंग	2
फिगर 2	: परियोजनाओं की दक्षता रेटिंग	3
फिगर 3	: परियोजनाओं की प्रभाव रेटिंग	3
फिगर 4	: परियोजनाओं की स्थिरता रेटिंग	3
फिगर 1.1	: सीएसआर व्यय (करोड़ में)	10
फिगर 2.1	: असाइनमेंट निष्पादन के लिए एसआर एशिया दृष्टिकोण	12
फिगर 2.2	: ओईसीडी-सीएडी मूल्यांकन मॉडल	13
फिगर 3.1	: डिस्पेंसरी में डॉक्टरों का परामर्श	21
फिगर 3.2	: एलोपैथिक डिस्पेंसरी में मौजूद चिकित्सा उपकरण	21
फिगर 3.3	: सीएचसी नरेंद्रनगर में अल्ट्रासाउंड मशीन	24
फिगर 3.4	: सीएचसी नरेंद्रनगर में कपड़े धोने की मशीन	24
फिगर 3.5	: सीएचसी, नरेंद्रनगर	26
फिगर 3.6	: डेटा के लिए सीएमओ कार्यालय, टिहरी का दौरा	27
फिगर 3.7	: आशा वर्कर को किट प्रदान की गई	27
फिगर 3.8	: आशा वर्कर को मास्क प्रदान किए गए	29
फिगर 3.9	: सीएमओ कार्यालय, टिहरी में पल्स ऑक्सीमीटर	30
फिगर 3.10	: ऑक्सीजन सिलेंडर	30
फिगर 3.11	: डिजिटल थर्मामीटर	30
फिगर 3.12	: राज्य कोल्ड चेन कार्यालय, देहरादून में डीप फ्रीजर	34
फिगर 3.13	: आइस पैक युक्त डीप फ्रीजर	34
फिगर 3.14	: बेस अस्पताल, श्रीनगर में वॉक-इन कूलर	38
फिगर 3.15	: आईएलआर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, ज्वालापुर, हरिद्वार	38
फिगर 3.16	: डूम मेडिकल कॉलेज, देहरादून में आईएलआर	38
फिगर 3.17	: गांव सैन, कोटेश्वर एचईपी से पहल के लाभार्थी	39
फिगर 4.1	: टीएचडीसी हाईस्कूल, ऋषिकेश के प्रधानाचार्य और वीपी के साथ मूल्यांकन दल	43
फिगर 4.2	: टीएचडीसी टी.बी.पी. इंटरमीडिएट कॉलेज, टिहरी	43
फिगर 4.4	: शिक्षकों और कक्षा 7 के छात्रों के साथ एसआर एशिया टीम	47
फिगर 4.5	: कक्षा 10 के छात्रों के साथ एसआर एशिया टीम	50
फिगर 4.6	: भवन की प्रथम तल पर निर्मित प्रयोगशाला	50
फिगर 4.7	: स्कूल में निर्मित शौचालय	52
फिगर 4.8	: स्कूल में लगाई गई कृत्रिम छत	52
फिगर 4.9	: स्कूल में निर्मित शौचालय	54
फिगर 4.10	: स्कूल में लगाई गई कृत्रिम छत	54
फिगर 4.11	: सरकारी स्कूल में कक्षा 7 के छात्र, मिडिल स्कूल, अठूरवाला, देहरादून	56
फिगर 4.12	: टीएचडीसी हाई स्कूल, ऋषिकेश में कक्षा 5 के छात्र	56
फिगर 5.1	: एसआर एशिया टीम गांव हदगी में लाभार्थियों से परामर्श कर रही है	58
फिगर 5.2	: लाभार्थियों के घर पर न बिके मशरूम	58
फिगर 5.3	: परियोजना स्थल पर निर्मित चाल खाल	64
फिगर 5.4	: फार्म मशीन बैंक	64

फिगर 6.1 : जाखोली गांव में सामुदायिक केंद्र	70
फिगर 6.2 : मंदिर पुजारी के साथ एसआर एशिया अन्वेषक	70
फिगर 6.3 : कोटेश्वर महादेव मंदिर शिवलिंग	71
फिगर 6.4 : कार्यशाला-नूरपुर पंजनहेड़ी	72
फिगर 6.5 : कार्यशाला-धनपुरा पदार्थया	72
फिगर 6.6 : नूरपुर पंजनहेड़ी की महिलाओं से परामर्श	73
फिगर 6.7 : सामुदायिक भवन-इंदिरानगर	74
फिगर 6.8 : चारदौवारी-208 मीटर	74
फिगर 6.9 : मीट मार्केट, इंद्रा नगर में नाली निर्माण कार्य	76
फिगर 6.10 : अधिशासी अभियंता, जल संस्थान का कार्यालय	77
फिगर 6.11 : अधिशासी अभियंता, जल संस्थान एसआर एशिया टीम के साथ	77
फिगर 7.1 : वर्मी कम्पोस्ट पिट	80
फिगर 7.2 : पौधरोपण (नाइपर)	80
फिगर 7.3 : जिला होम्योपैथिक अस्पताल कार्यालय, हरिद्वार	84
फिगर 7.4 : जिला होम्योपैथिक अस्पताल, रोशनाबाद में शौचालय का निर्माण	84
फिगर 7.5 : स्वयं सहायता समूह द्वारा सैनिटरी नैपकिन पैक	87
फिगर 7.6 : उत्पादन केंद्र पर स्वयं सहायता समूह "सहज" के सदस्य	87
फिगर 7.7 : सैनिटरी नैपकिन बनाने में प्रयुक्त केच्चा माल	89
फिगर 7.8 : महिला मंडल दल को वितरित की गई कीर्तन सामग्री	90



तालिकाओं की सूची

तालिका 3.1 : 2020-21 में सेवा-टीएचडीसी की स्वास्थ्य पहल	17
तालिका 3.2 : प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में परीक्षण का माहवार उपयोग	22
तालिका 3.3 : कोविड-19 की रोकथाम के लिए स्वास्थ्य उपकरण	31
तालिका 3.4 : कोल्ड चेन उपकरण के प्रावधान के लिए सीएसआर परियोजनाएं	35
तालिका 3.5 : आईएलआर रेफ्रिजरेटर का विवरण	36
तालिका 3.6 : डीप फ्रीजर का विवरण	36
तालिका 4.1 : टीएचडीसी जागृति के तहत सीएसआर पहलों की सूची	42
तालिका 4.2 : विद्यालय का मूल्यांकन	44
तालिका 4.3 : विद्यालय का मूल्यांकन	48
तालिका 4.4 : विद्यालय में रखरखाव कार्य	52
तालिका 5.1 : टीएचडीसी दक्ष के तहत सीएसआर पहलों की सूची	57
तालिका 5.2 : मशरूम उत्पादन का विवरण	66
तालिका 5.3 : सेब बागानों की उत्तरजीविता दर	66
तालिका 6.1 : सीएसआर परियोजनाओं की सूची	69
तालिका 7.1 : सीएसआर परियोजनाओं की सूची	79
तालिका 7.2 : ग्रामीण विकास परियोजनाओं की सूची	81

कार्यपालक:सारांश

जलविद्युत गतिविधियों का सतत विकास के दृष्टिकोण से लगातार मूल्यांकन किया जाना चाहिए। कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) इस संबंध में कॉर्पोरेट योगदान का मूल्यांकन करने के लिए अक्सर लागू किया जाने वाला सिद्धांत है। कॉर्पोरेट सामाजिक और पर्यावरणीय उत्तरदायित्व को पूरा करने के इस उद्देश्य की ओर वर्तमान रिपोर्ट प्रभाव आकलन (जैसा कि नई कंपनी अधिनियम 2013, सीएसआर प्रभाव आकलन दिशानिर्देश/सीएसआर नियम 2014 के तहत उल्लिखित है) पर आधारित समीक्षा और गहन विश्लेषण का संकलन है।)

उत्तराखंड राज्य के विभिन्न जिलों में सेवा-टीएचडीसी (टीएचडीसीआईएल प्रायोजित एनजीओ) द्वारा कार्यान्वित सीएसआर परियोजनाओं के प्रभाव आकलन के लिए सौंपी गई अंतर्राष्ट्रीय एजेंसी एसआर एशिया का उद्देश्य सीएसआर परियोजनाओं के लक्ष्यों और उद्देश्यों की जांच करना है, ताकि प्रभावशीलता और प्रभाव को मापा जा सके और साथ ही कार्यक्रम नियोजन, डिजाइन, वितरण और प्रभाव को मजबूत करने के उद्देश्य से उपाय सुझाए जा सकें।

प्रभाव टीम ने डेटा और साक्ष्य एकत्र करने के लिए ऋषिकेश, हरिद्वार, देहरादून, टिहरी, कोटेश्वर और श्रीनगर जैसे परियोजना कार्यान्वयन क्षेत्रों का दौरा किया। मूल्यांकन टीम ने वित्त वर्ष 2020-21 के दौरान की गई पहलों की जांच की। टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड भारत की प्रमुख सफल जलविद्युत कंपनियों में से एक है जो अपने घटक संगठन सेवा-टीएचडीसी के माध्यम से बड़े पैमाने पर और विविध सीएसआर गतिविधियों में शामिल है, और अध्ययन कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) पहलों के मूल्यांकन और प्रभाव आकलन पर केंद्रित था।

मूल्यांकन और प्रभाव आकलन विभिन्न चरणों में किया गया, जिसका उद्देश्य प्रभाव आकलन के दायरे में आने वाली सभी लागू परियोजनाओं के अन्वेषणात्मक वर्णनात्मक शोध और मूल्यांकन के आधार पर एक व्यापक प्रभाव आकलन करना था। प्रभाव आकलन ढांचे और मानदंडों के उद्देश्यों पर आधारित प्रमुख निष्कर्ष नीचे प्रस्तुत किए गए हैं। इस प्रभाव आकलन के मुख्य उद्देश्य हैं:

- पांच लाख या उससे अधिक के परिव्यय वाली परियोजनाओं के प्रभाव का स्वतंत्र रूप से मूल्यांकन करना।
- कार्यक्रमों/कार्यों के कारण होने वाले परिवर्तनों को मापना।
- जवाबदेही, स्थिरता और सीखने का आकलन करना।
- कार्यक्रमों की प्रभावशीलता और प्रभावों के बारे में डेटा एकत्र करना ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि हस्तक्षेप सही दिशा में चल रहा है और अपने उद्देश्यों तक पहुँच गया है।
- आगे के हस्तक्षेपों की तैयारी के लिए सेवा-टीएचडीसी को इनपुट प्रदान करना।

अध्ययन का दायरा निम्नलिखित को कवर करता है:

- वित्त वर्ष 2020-21 के लिए टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की सीएसआर पहलों का प्रभाव मूल्यांकन।
- पहलों से संबंधित केस स्टडीज़
- परियोजनाओं से तस्वीरें

मूल्यांकन मानदंड

पहलों का मूल्यांकन ओइसीडी-डीएसी मानदंडों के आधार पर किया गया। प्रत्येक परियोजना का मूल्यांकन निम्नलिखित छह मानदंडों के माध्यम से किया गया:

प्रासंगिकता: हस्तक्षेप के उद्देश्य और डिजाइन किस हद तक लाभार्थियों के अनुकूल हैं। क्या परियोजना क्षेत्रों के निवासी हस्तक्षेप चाहते थे या क्या यह उन पर थोपा गया था।

प्रभावकारिता: हस्तक्षेप किस हद तक सफल रहा या अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने की उम्मीद है, साथ ही परिणाम, जिसमें समूहों के बीच कोई भिन्नता शामिल है। क्या हस्तक्षेप उन स्थानों तक पहुँचा जहाँ व्यक्तियों की पहुँच सामुदायिक सुविधाओं तक नहीं है।

प्रभाव: कार्यवाई का कितना महत्वपूर्ण सकारात्मक या नकारात्मक उच्च-स्तरीय प्रभाव पड़ा है या होने का अनुमान है, चाहे वह इरादा हो या अनपेक्षित। यह पहचानना कि हस्तक्षेप के परिणामस्वरूप लोगों की स्थिति में कोई बदलाव हुआ है या नहीं।

संगति: किसी देश, क्षेत्र या संस्थान में अन्य गतिविधियों के साथ हस्तक्षेप की अनुकूलता।

दक्षता: हस्तक्षेप किस हद तक लागत प्रभावी और समय पर परिणाम उत्पन्न करता है या उत्पन्न करने की उम्मीद है।

स्थिरता: हस्तक्षेप के शुद्ध लाभ किस हद तक बने रहते हैं या बने रहने की अनुमानित किया जाता है। क्या सेवा-टीएचडीसी द्वारा संचालित सीएसआर परियोजनाओं को समुदाय के दीर्घकालिक लाभ के लिए बनाए रखा जा सकता है।

कार्यप्रणाली

मूल्यांकन टीम ने वित्त वर्ष 2020-21 में सेवा-टीएचडीसी द्वारा शुरू की गई सीएसआर परियोजनाओं के प्रदर्शन का आकलन करने के लिए कई तरीकों का इस्तेमाल किया। इन तरीकों में शामिल हैं: i) अवलोकन-तरीका, ii) अर्ध-संरचित साक्षात्कार, iii) केंद्रित समूह चर्चा, iv) केस स्टडी और v) द्वितीयक डेटा (जहाँ भी उपलब्ध हो)। साक्ष्य और उपलब्ध जानकारी के आधार पर टीम ने ओइसीडी-डीएसी (प्रासंगिकता, प्रभावशीलता, दक्षता, प्रभाव, सुसंगतता और स्थिरता) पर उच्च/मध्यम/निम्न के पैमाने पर पहलों का मूल्यांकन किया।

मूल्यांकन का सारांश

प्रासंगिकता: परियोजना का 100% (25) हिस्सा लाभार्थियों की आवश्यकताओं के लिए प्रासंगिक पाया। यह सेवा-टीएचडीसी द्वारा सीएसआर कार्यक्रमों के आवश्यकता आधारित चयन को दर्शाता है।

सुसंगतता: मूल्यांकित पहलों में से 96% (24) संबंधित सरकारी कार्यक्रमों के अनुरूप पाई गई।

प्रभावशीलता: 84% (21) पहल अत्यधिक प्रभावी पाई गई, जबकि 8% (2) कम प्रभावशीलता वाली और 8% (2) मध्यम प्रभावशीलता वाली पाई गई। यह मध्यम और कम प्रभावशीलता परिचालन संबंधी मुद्दों के कारण है जिसके कारण पहलों की प्रभावशीलता में गिरावट आई है।

तालिका 1: परियोजनाओं की प्रभावशीलता रैंकिंग

विषयगत क्षेत्र	प्रभावशीलता रैंकिंग (परियोजनाओं की संख्या)			
	उच्च	मध्यम	निम्न	कुल
स्वास्थ्य	8	1	-	9
शिक्षा	5	-	-	5
कौशल	2	-	1	3
ग्रामीण	3	1	-	4
संस्कृति संवर्धन	1	-	-	1
वृद्धों एवं दिव्यांगों की देखभाल	1	-	-	1
महिला सशक्तिकरण	-	-	1	1
पर्यावरण	1	-	-	1
कुल	21	2	2	25

दक्षता: हस्तक्षेप किस हद तक लागत प्रभावी और समय पर परिणाम उत्पन्न करता है या अपेक्षित है।

तालिका 2: परियोजनाओं की दक्षता रैंकिंग

विषयगत क्षेत्र	दक्षता रैंकिंग (परियोजनाओं की संख्या)			
	उच्च	मध्यम	निम्न	कुल
स्वास्थ्य	7	2	-	9
शिक्षा	3	1	1	5
कौशल विकास	1	1	1	3
ग्रामीण विकास	3	1	-	4
संस्कृति संवर्धन	-	1	-	1
वृद्धों एवं दिव्यांगों की देखभाल	1	-	-	1
महिला सशक्तिकरण	-	-	1	1
पर्यावरण	1	-	-	1
कुल	16	6	3	25

तालिका 3: परियोजनाओं की प्रभाव रैंकिंग

विषयगत क्षेत्र	प्रभाव रैंकिंग (परियोजनाओं की संख्या)			
	उच्च	मध्यम	निम्न	कुल
स्वास्थ्य	7	1	1	9
शिक्षा	4	-	1	5
कौशल	1	1	1	3
ग्रामीण	3	1	-	4
संस्कृति संवर्धन	1	-	-	1
वृद्धों एवं दिव्यांगों की देखभाल	1	-	-	1
महिला सशक्तिकरण	-	-	1	1
पर्यावरण	1	-	-	1
कुल	18	3	4	25

तालिका 4: परियोजनाओं की स्थिरता रैंकिंग

प्रभाव: 72% (18) परियोजनाओं का प्रभाव उच्च है, यह

प्रभावशीलता के साथ अपने घनिष्ठ संबंध को प्रदर्शित करता है कि एक अच्छी तरह से निष्पादित परियोजना अत्यधिक प्रभावशाली है।

स्थिरता: कार्यान्वयन/वित्त पोषण एजेंसी की तुलना में स्वतंत्र रूप से चलने की उनकी क्षमता को देखते हुए 76% (19) पहले अत्यधिक टिकाऊ हैं।

विषयगत क्षेत्र	दक्षता रैंकिंग (परियोजनाओं की संख्या)			
स्वास्थ्य	7	-	2	9
शिक्षा	4	-	1	5
कौशल	2	-	1	3
ग्रामीण	4	-	-	4
संस्कृति संवर्धन	1	-	-	1
वृद्धों एवं दिव्यांगों की देखभाल	1	-	-	1
महिला सशक्तिकरण	-	-	1	1
पर्यावरण	1	-	-	1
कुल	20	-	5	25

व्यक्तिगत मूल्यांकन हेतु रेटिंग का सारांश

क्र.सं	परियोजना का मूल्यांकन	प्रासंगिकता	प्रभावशीलता	दक्षता	प्रभाव	सम्बद्धता	स्थिरता
टीएचडीसी निर्मया (स्वास्थ्य) - पोषण, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता तथा पेयजल परियोजनाएं							
1	मोबाइल डिस्पेंसरी सह एम्बुलेंस सेवा	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	कम
2	दीनगांव में एलोपैथिक डिस्पेंसरी	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च
3	कोविड-19 के अंतर्गत आवश्यक उपकरण उपलब्ध कराने के लिए सीएमओ, टिहरी को वित्तीय सहायता	उच्च	उच्च	मध्यम	कम	उच्च	उच्च
4	सीएमओ टिहरी के कार्यालय को कोविड-19 के लिए पीपीई किट उपलब्ध कराने हेतु वित्तीय सहायता	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च
5	डीएम, टिहरी को कोविड-19 की रोकथाम के लिए स्वास्थ्य उपकरणों की आपूर्ति	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च

6	डीजी सेट के साथ वॉक इन कूलर (16.05) की आपूर्ति और स्थापना।	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च
7	कोविड-19 के लिए कोल्ड चेन उपकरण आइस लाइन्ड रेफ्रिजरेटर (आईएलआर) की खरीद	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च
8	सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम के लिए डीप फ्रीजर	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च
9	'लॉक-डाउन' से प्रभावित 1082 किसानों को खाद्य सामग्री वितरित की गई	उच्च	मध्यम	मध्यम	मध्यम	उच्च	कम
टीएचडीसी जागृति (उज्ज्वल भविष्य के लिए पहल) - शिक्षा पहल							
10	टीएचडीसी एजुकेशन सोसायटी के माध्यम से परियोजना प्रभावित एवं व्यावसायिक क्षेत्र के परिवारों के लिए दो विद्यालय (एक इंटर कॉलेज एवं एक हाई स्कूल) चलाना।	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च
11	कोटेश्वर, टिहरी में जे.एच. स्कूल का संचालन	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	कम
12	राजकीय इंटर कॉलेज पथरी, जिला हरिद्वार में प्रयोगशाला का निर्माण	उच्च	उच्च	कम	कम	उच्च	उच्च
13	राजकीय माध्यमिक विद्यालय, सुनारगांव (अठुरवाला), देहरादून की मरम्मत एवं रखरखाव	उच्च	उच्च	मध्यम	उच्च	उच्च	उच्च
14	राजकीय इंटर कॉलेज खोला कड़ा कोट ब्लॉक कीर्तिनागा की क्षतिग्रस्त छत का पुनर्निर्माण एवं मरम्मत कार्य	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च
टीएचडीसी दक्ष (कौशल) आजीविका सृजन और कौशल विकास पहल							
15	टिहरी के थौलधार ब्लॉक के तीन गांवों में मशरूम प्रशिक्षण एवं उत्पादन केंद्र	उच्च	कम	कम	कम	मध्यम	कम
16	एनएसक्यूएफ स्तर- कौशल विकास के तहत 20 युवाओं को कम्प्यूटर प्रशिक्षण	उच्च	उच्च	मध्यम	मध्यम	उच्च	उच्च
17	टिहरी के प्रतापनगर ब्लॉक के उपली रमोली पट्टी में सतत आजीविका और संसाधन प्रबंधन	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च
टीएचडीसी उत्थान (प्रगति) - ग्रामीण विकास							
18	सामुदायिक केन्द्र का निर्माण जखोली गांव (खोला), कोटेश्वर, जिला. टिहरी	उच्च	मध्यम	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च
19	02 बहुउद्देशीय का निर्माण ग्राम पंचायत में कार्यशाला/भवन नूरपुर पंजनहेड़ी और धनपुरा उपनाम पार्थार्थ	उच्च	उच्च	मध्यम	मध्यम	उच्च	उच्च
20	इंदिरानगर, ऋषिकेश में विभिन्न सिविल कार्य (सामुदायिक भवन का निर्माण, नाली निर्माण के साथ चारदीवारी और डिस्पेंसरी कक्ष का निर्माण)	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च
21	ट्रक पर स्थापित जल उपलब्ध कराना उत्तराखंड जल संस्थान को टैंकर, नई टिहरी	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च

टीएचडीसी विरासत (संस्कृति) - कला एवं संस्कृति संरक्षण एवं संवर्धन							
22	150 महिला मंडल दल में कीर्तन का सामान सप्लाई करना ब्लॉक कीर्तिनगर का एवं हिंडोलाखाल (टिहरी)	उच्च	उच्च	मध्यम	उच्च	उच्च	उच्च
टीएचडीसी सक्षम (सक्षम) - वृद्धों एवं दिव्यांगों की देखभाल							
23	हरिद्वार जिले के विभिन्न सरकारी होम्योपैथिक अस्पतालों में शौचालय, रैंप का निर्माण एवं मरम्मत कार्य	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च
टीएचडीसी समर्थ (सशक्तिकरण) - सशक्तिकरण पहल							
24	जॉलीग्रॉंट, देहरादून में सैनिटरी नैपकिन उत्पादन की स्थापना	उच्च	कम	कम	उच्च	उच्च	कम
25	डीजी सेट के साथ वॉक इन कूलर (16.05) की आपूर्ति और स्थापना।	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च

निष्कर्ष

परियोजना को प्रासंगिकता (100%) और स्थिरता (80%) के मापदंडों में अच्छा स्कोर मिला है। कम और मध्यम स्कोर वाली परियोजनाओं में स्वास्थ्य, शिक्षा और कौशल विकास के क्षेत्र में दक्षता के मुद्दे हैं। परियोजनाओं की दक्षता का श्रेय इस तथ्य को दिया गया कि वर्ष 2020-21 में 'राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन' रहा और लाभार्थियों द्वारा कार्यान्वित परियोजना के उपयोग में बाधा आई। एनएसक्यूएफ कंप्यूटर प्रशिक्षण के मामले में परियोजनाओं की स्थिरता लाभार्थियों के लिए प्लेसमेंट मेले का आयोजन करके बढ़ाई जा सकती है या मोबाइल डिस्पेंसरी जैसी अच्छी तरह से प्राप्त परियोजनाओं को फिर से शुरू किया जा सकता है। कौशल विकास परियोजनाओं में हैंडहोल्डिंग की आवश्यकता होती है जहां लाभार्थियों को सभी पहलुओं पर परियोजनाओं को बेहतर बनाने के लिए प्रशिक्षण प्रदान किया गया था। कुल मिलाकर, परियोजनाएं परियोजनाओं के कार्यान्वयन के लिए विविधता और सुविचारित योजना प्रस्तुत करती हैं। उच्च बिंदुओं में प्रतिष्ठित सरकारी विभागों, उच्च योग्य कार्यान्वयन एजेंसियों और उच्च गुणवत्ता वाले नागरिक कार्यों के माध्यम से कार्यान्वित की गई पहल शामिल हैं। वर्ष में कोविड राहत के लिए परियोजनाएं भी लागू की गईं, जो सफल रहीं और निश्चित रूप से जरूरत के समय इस तरह के असाधारण कार्य करने के लिए सेवा-टीएचडीसी की उपलब्धि है।



अध्याय 1

परिचय



1.1 प्रभाव आकलन (आईए) का संक्षिप्त अवलोकन:

प्रभाव आकलन विकास परियोजनाओं के लोगों और उनके पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण और आत्मनिरीक्षण करने की एक संरचित प्रक्रिया है, प्रस्तावित कार्यों के लिए, जबकि प्रस्तावों को संशोधित करने (या यहां तक कि, यदि उचित हो, तो त्यागने) का अवसर अभी भी है। इसे नीतियों से लेकर विशिष्ट परियोजनाओं तक, निर्णय लेने के सभी स्तरों पर लागू किया जाता है। इस प्रक्रिया में प्रस्तावित कार्यों (प्रभाव भविष्यवाणी/पूर्वानुमान) के सबसे संभावित प्रभावों की पहचान और लक्षण वर्णन, और वैश्विक स्थिरता एजेंडे के साथ उन प्रभावों के सामाजिक और पर्यावरणीय महत्व का आकलन (प्रभाव मूल्यांकन) शामिल है। सीएसआर प्रभाव आकलन आमतौर पर सीएसआर विभागों और फाउंडेशनों द्वारा प्रायोजित परियोजनाओं के लिए किया जाता है। 2021 में, भारत में सीएसआर कानून ने कंपनियों द्वारा सीएसआर परियोजनाओं के लिए स्वतंत्र प्रभाव आकलन करना अनिवार्य कर दिया है। कंपनी द्वारा किए गए सीएसआर परियोजनाओं के प्रभाव का मूल्यांकन करने पर ध्यान केंद्रित करने वाले कई सीएसआर विभाग और फाउंडेशन या तो सीएसआर प्रभाव आकलन और सीएसआर परियोजना व्यय और व्यय के दिशानिर्देशों के अनुसार आंतरिक रूप से या बाहरी एजेंसी के माध्यम से किए जाते हैं।

सीएसआर प्रभाव आकलन दृष्टिकोण मोटे तौर पर ओईसीडी ढांचे और बड़े पैमाने पर विकास परियोजनाओं के लिए निगरानी और बाहरी मूल्यांकन में हमारी विशेषज्ञता पर आधारित है। प्रभाव आकलन के लिए सीएसआर विभाग द्वारा शामिल किए जाने के बाद हम सीएसआर विभाग के पास उपलब्ध परियोजना प्रलेखन की समीक्षा करते हैं और परियोजना कार्यान्वयन एजेंसियों/एनजीओ के साथ संवादों की श्रृंखला आयोजित करते हैं। लाभार्थी साक्षात्कार, फोकस समूह चर्चा, हितधारक साक्षात्कार आदि को शामिल करते हुए गुणात्मक और मात्रात्मक लागू सामाजिक विज्ञान अनुसंधान विधियों का उपयोग करके एक अनुकूलित सीएसआर प्रभाव आकलन और समीक्षा परियोजना की योजना बनाई और संचालित की जाती है। विभिन्न चर्चाओं के माध्यम से एकत्र किए गए डेटा को कंपनी द्वारा अपने सीएसआर आर्म/फाउंडेशन या सहयोगी एनजीओ भागीदारों या परियोजना कार्यान्वयन एजेंसियों के माध्यम से विविध सीएसआर परियोजनाओं और पहलों द्वारा बनाए गए प्रभाव का आकलन करने के लिए एकत्रित, मान्य और विश्लेषण किया जाता है। सिद्धांत रूप में टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड द्वारा कार्यान्वित सीएसआर परियोजनाएं कंपनी अधिनियम 2013 की अनुसूची VII नई के अनुरूप हैं। टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की सीएसआर नीति भी कंपनी अधिनियम 2013 के अनुरूप है। यह राष्ट्रीय नीति, सीएसआर नीति, लोगों और जहां वे काम करते हैं वहां की जरूरतों और आकांक्षाओं के मद्देनजर अच्छी तरह से पहचाना जाता है। इस परियोजना का संबंधित क्षेत्रों में सकारात्मक प्रभाव पड़ा, जहां इसके कार्यान्वयन हुआ और स्थिरता के पहलुओं की दिशा में कुछ कार्य की योजना बनाने के लिए ध्यान देने की आवश्यकता हो सकती है। प्रभाव का आकलन किया जाता है और सीएसआर पहलों की सफलता या विफलता की डिग्री को मापने के लिए योजना के समय तय किए गए योजनाबद्ध बेंचमार्क के साथ इसकी तुलना की जाती है। टीम ने सर्वेक्षण के लिए अवलोकन पद्धति का इस्तेमाल किया। प्रगति, उपलब्धियों और प्रभावों के वीडियो-ग्राफिक और फोटोग्राफिक रिकॉर्ड व्यवस्थित रूप से प्रलेखित किए गए हैं। एसआर एशिया ने सेवा-टीएचडीसी की सीएसआर परियोजनाओं द्वारा सृजित प्रभाव का मूल्यांकन करने के लिए ओईसीडी डीएसी ढांचे का उपयोग किया है। यह अध्ययन के तहत सभी परियोजनाओं को उनकी प्रासंगिकता, प्रभावशीलता, दक्षता, प्रभाव और स्थिरता मापदंडों के आधार पर स्कोर करता है। परियोजना ने हस्तक्षेप परिणामों को प्राप्त करने के लिए इनपुट (धन, विशेषज्ञता आदि) का कुशलतापूर्वक उपयोग किया और कार्यकारी सारांश में उल्लिखित लक्ष्य प्राप्ति दर 90-100% के बीच थी।

1.2 टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के बारे में

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड विद्युत क्षेत्र में एक अग्रणी और लाभ कमाने वाला सार्वजनिक क्षेत्र का उद्यम है। जुलाई-1988 में कंपनी अधिनियम, 1956 के तहत इसे पब्लिक लिमिटेड कंपनी के रूप में पंजीकृत किया गया। टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड को अक्टूबर-2009 में मिनी रत्न श्रेणी-1 का दर्जा दिया गया और जुलाई 2010 में भारत सरकार द्वारा अनुसूची 'ए' पीएसयू में अपग्रेड किया गया।

कंपनी की इक्विटी भारत सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार के बीच 75:25 के अनुपात में साझा की गई थी। टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की रणनीतिक बिक्री के अनुसार टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड में भारत के राष्ट्रपति द्वारा धारित इक्विटी का कानूनी और लाभकारी स्वामित्व, जो टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की कुल चुकता पूंजी का 74,496% है, एनटीपीसी लिमिटेड को हस्तांतरित कर दिया गया है। टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड में इक्विटी अब एनटीपीसी लिमिटेड और उत्तर प्रदेश सरकार के बीच 74.496 और 25.504 के अनुपात में साझा की जाती है।

कंपनी की अधिकृत शेयर पूंजी 4000 करोड़ रुपये हैं और 30 सितंबर 2022 तक चुकता पूंजी 3665.88 करोड़ रुपये है। टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड ने अपनी पहली परियोजना यानी टिहरी एचपीपी (1000 मेगावाट) के वाणिज्यिक संचालन के पहले वर्ष (2006-07) से लाभ कमाना शुरू कर दिया और टीएचडीसीआईएल तब से लगातार लाभ कमानेवाले कंपनी है। इसका गठन 2400 मेगावाट टिहरी हाइड्रो पावर कॉम्प्लेक्स (टिहरी एचपीपी-1000 मेगावाट) टिहरी पीएसपी-1000 मेगावाट और कोटेश्वर एचईपी-400 मेगावाट और अन्य हाइड्रो परियोजनाओं के विकास, संचालन और रखरखाव के एकमात्र उद्देश्य से किया गया था। कॉर्पोरेशन एक बहु-परियोजना संगठन के रूप में विकसित हुआ है, जिसकी परियोजनाएं विभिन्न राज्यों के साथ-साथ पड़ोसी देश भूटान में भी फैली हुई हैं। इसने अक्षय ऊर्जा स्रोतों और थर्मल पावर प्लांट से बिजली उत्पादन में भी कदम रखा है टीएचडीसीआईएल के पास 10 परियोजनाओं (हाइड्रो, थर्मल, पवन और सौर) का पोर्टफोलियो है, जिनकी कुल क्षमता 4516 मेगावाट है। इसमें 1587 मेगावाट की चालू परियोजनाएं (टिहरी एचपीपी-1000 मेगावाट, कोटेश्वर एचईपी-400 मेगावाट, दुकवान एसएचपी-24 मेगावाट, पाटन पवन फार्म-50 मेगावाट, देवभूमि द्वारका पवन फार्म-63 मेगावाट और कासरगोड सौर ऊर्जा संयंत्र-50 मेगावाट) और 2764 मेगावाट की निर्माणाधीन परियोजनाएं (टिहरी पीएसपी-1000 मेगावाट, वीपीएचईपी 444 मेगावाट और खुर्जा 1320 मेगावाट) शामिल हैं। अन्य परियोजनाएं विकास/कार्यान्वयन के विभिन्न चरणों में हैं।

इसके अलावा, टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड उत्तर प्रदेश राज्य में एसपीवी (टीएचडीसीआईएल और यूपीनेडा का संयुक्त उद्यम जिसका नाम टूस्को है) के माध्यम से 2000 मेगावाट यूएमआईपीपीएस (झांसी और ललितपुर जिले में 600 मेगावाट क्षमता का सौर पार्क और उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जिले में 800 मेगावाट क्षमता का सौर पार्क) भी विकसित कर रहा है।

1.3 टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड सीएसआर और स्थिरता नीति

टीएचडीसीआईएल अपनी स्थापना के बाद से ही सीएसआर गतिविधियां संचालित करने वाली उत्तराखंड की प्रमुख कंपनियों में से एक है। टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड स्वास्थ्य सेवा, ग्रामीण विकास, आजीविका विकास, शिक्षा, प्रगति, पर्यावरण, संस्कृति और खेल के क्षेत्र में कंपनी अधिनियम 2013 की अनुसूची VII के अनुसार अपना सीएसआर मूल्यांकन कर रहा है।

1.3.1 सीएसआर विजन

सामाजिक रूप से जिम्मेदार कॉर्पोरेट, समाज और समुदाय में मूल्य सृजन को निरंतर बढ़ाता है और सतत विकास को बढ़ावा देता है।

विजन

- पर्यावरण और सामाजिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता के साथ एक विश्व स्तरीय ऊर्जा इकाई

मिशन

- ऊर्जा संसाधनों की कुशलतापूर्वक योजना
- बनाना, उनका विकास करना और उनका संचालन करना।
- अत्याधुनिक तकनीकों को अपनाना। सीखने और नवाचार के कार्य नैतिकता को बढ़ावा देकर प्रदर्शन उत्कृष्टता प्राप्त करना।
- परस्पर विश्वास के माध्यम से हितधारकों के साथ स्थायी मूल्य आधारित संबंध बनाना।
- परियोजना प्रभावित व्यक्तियों का मानवीय दृष्टिकोण के साथ पुनर्वास और पुनर्स्थापन करना।

1.3.2 सीएसआर मिशन

- परस्पर संचार के माध्यम से प्रमुख हितधारकों के साथ संबंध आधारित सतत मूल्य स्थापित करना।
- मानवीय दृष्टिकोण के साथ सीएसआर कार्यक्रम संचालित करना।
- हितधारकों के साथ सीएसआर एवं सततता पहलों को पारदर्शिता के साथ शेयर करना।
- आर्थिक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय सतत तरीके से अपना व्यवसाय चलाने के लिए संगठन में सभी स्तरों पर प्रतिबद्धता बढ़ाया जाना सुनिश्चित करना।
- इसके प्रकार्यात्मक केंद्रों में तथा उनके आस-पास समुदायों के लाभ हेतु प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सीएसआर कार्यक्रम संचालित करना तथा जिसके परिणामस्वरूप स्थानीय जनता के जीवन की गुणवत्ता एवं आर्थिक भलाई में वृद्धि हो सके।
- समाज के वंचित, दबे कुचले, तिरस्कृत एवं कमजोर तबकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति एवं समेकित विकास को प्रोत्साहित करना।
- हितधारकों के मध्य सीएसआर पहलों के माध्यम से टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की गुडविल एवं गर्व उत्पन्न करना और कारपोरेट इकाई के रूप में टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की सकारात्मक एवं सामाजिक जिम्मेदारी की छवि को सुदृढ़ करने में सहायता करना।

1.4 टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड सीएसआर पहल की रूपरेखा

सीएसआर और संधारणीयता कार्यक्रमों को क्रियान्वित करने की भावना को ध्यान में रखते हुए, टीएचडीसीआईएल सीएसआर पहल की व्यापक दृष्टिकोण को 'टीएचडीसी सहृदय' (मानव हृदय वाला कॉर्पोरेट) शीर्षक दिया जाएगा। जिन फोकस क्षेत्रों में टीएचडीसीआईएल सीएसआर कार्यक्रम चलाएगा, उन्हें उनके उद्देश्य के अनुसार शीर्षक दिया जाएगा, जो इस प्रकार हैं:

क. टीएचडीसी निरामय (स्वास्थ्य) - पोषण, स्वास्थ्य और स्वच्छता तथा पेयजल परियोजनाएँ

ख. टीएचडीसी जागृति (उज्ज्वल भविष्य के लिए पहल) - शिक्षा पहल

ग. टीएचडीसी दक्ष (कौशल) - आजीविका सृजन और कौशल विकास पहल

घ. टीएचडीसी उत्थान (प्रगति) - ग्रामीण विकास

ड. टीएचडीसी समर्थ (सशक्तिकरण) - महिला सशक्तिकरण पहल

च. टीएचडीसी सक्षम (सक्षम) - वृद्धों और दिव्यांगों की देखभाल

छ. टीएचडीसी प्रकृति (पर्यावरण) - पर्यावरण संरक्षण पहल

ज. टीएचडीसी विरासत (संस्कृति) - कला और संस्कृति संरक्षण और संवर्धन पहल।

झ. टीएचडीसी क्रीड़ा (खेल) - खेल संवर्धन पहल

1. सीएसआर पर व्यय

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड अपने निदेशक मंडल की मंजूरी से प्रत्येक वर्ष सीएसआर और संधारणीयता गतिविधियों/परियोजनाओं के लिए बजट आवंटन करता है। यह आवंटन कंपनी अधिनियम 2013 के प्रावधानों के अनुरूप है, जिसमें पिछले तीन वर्षों के औसत शुद्ध लाभ का न्यूनतम 2% सीएसआर गतिविधियों के कार्यान्वयन के लिए निर्धारित किया गया है।



स्रोत: टीएचडीसीआईएल वेबसाइट

फिगर 1.1 : सीएसआर व्यय (करोड़ में)

सेवा-टीएचडीसी के माध्यम से सीएसआर परियोजनाओं पर वित्तीय व्यय पिछले कुछ वर्षों में बढ़ा है। सीएसआर परियोजनाओं की प्रकृति भी परियोजना परिवारों और परियोजना क्षेत्रों के लोगों को लक्षित करते हुए विविध हो गई है। सीएसआर परियोजनाएं उत्तराखंड में विशाल भौगोलिक क्षेत्रों को कवर करने वाली टीएचडीसीआईएल सीएसआर नीति में कंपनी अधिनियम की अनुसूची VII के अनुरूप हैं।



अध्याय 2: प्रभाव आकलन डिजाइन और कार्यप्रणाली

2.1 कार्यक्षेत्र

- कार्यक्रम हस्तक्षेपों के परिणामस्वरूप होने वाले किसी भी परिवर्तन की पहचान करना, परिवर्तनों और कार्यक्रम । इनपुट के बीच कारण संबंध स्थापित करना और परिवर्तन की मात्रा को मापना।
- व्यापक और महत्वपूर्ण तथा रणनीतिक प्रदर्शन संकेतकों की एक विस्तृत श्रृंखला का आकलन करना। जिसमें परियोजना प्रभावशीलता, दक्षता, प्रासंगिकता प्रदर्शन, स्थिरता और कवरेज शामिल है।
- यह निर्धारित करना कि कार्यक्रमों को कितने प्रभावी और कुशलता से लागू किया गया है और किस हद तक शुद्ध लाभ प्राप्त हुए हैं।
- यह जांचना कि हस्तक्षेप ने अपने उद्देश्यों (आउटपुट और परिणाम) को किस हद तक हासिल किया है या भविष्य में ऐसा करेगा?
- कार्यक्रमों को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए सुझाव (यदि कोई हो) प्रदान करना।
- लोगों और समुदाय पर कार्यक्रमों/हस्तक्षेपों के इच्छित और अनपेक्षित, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभावों को (जहां भी संभव हो) मात्राबद्ध करना?
- यह परिभाषित करना कि हस्तक्षेप ने लक्षित लाभार्थियों और हितधारकों की समग्र स्थिति को कैसे प्रभावित किया है।

2.2 एसआर एशिया का प्रभाव आकलन दृष्टिकोण

व्यापक प्रसार उपयोगिता और भविष्य के संदर्भ के लिए उच्च गुणवत्ता वाली प्रभाव आकलन रिपोर्ट तैयार करने की दृष्टि से अनुसंधान पद्धति में गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों प्रकार के अनुप्रयुक्त सामाजिक विज्ञान अनुसंधान पद्धतियां शामिल होनी चाहिए।

गुणात्मक विधियों में पीआरए और आरआरए (सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन और त्वरित ग्रामीण मूल्यांकन) पर आधारित विभिन्न विधियों के माध्यम से गहन सामाजिक अनुसंधान विधियां, केंद्रित समूह चर्चा, गहन साक्षात्कार, लक्षित लाभार्थियों/अंतिम उपयोगकर्ता समुदाय के प्रतिनिधियों/पंचायती राज संस्थानों (पीआरआईएस) और सरकारी अधिकारियों आदि के साथ प्रमुख सूचनादाता साक्षात्कार शामिल हैं। मात्रात्मक विधि में संरचित सर्वेक्षण और बंद प्रश्नावलियों का उपयोग शामिल है। डेटा संग्रह परियोजना कार्यान्वयन एजेंसियों, जिला प्रशासन और टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के ऑनसाइट कर्मियों के साथ उपलब्ध प्राथमिक और द्वितीयक दोनों डेटा के अध्ययन के माध्यम से किया जाता है। आवश्यकतानुसार तृतीयक इनपुट के लिए अन्य शामिल किए गए थे। प्रभाव आकलन रिपोर्ट प्रासंगिक जियो-टैग्ड तस्वीरों के साथ समर्थित है। टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के संबंधित नोडल अधिकारियों ने प्रभाव आकलन अध्ययन करने के लिए किए गए और पूरे किए गए सीएसआर कार्यक्रमों/गतिविधियों का विवरण/दस्तावेज प्रदान किए। हम, एसआर एशिया में समझते हैं कि सीएसआर मूल्यांकन का उद्देश्य सेवा-टीएचडीसी द्वारा संचालित सीएसआर परियोजनाओं को उनके संबंधित सामाजिक-आर्थिक प्रभाव के साथ मैप करना है। मूल्यांकन के निष्पादन के दौरान सेवा-टीएचडीसी द्वारा किए गए सीएसआर पहलों के परिणामस्वरूप लाभार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर सापेक्ष प्रभाव का विश्लेषण करने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाया गया था। हमारे रणनीतिक दृष्टिकोण का विवरण, जो तकनीकी और क्षेत्रीय विशेषज्ञता का मिश्रण है, एसआर एशिया के नेटवर्क का लाभ उठाने के लिए जुड़ी हुई सोच और एक समग्र मूल्यांकन के लिए सभी हितधारकों को एक साथ लाने वाला एक सहभागी दृष्टिकोण निम्नलिखित वर्णित है।

वस्तुनिष्ठ और संतुलित दृष्टिकोण

- लाभार्थी की प्रतिक्रिया और विचारों पर आधारित वैज्ञानिक अवलोकन, वस्तुनिष्ठ, निष्पक्ष और तटस्थ तरीके से परिलक्षित होता है।
- विविध हितधारक सहभागिता और संवाद ने मात्रात्मक सामाजिक विज्ञान अनुसंधान विधियों के एक समग्र सेट के माध्यम से प्राथमिक डेटा संग्रह का आधार बनाया।

तकनीकी प्रमुख क्षेत्र के विशेषज्ञ होंगे

- सामाजिक-आर्थिक प्रभाव मूल्यांकन, सामाजिक विज्ञान, अर्थशास्त्र, शिक्षा स्वास्थ्य, लिंग और स्थिरता के विशेषज्ञों से युक्त विविध और अंतःविषयक टीम द्वारा सीएसआर प्रभाव मूल्यांकन किया गया।

संचालित सोच

- इसी तरह के क्षेत्रों में काम करने के पिछले अनुभव से सीख लेकर क्षेत्र में आने वाली समस्याओं और चुनौतियों से निपटने के लिए काम किया गया। साथ ही, टीम ने कई क्षेत्र-विशिष्ट सर्वोत्तम प्रथाओं का मसौदा भी तैयार किया है, जिनसे टीम सीख सकती है।

सहभागितापूर्ण दृष्टिकोण

- प्रभाव आकलन के दौरान सम्पूर्ण परामर्श ग्राहकों के साथ किया गया। इन परामर्शों से सहमत दृष्टिकोण और निष्कर्ष स्थापित करने में मदद मिली, साथ ही परियोजनाओं के विभिन्न चरणों में भागीदारी में भी मदद मिली।

फिगर 2.1: असाइनमेंट निष्पादन के लिए एसआर एशिया दृष्टिकोण

2.3 मूल्यांकन मानदंड (ओईसीडी)

मूल्यांकन के लिए ओईसीडी रूपरेखा और दृष्टिकोण सीएसआर परियोजनाओं के प्रभाव आकलन का आधार बनता है। विकास मूल्यांकन पर ओईसीडी-डीएसी नेटवर्क (इवलनेट) ने छह मूल्यांकन मानदंड स्थापित किए हैं: प्रासंगिकता, सुसंगतता, प्रभावशीलता, दक्षता, प्रभाव और स्थिरता। ये मानदंड किसी हस्तक्षेप की योग्यता या मूल्य (नीति, रणनीति, कार्यक्रम, परियोजना या गतिविधि) के मूल्यांकन के लिए एक मानक ढांचा प्रदान करते हैं।



फिगर 2.2: ओईसीडी-सीएडी मूल्यांकन मॉडल

छह मूल्यांकन मानदंडों को इस प्रकार समझाया गया है:

प्रासंगिकता: हस्तक्षेप के उद्देश्य और डिजाइन किस हद तक लाभार्थियों के अनुकूल हैं। क्या परियोजना क्षेत्रों के निवासी हस्तक्षेप चाहते थे या क्या यह उन पर थोपा गया था।

प्रभावकारिता: हस्तक्षेप किस हद तक सफल रहा या अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने की उम्मीद है, साथ ही परिणाम, जिसमें समूहों के बीच कोई भिन्नता शामिल है। क्या हस्तक्षेप उन स्थानों तक पहुँचा जहाँ व्यक्तियों की पहुँच सामुदायिक सुविधाओं तक नहीं है।

प्रभाव: कार्रवाई का कितना महत्वपूर्ण सकारात्मक या नकारात्मक उच्च-स्तरीय प्रभाव पड़ा है या होने का अनुमान है, चाहे वह इरादा हो या अनपेक्षित। यह पहचानना कि हस्तक्षेप के परिणामस्वरूप लोगों की स्थिति में कोई बदलाव हुआ है या नहीं।

सुसंगति: किसी देश, क्षेत्र या संस्थान में अन्य गतिविधियों के साथ हस्तक्षेप की अनुकूलता।

दक्षता: हस्तक्षेप किस हद तक लागत-प्रभावी और समय पर परिणाम उत्पन्न करता है या उत्पन्न करने की उम्मीद है।

स्थायित्व: हस्तक्षेप के शुद्ध लाभ किस हद तक बने रहते हैं या बने रहने की भविष्यवाणी की जाती है। क्या सेवा-टीएचडीसी द्वारा संचालित सीएसआर परियोजनाओं को समुदाय के दीर्घकालिक लाभ के लिए बनाए रखा जा सकता है।

सेवा-टीएचडीसी की सीएसआर गतिविधियों की समीक्षा ऊपर उल्लिखित छह मापदंडों के अनुसार की गई है, जो प्रदर्शन का आकलन करने और संशोधन/परिवर्तन या सुधार के लिए आगे की कार्रवाई का सुझाव देने के लिए एक अच्छी तरह से परिभाषित रूपरेखा प्रदान करती है।

2.4 अनुसंधान डिजाइन और कार्यप्रणाली

प्रभाव मूल्यांकन अनुसंधान डिजाइन और कार्यप्रणाली काफी हद तक खोजपूर्ण और वर्णनात्मक प्रकृति की थी। अध्ययन में ऋषिकेश, टिहरी, कोटेश्वर, हरिद्वार, देहरादून और श्रीनगर के परियोजना क्षेत्रों में रहने वाले लोग शामिल हैं, जिनमें सेवा-टीएचडीसी द्वारा सीएसआर पहलों को लागू किया गया था।

2.4.1 यूनिवर्स और जनसंख्या

यूनिवर्स के अध्ययन में सेवा-टीएचडीसी द्वारा लागू की गई सीएसआर पहलों के माध्यम से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित सभी हितधारक शामिल हैं।

2.4.2 नमूनाकरण विधि और तकनीक

संभाव्यता आधारित उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण विधि का उपयोग मूल्यांकन टीम द्वारा अध्ययन के लिए नमूने लेने के लिए किया जाता है ताकि इसे कुल ब्रह्मांड और जनसंख्या का प्रतिनिधि बनाया जा सके।

2.5 डेटा संग्रह के उपकरण

प्रभाव मूल्यांकन अध्ययन के दौरान, मूल्यांकन टीम द्वारा विभिन्न प्रकार के द्वितीयक और प्राथमिक अनुसंधान उपकरणों का उपयोग किया गया। शोध अध्ययन में प्रयुक्त द्वितीयक उपकरण इस प्रकार हैं:

2.5.1 डेस्क अनुसंधान: एसआर एशिया टीम ने परियोजनाओं से संबंधित सभी प्रासंगिक दस्तावेजों (द्वितीयक स्रोतों) के साथ-साथ सेवा-टीएचडीसी के सीएसआर हस्तक्षेप इतिहास की जांच करने के लिए डेस्क अनुसंधान किया है। डेटा और जानकारी सेवा-टीएचडीसी कार्यालय, ऋषिकेश, सेवा-टीएचडीसी और कार्यान्वयन एजेंसियों के बीच समझौता ज्ञापनों, सीएसआर नोडल अधिकारियों, कार्यान्वयन एजेंसियों के प्रतिनिधियों, टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की वेबसाइट, समाचार पत्रों के लेखों और पिछली सीएसआर और प्रभाव मूल्यांकन रिपोर्टों आदि से एकत्र की गई थी। इसने कार्यक्रमों और सीएसआर प्रभाव मूल्यांकन अध्ययन की बेहतर प्रासंगिक समझ में योगदान दिया है।

अध्ययन के लिए प्रयुक्त प्राथमिक उपकरण इस प्रकार हैं:

2.5.2 हितधारक परामर्श सहभागिता और संवाद: सेवा-टीएचडीसी की सीएसआर गतिविधियों की योजना, कार्यान्वयन और प्रभावों को समझने के लिए, परियोजना प्रभावित क्षेत्रों के लोगों के प्रतिनिधियों, लाभार्थियों और समुदायों सहित विभिन्न परियोजना हितधारकों के साथ परामर्श आयोजित किए गए। यह चर्चाएँ कंपनी के प्रत्येक परियोजना स्थल के लिए प्रभाव मूल्यांकन टीमों द्वारा आयोजित की गईं।

2.5.3 अर्ध-संरचित साक्षात्कार: परियोजना लाभार्थियों, परियोजना कार्यान्वयन कर्मचारियों और समुदाय-आधारित संगठनों जैसे प्रमुख हितधारकों के साथ अर्ध-संरचित साक्षात्कार आयोजित किए गए ताकि प्राप्त लाभों की विस्तृत धारणाएं, परियोजना के बारे में उनकी राय, कार्यान्वयन की चुनौतियां और आगे सुधार के लिए सुझाव एकत्र किए जा सकें।

2.5.4 सार्वजनिक परामर्श: सेवा-टीएचडीसी की विभिन्न परियोजनाओं के लिए, परियोजना स्थलों पर लाभार्थियों के साथ फोकस समूह चर्चा (एफजीडी) आयोजित की गईं ताकि प्राप्त लाभों के बारे में व्यापक जानकारी प्राप्त की जा सके और यह पता लगाया जा सके कि परियोजना की पहल उनकी आवश्यकताओं को पूरा करती है या नहीं।

2.5.5 प्रमुख सूचनादाता साक्षात्कार: इस पद्धति का उपयोग विभिन्न परियोजना हस्तक्षेपों के लिए लाभार्थियों से सफलता की कहानियां एकत्र करने के लिए किया गया था। इस पद्धति ने उत्तरदाताओं की प्रतिक्रियाओं और अनुभव साझा करने के माध्यम से उनके कथित और महसूस किए गए लाभों की बहुमुखी समझ हासिल करने में सहायता की।

2.5.6 फोटोग्राफी/वीडियोग्राफी: विशेष रूप से सेवा-टीएचडीसी की सीएसआर परियोजनाओं के कार्यान्वयन की पुष्टि करते समय क्षेत्र-आधारित साक्ष्य एकत्र करने के लिए दृश्य डेटा संग्रह तकनीकों का उपयोग करके जियोटैग फोटोग्राफी और वीडियोग्राफी की गई।

2.6 अध्ययन की सीमाएँ

- कोविड से संबंधित पहलों के माध्यम से सहायता प्राप्त करने वाले लाभार्थियों तक पहुँच साइट कार्यालय और वितरण केंद्रों पर बातचीत तक ही सीमित थी।
- प्रक्रिया संकेतकों के विरुद्ध इनपुट और आउटपुट संकेतकों के सहसंबंध के लिए बेसलाइन रिपोर्ट की उपलब्धता का अभाव।
- दूरस्थ सीएसआर परियोजना स्थलों और लाभार्थियों तक पहुँचने के लिए आवश्यक पूर्वापेक्षित सहायता।
- क्षेत्र भ्रमण के दौरान लाभार्थियों की उपलब्धता।
- डेटा संग्रह और संकलन के समय होने वाली कोई भी मानवीय या कंप्यूटर त्रुटि



अध्याय 3: टीएचडीसी निर्माया के अंतर्गत स्वास्थ्य पहल

टीएचडीसीआईएल की स्वास्थ्य पहल टीएचडीसी निर्माया स्वास्थ्य, स्वच्छता और निवारक स्वास्थ्य देखभाल के साथ संरेखित है। हस्तक्षेपों में कोविड राहत गतिविधियों के रूप में महामारी के दौरान टीएचडीसीआईएल द्वारा की गई पहल भी शामिल थी। टीएचडीसी निर्माया का उद्देश्य स्वास्थ्य, पोषण, स्वच्छता और पेयजल परियोजनाओं को बढ़ावा देना है। टीएचडीसीआईएल की अधिकांश परियोजना स्थल पहाड़ी क्षेत्रों में हैं, जहां स्वास्थ्य देखभाल संसाधनों की पहुंच सीमित है। सीमित वित्त को ध्यान में रखते हुए, टीएचडीसीआईएल अपने प्रयास में परियोजना प्रभावित परिवारों को सस्ती स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच प्रदान करता है। सेवा-टीएचडीसी ने स्वास्थ्य पहल की है, जिसमें स्वास्थ्य सेवा के बुनियादी ढांचे में सुधार और कोविड महामारी पर नियंत्रण के उपाय भी शामिल हैं। वर्ष 2020-21 के दौरान, नौ (09) सीएसआर पहल की गईं। विवरण तालिका 3.1 में दिया गया है।

3.1 सस्ती और सुलभ स्वास्थ्य सुविधाएँ

सस्ती और सुलभ स्वास्थ्य सुविधाओं के प्रति अपनी प्रतिबद्धता में टीएचडीसीआईएल ने दो परियोजनाएँ शुरू की थीं। इन पहलों को ग्रामीणों के साथ "नियमित संपर्क" बनाए रखने के लिए दरवाजे पर और/या आस-पास बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाएँ प्रदान करने के उद्देश्य से लागू किया गया था। दो परियोजनाएँ थीं; मोबाइल वैन सह एम्बुलेंस और एक एलोपैथिक डिस्पेंसरी। परियोजनाओं पर इस प्रकार चर्चा की गई है।

तालिका 3.1. वर्ष 2020-21 में सेवा-टीएचडीसी की स्वास्थ्य पहल

क्र.सं.	परियोजना का नाम	गतिविधि	जगह	समय (अवधि)	लागत (लाख में)
सस्ती और सुलभ स्वास्थ्य सुविधाएं					
1	मोबाइल डिस्पेंसरी सह एम्बुलेंस सेवा	मोबाइल स्वास्थ्य वैन की डोर टू डोर सुविधा	टिहरी गढ़वाल	जनवरी-जून 2021	15.69
2	एलोपैथिक डिस्पेंसरी का संचालन	स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन करना और एलोपैथिक डिस्पेंसरी में सामान्य ऑपरेशन सस्ती दरों पर करना	दीनगांव, प्रतापनगर ब्लॉक, टिहरी	2020-21	18.38
चिकित्सा उपकरणों का प्रावधान					
3	कोविड-19 के अंतर्गत सीएमओ, टिहरी को आवश्यक उपकरण उपलब्ध कराने के लिए वित्तीय सहायता	सीएचसी को अल्ट्रासाउंड और कपड़े धोने की मशीन का प्रावधान	नरेंद्रनगर, टिहरी गढ़वाल	2020-21	8
4	सीएमओ टिहरी कार्यालय को कोविड-19 के लिए पी.पी.ई. किट उपलब्ध कराने हेतु वित्तीय सहायता	आशा कार्यकर्ताओं के लिए पी.पी.ई. किट का प्रावधान	टिहरी गढ़वाल	2020-21	5.5
5.	डीजी सेट के साथ वॉक इन कूलर (16.05) की स्थापना की आपूर्ति	अनेक अस्पतालों को विभिन्न स्वास्थ्य उपकरणों का प्रावधान	टिहरी गढ़वाल	2020-21	8
कोविड की रोकथाम के लिए कोल्ड चेन उपकरण					
6.	वॉक इन कूलर की आपूर्ति एवं स्थापना (16.05)	वॉक इन कूलर की आपूर्ति एवं स्थापना (16.05)	श्रीकोट बेस हॉस्पिटल श्रीनगर, पौड़ी गढ़वाल	2020-21	17.87
7.	परिवार स्वास्थ्य विभाग उत्तराखंड के लिए कोविड - 19 आइस लाइन रेफ्रिजरेटर (आईएलआर-100 यूनिट) के लिए कोल्ड चेन उपकरण की खरीद	विभिन्न चिकित्सा संस्थानों में आईएलआर की खरीद और वितरण	उत्तराखंड में देहरादून, हरिद्वार, उत्तरकाशी, टेहरी, नैनीताल, रुद्रप्रयाद और उधम सिंह नगर, चमोली, उत्तरकाशी	2020-21	190
8.	परिवार स्वास्थ्य विभाग उत्तराखंड के लिए सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम हेतु डीप फ्रीजर (106 यूनिट)	विभिन्न चिकित्सा संस्थानों में डीप फ्रीजर की खरीद और वितरण	उत्तराखंड में ऋषिकेश, देहरादून, हरिद्वार, उधमसिंह नगर, चमोली, उत्तरकाशी	2020-21	79.33
पोषण पहल					
9.	'लॉक-डाउन' (कोविड-19 से सुरक्षा के लिए सरकार द्वारा लगाया गया) के कारण प्रभावित 1082 किसानों को खाद्य सामग्री का वितरण	अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के किसानों और विधवाओं को खाद्य सामग्री का वितरण	कोटेश्वर, जिला रुद्रप्रयाग के विभिन्न गाँव	मई-20	6.6

3.1.1 परियोजना 1

जिला टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड में मोबाइल डिस्पेंसरी सह एम्बुलेंस सेवा



सेवा-टीएचडीसी द्वारा मोबाइल स्वास्थ्य वैन

सीएसआर परियोजना 1	टिहरी गढ़वाल में मोबाइल डिस्पेंसरी सह एम्बुलेंस सेवा
लाभार्थी	टिहरी गढ़वाल के विभिन्न गांवों के लोग
स्थान	टिहरी गढ़वाल
परियोजना लागत	15.69 लाख रुपये
कार्यान्वयन एजेंसी	ग्रामीण शिक्षा और कल्याण सोसायटी
परियोजना उद्देश्य	<p>इस पहल के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं:</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. पीएए में शिशु और मातृ मृत्यु दर और रुग्णता को कम करना। 2. कठिन गर्भधारण की पहचान और देखभाल और रेफरल लिंकेज के माध्यम से संस्थागत प्रसव की सुविधा सहित प्रसव-पूर्व और प्रसवोत्तर देखभाल। 3. बाल टीकाकरण और घर-आधारित देखभाल। 4. स्वास्थ्य स्वच्छता और पोषण शिक्षा। 5. बुनियादी निदान (टीबी/कुष्ठ रोग, एसटीडी/आरटीआई) और उपचारात्मक सेवाएँ।

सतत विकास लक्ष्य के अनुरूप



परियोजना के बारे में

जिला टिहरी में सेवा-टीएचडीसी की सहायता से योग्य चिकित्सकों की एक टीम के नेतृत्व में मोबाइल स्वास्थ्य वैन के माध्यम से परियोजना प्रभावित परिवारों को चिकित्सा सुविधाएं प्रदान की गईं। जिले के दूरदराज के इलाकों में उचित चिकित्सा बुनियादी ढांचे का अभाव था और लोगों को चिकित्सा सहायता प्राप्त करने में बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ता था। सेवा-टीएचडीसी ने ग्रामीण शिक्षा कल्याण सोसायटी के माध्यम से छह महीने की अवधि के लिए मोबाइल स्वास्थ्य वैन सेवा चलाई। कार्य का मुख्य उद्देश्य शिशु, मातृ मृत्यु दर, रुग्णता को कम करना, परियोजना प्रभावित परिवारों के लिए स्वास्थ्य, स्वच्छता और पोषण संबंधी मुद्दों और एहतियात के बारे में जागरूकता पैदा करना था।

पहल का मूल्यांकन

प्रासंगिकता

उच्च

टिहरी के कई हिस्सों में प्राथमिक नैदानिक स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध नहीं थीं। लोगों को लंबी दूरी तय करनी पड़ती थी और अकुशल घरेलू उपचार या स्थानीय चिकित्सकों की देखभाल पर निर्भर रहना पड़ता था। मोबाइल स्वास्थ्य वैन प्राथमिक नैदानिक स्वास्थ्य सेवा सहायता को दरवाजे पर या सुविधाजनक स्थान पर प्रदान कर सकती है। यह कदम पहुंच की खाई को पाटने में एक बड़ी मदद थी। गंभीर बीमारी के समय, यह वैन मरीजों को पास की अन्य अच्छी तरह से सुसज्जित चिकित्सा सुविधाओं के लिए रेफरल भी प्रदान करती थीं। वैन समुदाय की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए चिकित्सा आपूर्ति और आवश्यक दवाओं से सुसज्जित थी। अधिकांश स्थान जहाँ मोबाइल स्वास्थ्य वैन ने अपनी सेवाएँ प्रदान कीं, वे ऐसे थे जहाँ डिस्पेंसरी/प्राथमिक स्वास्थ्य सुविधा की कमी थी। मोबाइल स्वास्थ्य वैन द्वारा प्रदान की जाने वाली निरंतर सेवा वितरण ने स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच को बढ़ावा दिया और बीमारी की घटनाओं में कमी आई, जिससे यह अत्यंत "प्रासंगिक" हो गया।

प्रभावशीलता

उच्च

मोबाइल स्वास्थ्य वैन ने गांवों का दौरा किया और (ए) बुनियादी स्वास्थ्य सेवा, (बी) नैदानिक सेवाएं, (सी) कोविड-19 से बचाव के लिए निवारक उपकरण या सामान / कोविड-19 राहत प्रदान की। मोबाइल स्वास्थ्य वैन परियोजना स्थलों पर छोटी-मोटी बीमारियों और बीमारियों की घटनाओं को कम करने के साथ-साथ सही दवा प्रदान करने में भी लाभ पाया गया। इस परियोजना के परिणामस्वरूप, लोगों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता भी बढ़ी है।

कार्यक्षमता

उच्च

मोबाइल वैन के साथ (ए) प्राथमिक सलाहकार होते हैं, जो डॉक्टर होते हैं, (बी) फार्मासिस्ट और (सी) दवाइयाँ। एमएमयू द्वारा की गई प्रत्येक यात्रा रोगियों को आवश्यक चिकित्सा देखभाल प्रदान करने के मामले में उत्पादक है। समय पर और लगातार हस्तक्षेप के प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में, आबादी की समग्र स्वास्थ्य स्थिति में काफी सुधार हुआ है। सेवा ग्राहकों के बहुमत ने महसूस किया कि उन्हें प्राप्त सेवाएँ उनकी विभिन्न स्वास्थ्य आवश्यकताओं को उचित रूप से पूरा करने में सक्षम थीं।

प्रभाव

उच्च

तीन हजार से ज़्यादा लोगों को मोबाइल हेल्थ वैन की मदद से चिकित्सा सुविधा मिल पाई, जो परियोजना से जुड़े इलाकों में तैनात थी। इस हस्तक्षेप का प्रभाव सीमित है क्योंकि यह हस्तक्षेप सिर्फ छह महीने के लिए था। इसके संचालन के छह महीनों के दौरान लाभार्थियों को स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच प्राप्त हुई जो मुफ्त थी और उनकी आर्थिक स्थिति के हिसाब से भी थी।

सुसंगति

उच्च

यह प्रयास भारत सरकार के "राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन" का हिस्सा है। टीएचडीसी की परियोजना सतत विकास लक्ष्य 3 (एसडीजी 3) से भी मेल खाती है, जो स्वास्थ्य और कल्याण पर केंद्रित है।

स्थिरता

कम

यह पहल लोगों को बिना किसी लागत के प्रदान की गई, जिसमें सेवा-टीएचडीसी और ग्रामीण शिक्षा एवं कल्याण सोसाइटी की कार्यान्वयन एजेंसी की वित्तीय सहायता शामिल थी। मोबाइल स्वास्थ्य वैन वित्तीय सहायता के बिना एक स्वतंत्र इकाई के रूप में नहीं चल सकती, जिससे इसकी स्थिरता कम हो जाती है।

समग्र मूल्यांकन

यह पहल दूरदराज के इलाकों में रहने वाले लोगों तक पहुंचने और उन्हें मुफ्त चिकित्सा उपचार प्रदान करने में सफल रही। हालांकि, इस पहल के बंद हो जाने से इसकी स्थिरता कम हो गई।

सुझाव

उपलब्ध मोबाइल स्वास्थ्य वैन को किसी एनजीओ/संगठन के साथ लंबी अवधि के लिए या मौसम परिवर्तन के दौरान साझेदारी में रखा जा सकता है, क्योंकि इस समय वायरल संक्रमण और अन्य संचारी रोगों का खतरा अधिक होता है।

3.1.2 परियोजना 2

दीनगांव, प्रतापनगर ब्लॉक, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड में एलोपैथिक औषधालय का संचालन

सीएसआर परियोजना 2	दीनगांव, प्रतापनगर ब्लॉक, टिहरी गढ़वाल में एलोपैथिक औषधालय का संचालन
लाभार्थी	दीनगांव और आस-पास के गांवों के लोग
स्थान	दीनगांव, ब्लॉक प्रतापनगर जिला टिहरी गढ़वाल
परियोजना लागत	18.38 लाख
कार्यान्वयन एजेंसी	शहीद भगत सिंह (सांध्य) कॉलेज दिल्ली
परियोजना उद्देश्य	परियोजना से जुड़े क्षेत्रों के दूरस्थ भागों में भौतिक एवं वित्तीय रूप से सुलभ स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध कराना।

सतत विकास लक्ष्य के अनुरूप



चित्र 3.1: डिस्पेंसरी में डॉक्टरों का परामर्श



चित्र 3.2: एलोपैथिक डिस्पेंसरी में मौजूद चिकित्सा उपकरण

परियोजना के बारे में

सेवा-टीएचडीसी का उद्देश्य लोगों की स्वास्थ्य स्थिति और जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना है, जिसका उद्देश्य बीमारी के बोझ को कम करना, एक सक्षम वातावरण बनाना, राज्य में पोषण, पानी, स्वच्छता और शिक्षा और रोजगार जैसे अन्य कारकों जैसे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष स्वास्थ्य निर्धारकों को प्रभावित करना है। एलोपैथिक डिस्पेंसरी आबादी को स्थिर करने और प्रजनन क्षमता के प्रतिस्थापन स्तर को प्राप्त करने का प्रयास करती है, जबकि कम सेवा वाले, दुर्गम और दूरदराज के स्थानों पर विशेष ध्यान देती है।

प्रासंगिकता

उच्च

प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र स्थानीय ग्रामीणों को बुनियादी स्वास्थ्य सेवा प्रदान करता है। स्वास्थ्य केंद्र में एक डॉक्टर और एक महिला परिचारिका के साथ-साथ लैब तकनीशियन, फार्मासिस्ट और सहायक कर्मचारी भी हैं। ग्रामीण न्यूनतम लागत पर और अपने घरों के आस-पास ही बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ उठा पाते हैं, जिससे यह पहल अत्यधिक प्रासंगिक साबित होती है

प्रभावशीलता

उच्च

पीएचसी में लोगों को उनकी ज़रूरतों के हिसाब से निम्नलिखित सेवाएँ/सुविधाएँ उपलब्ध हैं। पीएचसी में (ए) एम्बुलेंस सेवा, (बी) ओपीडी, (सी) आईपीडी, (डी) एक्स-रे, (ई) ईसीजी, (एफ) ऑक्सीजन, (जी) माइनर ओटी और (एच) नेबुलाइज़र है। आस-पास के गाँवों से लोग स्वास्थ्य केंद्र के माध्यम से उपलब्ध कराई गई सुविधाओं का उपयोग करने आते हैं और अपनी स्वास्थ्य समस्याओं के लिए उपचार चाहते हैं जो पहले उनके लिए दुर्गम थीं।

क्षमता

उच्च

अच्छी तरह से सुसज्जित पीएचसी और इसके मरीजों के रिकॉर्ड स्वास्थ्य केंद्र की दक्षता को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं। डॉक्टर परामर्श, चिकित्सा जांच, दवाएँ और एम्बुलेंस सेवाओं सहित सेवाओं का निवासियों द्वारा बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाता है जो एक अत्यधिक कुशल हस्तक्षेप को दर्शाता है।

तालिका संख्या: 3.2 मासिक उपयोगिता पीएचसी पर परीक्षण

प्रभाव

उच्च

आंकड़ों के अनुसार, वर्ष 2020-21 के दौरान 499 मरीजों ने पीएचसी का दौरा किया और परीक्षण सुविधाओं का लाभ उठाया। पीएचसी अपनी सेवाओं के लिए मामूली शुल्क लेता है, जो कुल मिलाकर 29,290 रुपये है। जांच सुविधाओं के अलावा, केंद्र के माध्यम से 354 महिलाओं को सैनिटरी पैड प्रदान किए गए। पूरे वर्ष में कुल 8,000 से अधिक लोगों (डिस्पेंसरी में रिकॉर्ड के अनुसार) का इलाज किया गया। मरीजों ने मुफ्त दवाओं के साथ ओपीडी सुविधा का लाभ उठाया। लाभार्थी बहुत ही मामूली लागत पर स्वास्थ्य केंद्र के माध्यम से स्वास्थ्य सेवाओं से संतुष्ट थे। विभिन्न परीक्षण सुविधाओं का उपयोग करने वाले मरीजों का विवरण मासिक तालिका संख्या 3.2 में दिया गया है।

एकत्रित धनराशि (रु. में)	एकत्रित धनराशि (रु. में)	एकत्रित धनराशि (रु. में)
अप्रैल 20	09	450
मई 20	11	500
जून 20	34	1500
जुलाई 20	100	6610
अगस्त 20	35	2120
सितंबर 20	32	2040
अक्टूबर 20	38	3180
नवंबर 20	05	280
दिसंबर 20	67	1190
जनवरी 21	73	2410
फरवरी 21	42	3360
मार्च 21	53	5650

स्रोत: डिस्पेंसरी रजिस्टर: दैनिक रिकॉर्ड

सुसंगति

उच्च

यह पहल भारत सरकार के राष्ट्र स्वास्थ्य मिशन की पहल के अनुरूप है, जिसका उद्देश्य लोगों की जरूरतों के प्रति जवाबदेह और उत्तरदायी न्यायसंगत, किफायती और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं तक सार्वभौमिक पहुंच सुनिश्चित करना है।

स्थिरता

उच्च

स्वास्थ्य केंद्र मरीजों से न्यूनतम शुल्क लेता है, जिसका उपयोग प्रयोगशाला उपकरणों के रखरखाव के लिए किया जाता है, जिससे यह साबित होता है कि यह पहल लंबे समय तक टिकाऊ रहेगी।

समग्र मूल्यांकन

यह पहल परियोजना क्षेत्र में कमजोर सामाजिक-आर्थिक वर्ग के लोगों को सस्ती चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराने में सफल रही है।



3.2 चिकित्सा उपकरणों का प्रावधान

यहां चर्चा की गई सीएसआर पहल कोविड महामारी की रोकथाम के लिए चिकित्सा उपकरणों के लिए वित्तीय सहायता से संबंधित है। चिकित्सा उपकरण टिहरी गढ़वाल के विभिन्न सीएचसी, पीएचसी और मेडिकल कॉलेजों में वितरित किए गए। इस विषय के तहत तीन परियोजनाओं पर चर्चा की गई है:

1. सीएमओ, टिहरी को कोविड-19 की रोकथाम के लिए स्वास्थ्य उपकरणों की आपूर्ति
2. सीएमओ टिहरी, जिला टिहरी गढ़वाल के कार्यालय को वित्तीय सहायता
3. डीएम, टिहरी को कोविड-19 की रोकथाम के लिए स्वास्थ्य उपकरणों की आपूर्ति

3.2.1 परियोजना 3

सीएमओ, टिहरी, जिला टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड को कोविड-19 की रोकथाम के लिए स्वास्थ्य उपकरण की आपूर्ति



चित्र 3.3 : सीएचसी नरेन्द्रनगर में कपड़े धोने की मशीन



चित्र 3.4 : सीएचसी नरेन्द्रनगर में अल्ट्रासाउंड मशीन

सीएसआर परियोजना 3	सीएमओ, टिहरी को कोविड-19 की रोकथाम के लिए स्वास्थ्य उपकरण की आपूर्ति
लाभार्थी	टिहरी में अस्पताल की सुविधाओं का लाभ लेते लोग
स्थान	टिहरी, जिला: टिहरी गढ़वाल
परियोजना लागत	रु. 8 लाख
क्रियान्वयन एजेंसी	सेवा-टीएचडीसी
परियोजना उद्देश्य	कोविड-19 की रोकथाम के लिए चिकित्सा उपकरणों का प्रावधान

सतत विकास लक्ष्य के अनुरूप



परियोजना का संक्षिप्त विवरण

सीएमओ टिहरी के अनुरोध पर सेवा-टीएचडीसी द्वारा एक अल्ट्रासाउंड मशीन और एक लॉन्ड्री मशीन उपलब्ध कराई गई। उन्होंने यह परिसंपत्ति (उपकरण) सीएचसी, नरेंद्रनगर को आवंटित कर दी थी।

पहल का मूल्यांकन

प्रासंगिकता

उच्च

चिकित्सा उपकरण स्वास्थ्य प्रणालियों का एक मूलभूत घटक हैं; इनका लाभ निरंतर बढ़ रहा है क्योंकि ये सुरक्षित और प्रभावी तरीके से रोगी की रोकथाम, निदान, उपचार और पुनर्वास में योगदान करते हैं। सीएचसी नरेंद्रनगर ने सीएमओ टिहरी से चिकित्सा उपकरण मांगे थे जो उन्हें उपलब्ध कराए गए जिससे यह अत्यंत प्रासंगिक हो गया।

प्रभावशीलता

उच्च

अल्ट्रासाउंड मशीन और लॉन्ड्री सीएचसी के लिए एक परिसंपत्ति है। नरेंद्रनगर में एक सुविधा के साथ रोगियों को रंगीन अल्ट्रासाउंड की सुविधा मिलती है। 15 किलोग्राम की क्षमता वाली लॉन्ड्री मशीन का उपयोग अस्पताल की लॉन्ड्री (बेडशीट, सर्जिकल कोट आदि) को नियमित रूप से धोकर स्वच्छता बनाए रखने के लिए किया जा सकता है। परिसंपत्ति योगदान की प्रभावशीलता उच्च थी।

क्षमता

मध्यम

रिकॉर्ड के अनुसार, अल्ट्रासाउंड मशीन का उपयोग वित्त वर्ष 2020-21 के दौरान केवल 41 बार किया गया क्योंकि रेडियोलॉजिस्ट का पद रिक्त है। कपड़े धोने की मशीन का उपयोग वर्ष में केवल दो बार किया जाता था। यह पाया गया कि कपड़े धोने की मशीन को बारिश से बचाने के लिए ढक दिया गया था क्योंकि इसे बिना दीवारों वाले टिन शेड में रखा गया था। इससे कम दक्षता वाली परियोजना का पता चलता है।

प्रभाव

कम

दोनों चिकित्सा उपकरण अस्पताल के लिए महत्वपूर्ण परिसंपत्ति हैं और नियमित रूप से उपयोग किए जाने पर भविष्य में सफल साबित हो सकते हैं। अल्ट्रासाउंड मशीन के मामले में रेडियोलॉजिस्ट की कमी और कपड़े धोने की मशीन के उचित स्थान की कमी के कारण दोनों परिसंपत्तियों का कम उपयोग हुआ है, जिससे प्रभाव कम हो गया है।

सुसंगति

उच्च

यह पहल अस्पतालों को चिकित्सा उपकरण उपलब्ध कराने और उनके रखरखाव के लिए भारत सरकार के बायोमेडिकल उपकरण प्रबंधन और रखरखाव कार्यक्रम के अनुरूप है। इस प्रकार यह उच्च सुसंगतता का संकेत देता है।

सीएचसी नरेंद्रनगर द्वारा उपकरणों को उपयोग में लाकर इस पहल को टिकाऊ बनाया जा सकता है। अभी तक ऑपरेटरों की कमी के कारण उपकरणों का कम उपयोग हो रहा है। हालांकि यह हस्तक्षेप अत्यधिक सुसंगत और टिकाऊ है, लेकिन इसका इष्टतम उपयोग किया जा सकता है। इष्टतम उपयोग के लिए स्थायी या अस्थायी नियुक्ति की जानी चाहिए।

समग्र मूल्यांकन

चिकित्सा उपकरण ठीक से काम कर रहे हैं और उनका रखरखाव भी ठीक है। हालांकि, सीएचसी नरेंद्रनगर में मानव संसाधन और बुनियादी ढांचे की कमी के कारण उपकरणों का उपयोग नहीं हो पा रहा है।

सुझाव

रेडियोलॉजिस्ट की नियुक्ति और कपड़े धोने की मशीन के लिए उपयुक्त स्थान को इष्टतम उपयोग के लिए प्राथमिकता दी जानी चाहिए। स्थायी समाधान होने तक सीएचसी अस्थायी या विज़िटिंग या प्रति घंटे के आधार पर नियुक्ति भी कर सकते हैं।



चित्र 3.5: सी.एच.सी, नरेंद्रनगर

3.2.2 परियोजना 4

कोविड-19 से बचाव के लिए पी.पी.ई किट उपलब्ध कराने के लिए सीएमओ टिहरी, जिला टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड के कार्यालय को वित्तीय सहायता



सीएसआर परियोजना 4	कोविड-19 से बचाव के लिए पी.पी.ई. किट उपलब्ध कराने हेतु सीएमओ कार्यालय टिहरी, जिला टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड को वित्तीय सहायता।
लाभार्थी	टिहरी क्षेत्र में आशा कार्यकर्ता
स्थान	टिहरी, जिला गढ़वाल
परियोजना लागत	रु. 5.50 लाख
क्रियान्वयन एजेंसी	सेवा-टीएचडीसी
परियोजना उद्देश्य	कोविड महामारी के प्रसार की रोकथाम के लिए पी.पी.ई. किट का प्रावधान।

सतत विकास लक्ष्य के अनुरूप



परियोजना के बारे में संक्षिप्त जानकारी

कोविड के दौरान, मरीजों और कर्मचारियों के बीच संक्रमण को रोकने के लिए, सामाजिक दूरी के मानदंडों के अलावा पीपीई किट के उपयोग की अत्यधिक अनुशंसा की गई थी। कंपनियों को अपने सीएसआर फंड के माध्यम से पीपीई किट की खरीद और वितरण के लिए योगदान देना भी अनिवार्य किया गया था। सेवा-टीएचडीसी ने कोविड महामारी के प्रसार को रोकने के लिए सीएमओ कार्यालय, टिहरी को 1000 पीपीई किट प्रदान करके योगदान दिया, जिन्हें कोविड टीकाकरण अभियान में सक्रिय रूप से भाग लेने वाली आशा कार्यकर्ताओं के बीच वितरित किया जाना था।

पहल का मूल्यांकन

प्रासंगिकता

उच्च

पीपीई किट का योगदान देने की पहल अत्यंत प्रासंगिक थी। निवारक उपकरण किट कोविड टीकाकरण अभियान में शामिल आशा कार्यकर्ताओं के लिए थे। यह योगदान सीएमओ कार्यालय, टिहरी के माध्यम से किया गया।

प्रभावशीलता

उच्च

पी.पी.ई. किट में 1 कवरऑल, 1 जोड़ी दस्ताने, 1 मास्क, 1 चश्मा, 1 फेस शील्ड और 1 कैरी बैग शामिल था। सीएमओ, टिहरी और सीएचसी के कार्यालय के माध्यम से आशा कार्यकर्ताओं के बीच कुल 1000 पी.पी.ई. किट वितरित की गईं। पी.पी.ई. किट धोने योग्य थे और टीकाकरण अभियान के दौरान आशा कार्यकर्ताओं द्वारा बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किए गए थे, जिससे यह परियोजना अत्यधिक प्रभावी हो गई। जांच दल ने आशा कार्यकर्ता से क्षेत्र भ्रमण के दौरान वितरण की पुष्टि की थी, हालांकि, उन्हें इस बात का कोई अंदाजा नहीं था कि पी.पी.ई. किट सेवा-टीएचडीसी की पहल थी या नहीं।

क्षमता

उच्च

पी.पी.ई. किट धोने योग्य थे, इसलिए उन्हें धोकर कई बार इस्तेमाल किया जा सकता था, इसलिए आशा कार्यकर्ताओं द्वारा इनका उपयोग अत्यधिक कुशल तरीके से किया गया। आशा कार्यकर्ताओं ने पुष्टि की कि उन्होंने टीकाकरण अभियान के दौरान और महामारी के दौरान दैनिक जीवन में भी इन किटों का उपयोग किया।

प्रभाव

उच्च

पीपीई किट के उपयोग के साथ-साथ सामाजिक दूरी के मानदंडों का पालन महामारी के प्रसार को नियंत्रित करने में सहायक सिद्ध हुआ। आशा कार्यकर्ताओं ने पुष्टि की कि कोविड टीकाकरण अभियान के दौरान वे संक्रमित नहीं हुईं।

सुसंगति

उच्च

यह पहल कोविड महामारी के प्रसार को नियंत्रित करने के लिए भारत सरकार, राज्य सरकार और विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा की गई विभिन्न पहलों के अनुरूप है, इसलिए इसे अत्यधिक सुसंगत माना जाता है।

स्थिरता

उच्च

यह पहल अपने दृष्टिकोण में टिकाऊ है क्योंकि इसने संक्रमण में वृद्धि के दौरान वैश्विक महामारी को नियंत्रित करने में योगदान दिया। यह योगदान भारत में सफल टीकाकरण अभियान के लिए एक सहायक पहल थी, जो इसे अत्यधिक टिकाऊ होने का सुझाव देती है।

समग्र मूल्यांकन

यह पहल कोविड से सुरक्षा प्रदान करने के अपने उद्देश्य को पूरा करने में सफल रही। जैसा कि रिपोर्ट किया गया है और पुष्टि की गई है, टीकाकरण अभियान के दौरान किसी भी आशा कार्यकर्ता को कोविड + पॉजिटिव नहीं पाया गया, इसलिए यह पहल अत्यधिक सफल है।



चित्र 3.8: आशा वर्कर्स को मास्क प्रदान किए गए।

3.2.3 परियोजना 5

डीएम, टिहरी, जिला: टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड को कोविड-19 की रोकथाम के लिए स्वास्थ्य उपकरण की आपूर्ति



सीएसआर परियोजना 5	डीएम, टिहरी को कोविड-19 की रोकथाम हेतु स्वास्थ्य उपकरणों की आपूर्ति
लाभार्थी	टिहरी के अस्पताल में स्वास्थ्य सुविधाएं प्राप्त करते लोग।
स्थान	टिहरी, जिला टिहरी गढ़वाल
परियोजना लागत	रु. 8 लाख
क्रियान्वयन एजेंसी	सेवा-टीएचडीसी
परियोजना उद्देश्य	महामारी के नियंत्रण के लिए स्वास्थ्य उपकरणों का प्रावधान।

सतत विकास लक्ष्य के अनुरूप



परियोजना के बारे में

कोविड महामारी के दौरान, स्वास्थ्य केंद्रों को उपकरणों (पल्स ऑक्सीमीटर, ऑक्सीजन सिलेंडर, मास्क और विभिन्न अन्य उपभोग्य सामग्रियों) की कमी का सामना करना पड़ रहा था। डीएम, टिहरी ने टीएचडीसी से इस उद्देश्य के लिए उपकरणों का योगदान करने का अनुरोध किया। (तालिका संख्या: 3.3)

तालिका संख्या 3.3: कोविड-19 की रोकथाम के लिए स्वास्थ्य उपकरण

S. No.	Items	Qty
1	Surgical gloves in pairs	26000
2	Pulse oximeter in units	410
3	Ice packs in pieces	1170
4	Digital thermometer in pairs	100
5	Triple layer masks in units	30,000
6	Oxygen cylinder with key in pieces	50

पहल का मूल्यांकन

प्रासंगिकता

उच्च

कोविड महामारी ने पूरी दुनिया को बुरे तरीके से प्रभावित किया है। यह एक वैश्विक महामारी के रूप में सामने आई है। जिसने दुनिया को बहुत नकारात्मक तरीके से प्रभावित किया। दुनिया भर की सरकारें और अपने देश के लोगों से घर के अंदर रहने और महामारी से लड़ने में योगदान देने का अनुरोध कर रहे थे। सरकार ने कंपनियों को महामारी से लड़ने के लिए अपना सीएसआर खर्च करने के लिए भी आमंत्रित किया, इसलिए यह पहल अत्यधिक प्रासंगिक है।

प्रभावशीलता

उच्च

कोविड के लिए आवश्यक चिकित्सा आपूर्ति जिसमें सर्जिकल मास्क, पल्स ऑक्सीमीटर, आइस पैक, डिजिटल थर्मामीटर, ट्रिपल लेयर मास्क और चाबी सहित ऑक्सीजन सिलेंडर शामिल थे, सेवा-टीएचडीसी के माध्यम से डीएम, टिहरी को प्रदान किए गए। जिन्होंने आवश्यकतानुसार आस-पास के विभिन्न अस्पतालों को सभी आपूर्ति भेज दी थी। कोविड महामारी से लड़ने के लिए यह प्रयास अत्यधिक प्रभावी रहा

क्षमता

उच्च

अस्पतालों को दिए गए उपकरण बहुत अच्छी गुणवत्ता के हैं साथ ही अपने-अपने उद्देश्यों को पूरा करते थे। पूरे अस्पताल में उपकरणों का कुशलतापूर्वक उपयोग किया गया। जब अस्पताल के अधिकारियों से बात की गई तो उन्होंने पुष्टि की कि सामान डीएम, टिहरी के माध्यम से प्राप्त हुए थे। अधिकारियों के अनुरोध पर सामान जारी किए गए थे। उन्होंने बताया कि सामान की समय पर उपलब्धता के कारण वे लोगों की जान बचाने में सक्षम हुए थे। इस प्रकार, परियोजना को अत्यधिक कुशल माना गया।

प्रभाव

उच्च

महामारी की रोकथाम में यह उपकरण अत्यधिक सफल रहा और इसने निदान या ऑक्सीजन आपूर्ति के प्रावधान के माध्यम से कई लोगों की जान बचाई। वैश्विक महामारी को नियंत्रित करने की दिशा में सभी प्रयास किए गए, जिसमें हम कुछ हद तक सफल रहे हैं, खासकर भारत में।

सुसंगति

उच्च

इन उपकरणों का इस्तेमाल कोविड महामारी के दौरान किया गया था, जिससे महामारी के प्रसार को नियंत्रित करने के लिए सरकार की पहल को समर्थन मिला था। इसलिए, यह पहल सरकार की पहलों के साथ अत्यधिक सुसंगत है।

स्थिरता

उच्च

ये उपकरण उन अस्पतालों को भेजे गए, जिनका कोविड के दौरान बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया गया था। अस्पताल कोविड के बाद भी उपकरणों के रखरखाव की पूरी जिम्मेदारी लेते हैं। इस प्रकार इस पहल की स्थिरता उच्च है।

समग्र मूल्यांकन

कोविड के दौरान मरीजों की देखभाल और निगरानी के लिए आपूर्ति किए गए चिकित्सा उपकरण किसी भी चिकित्सा सुविधा के लिए आवश्यक एवं उपयुक्त थे। उपकरण का कुशलतापूर्वक उपयोग किया गया और यह कई लोगों के लिए जीवन रक्षक साबित हुआ, जिससे महामारी को रोका जा सका।

हमेशा देखभाल के लिए तैयार (केस स्टडी-1)

कोविड महामारी की दूसरी लहर के दौरान, नरेंद्र नगर अस्पताल में 80 मरीजों के लिए आपातकालीन स्थिति में ऑक्सीजन सिलेंडर की आवश्यकता थी, जो उस समय लेवल-2 का अस्पताल था। डॉ. अनिल नेगी (सीएमएस) ने रात 8 बजे सीएमओ कार्यालय से संपर्क किया और तत्काल आधार पर सिलेंडर की मांग की, उन्होंने कहा कि उनके पास ऑक्सीजन की आपूर्ति बहुत कम है और ऑक्सीजन 2 घंटे से भी कम समय तक चलेगी। अस्पताल सीएमओ कार्यालय से 1 घंटे से अधिक की दूरी पर स्थित था। उस समय श्री अनूप कृषाली (केंद्रीय औषधि भंडार डिपो में स्टोर मैनेजर) ने खुद ही सिलेंडर की व्यवस्था की।



उन्होंने टिहरी के हर सीएचसी को फोन करके अतिरिक्त आपूर्ति मांगी और 2 घंटे के निर्धारित समय में वे 35 ऑक्सीजन सिलेंडर और 10 एलपीएम ऑक्सीजन कंसंट्रेटर भेजने में सफल रहे साथ ही मरीजों की जान बचाने में सफल रहे।

केस स्टडी-2

कोविड की दूसरी लहर के दौरान, नर्सिंग कॉलेज सुर सिंह धार, जो उस समय एक कोविड केयर सेंटर था, उसे ऑक्सीजन सिलेंडर की आपातकालीन आवश्यकता थी। आवश्यकता को सीएमओ, टिहरी को भेज दिया गया था। सीएमओ कार्यालय को सेवा-टीएचडीसी द्वारा आपूर्ति किए गए उपकरण/उपभोग्य सामग्रियां पहले ही मिल चुकी हैं। संयोग से अधिकांश सदस्यों में कोविड के लक्षण दिखाई दिए थे। सभी सदस्यों का परीक्षण किया गया था और रिपोर्ट की प्रतीक्षा की जा रही थी। सीएमओ कार्यालय में स्टोर मैनेजर श्री अनूप कृषाली का भी परीक्षण किया गया था और उन्हें आइसोलेशन में रखा गया था, हालांकि उनमें कोई कोविड लक्षण नहीं दिखे थे। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए श्री अनूप कृषाली ने खुद ही जिम्मेदारी लेने का फैसला किया। उन्होंने सुरक्षा के लिए एक पी.पी.ई. किट पहनी और अपने एक रिश्तेदार की मदद से, जो कोविड निगेटिव था, वह व्यक्तिगत रूप से आधी रात के आसपास कार्यालय पहुंचे और अस्पताल की आवश्यकता को पूरा करने के लिए ट्रकों में सभी आवश्यक आपूर्ति भेज दी

3.1 कोविड की रोकथाम के लिए कोल्ड चेन उपकरण

जैसा कि नाम से पता चलता है, इस विषय के अंतर्गत चर्चा की गई सीएसआर पहलों में विभिन्न टीकाकरण अभियानों में सहायता प्रदान करके कोविड महामारी की रोकथाम के लिए विभिन्न चिकित्सा सुविधाओं पर कोल्ड चेन उपकरण:

आईएलआर, डीप फ्रीजर और वॉक-इन कूलर का प्रावधान शामिल था। विषय के अंतर्गत चर्चा की गई पहल इस प्रकार हैं:

1. श्रीकोट बेस अस्पताल श्रीनगर गढ़वाल में डीजी सेट के साथ वॉक इन कूलर (16.05 क्यूबिक मीटर) की आपूर्ति और स्थापना।
2. कोविड-19 की रोकथाम के लिए उत्तराखंड चिकित्सा स्वास्थ्य और परिवार कल्याण विभाग के लिए कोल्ड चेन उपकरण (आईएस लाइन्स रेफ्रिजरेटर (आईएलआर)) की खरीद।
3. उत्तराखंड चिकित्सा स्वास्थ्य और परिवार कल्याण विभाग के लिए सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम के लिए डीप फ्रीजर की खरीद।

ये पहल कोविड नियंत्रण टीकाकरण अभियानों में सहायता के समान उद्देश्य से लागू की गई थीं, इसलिए, इन पहलों पर तीन अलग-अलग के बजाय एक के रूप में चर्चा की गई।

3.3.1. परियोजना 6: चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, उत्तराखंड के लिए डीप फ्रीजर और आईएलआर की खरीद और श्रीनगर के बेस अस्पताल में वॉक-इन कूलर की आपूर्ति और स्थापना



चित्र 3.12 : राज्य कोल्ड चेन कार्यालय, देहरादून में डीप फ्रीजर



चित्र 3.13 : आइस पैक युक्त डीप फ्रीजर

तालिका 3.4: कोल्ड चैन उपकरणों के प्रावधान के लिए सीएसआर परियोजनाएं

सीएसआर परियोजनाएं	लाभार्थी	स्थान	परियोजना लागत	परियोजना उद्देश्य	कार्यान्वयन एजेंसी	एसडीजी के अनुरूप
डीजी सेट के साथ वॉक इन कूलर (16.05 क्यूबिक मीटर) की आपूर्ति और स्थापना	श्रीनगर क्षेत्र में दवाइयों और टीकाकरण का लोग उपयोग कर रहे हैं	श्रीनगर, पौड़ी गढ़वाल	रु.17.87 लाख	टीकों के स्टोरेज के लिए वॉक-इन कूलर का प्रावधान	सेवा-टीएचडीसी	एसडीजी 3: अच्छा स्वास्थ्य और खुशहाली
परिवार स्वास्थ्य विभाग उत्तराखंड के लिए कोविड-19 आइस लाइन्स रेफ्रिजरेटर (आईएलआर-100 यूनिट) के लिए कोल्ड चैन उपकरण की खरीद	लोग टीकाकरण सुविधा का लाभ ले रहे हैं	उत्तराखंड	1.90 करोड़	कोविड महामारी को नियंत्रित करने के लिए आईएलआर प्रदान करना	सेवा-टीएचडीसी	एसडीजी 3: अच्छा स्वास्थ्य और खुशहाली
परिवार स्वास्थ्य विभाग उत्तराखंड के लिए सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम हेतु डीप फ्रीजर (106 यूनिट)	उत्तराखंड में टीकाकरण सुविधाओं का लाभ लोग ले रहे हैं।	उत्तराखंड	रु. 79.33 लाख	कोविड महामारी को नियंत्रित करने के लिए सफल टीकाकरण अभियान के लिए डीप फ्रीजर का प्रावधान	सेवा-टीएचडीसी	एसडीजी 3: अच्छा स्वास्थ्य और खुशहाली

पहल के बारे में

कोविड महामारी के दौरान, भारत सरकार और राज्य सरकार द्वारा बड़े पैमाने पर टीकाकरण अभियान चलाया गया था, पूरे उत्तराखंड में टीकाकरण अभियान चलाने के लिए भेजे जाने वाले टीकों को संग्रहीत करने के लिए अस्पतालों में कोल्ड चैन उपकरणों की आवश्यकता बढ़ गई थी। कोविड राहत कार्यों में सहायता के लिए सरकार द्वारा कॉर्पोरेट सहायता मांगी गई थी। सेवा-टीएचडीसी ने उत्तराखंड में विभिन्न चिकित्सा सुविधाओं में आईएलआर, डीप फ्रीजर और वॉक-इन कूलर की खरीद के लिए सहायता प्रदान की।

पहल का मूल्यांकन

प्रासंगिकता

उच्च

कोविड महामारी की रोकथाम के लिए टीकाकरण अभियान वर्ष 2020-21 के दौरान वैश्विक चिंता का विषय बन गया। सेवा-टीएचडीसी ने सभी स्तरों पर विभिन्न पहलों के माध्यम से इस अभियान का समर्थन किया। इतने बड़े पैमाने पर कोविड टीकाकरण अभियान की शेल्व-लाइफ बढ़ाने के लिए कोल्ड चैन उपकरणों की सख्त जरूरत थी। यह पहल बेहद प्रासंगिक है।

प्रभावशीलता

उच्च

डीजी सेट के साथ वॉक-इन कूलर: वॉक-इन कूलर की क्षमता किसी भी समय 5760 लीटर की होती है। यह 2108160 आरआई वैक्सीन (360 खुराक/लीटर) और/या 1209600 कोविड वैक्सीन (210 खुराक/लीटर) स्टोर कर सकता है। कूलर को डीजी सेट से जोड़ा गया है ताकि बिजली कटौती के दौरान बिजली की आपूर्ति बनी रहे; इस प्रकार अगर इसे बिना देखरेख के छोड़ दिया जाए तो यह 4-5 दिनों तक तापमान बनाए रखता है।

आइस लाइन रेफ्रिजरेटर: टीएचडीसी द्वारा उत्तराखंड परिवार स्वास्थ्य विभाग के लिए कुल 100 आइस लाइन रेफ्रिजरेटर जारी किए गए। उपकरण का विवरण तालिका संख्या 3.5 में दिया गया है।

डीप फ्रीजर: सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम के लिए सेवा-टीएचडीसी के माध्यम से कुल 106 डीप फ्रीजर उपलब्ध कराए गए। डीप फ्रीजर का वितरण तालिका संख्या 3.6 में दिया गया है।

मूल्यांकन दल ने देहरादून और हरिद्वार में विभिन्न स्वास्थ्य सुविधाओं का दौरा किया। यह पाया गया कि खरीदे गए गोदरेज आइस लाइन्स रेफ्रिजरेटर की क्षमता 225 लीटर थी, जिसमें टीकों को स्टोर करने के लिए चार रैंक थे। डीप फ्रीजर का उपयोग आइस पैक को स्टोर करने के लिए किया जाता है, जिसका उपयोग बाद में वैक्सीन के परिवहन या टीकाकरण अभियान के दौरान वैक्सीन वाहक में किया जाता है। डीप फ्रीजर को ठंडी और हवादार जगहों पर संग्रहित किया गया था, जिससे उत्पाद की शेल्फ-लाइफ लंबी लंबी सुनिश्चित हुई। सभी उपकरण टीकाकरण के भंडारण के लिए खरीदे गए थे और इसलिए यह अत्यधिक प्रभावी योगदान था।

तालिका 3.5 : आईएलआर रेफ्रिजरेटर का विवरण

क्रमांक	आईएलआर रेफ्रिजरेटर का विवरण	मात्रा
	प्राप्तकर्ता	100
1	सीएमएसडी स्टोर स्टेट स्कूल ऑफ नर्सिंग के पास देहरादून उत्तराखंड	30
2	मुख्य चिकित्सा अधिकारी (सीएमओ) देहरादून उत्तराखंड	10
3	मुख्य चिकित्सा अधिकारी (सीएमओ) हरिद्वार उत्तराखंड	15
4	मुख्य चिकित्सा अधिकारी (सीएमओ) उत्तरकाशी उत्तराखंड	5
5	मुख्य चिकित्सा अधिकारी (सीएमओ) टिहरी उत्तराखंड	5
6	मुख्य चिकित्सा अधिकारी (सीएमओ) नैनीताल उत्तराखंड	4
7	मुख्य चिकित्सा अधिकारी (सीएमओ) रुद्रप्रयाग उत्तराखंड	6
8	मुख्य चिकित्सा महाविद्यालय देहरादून उत्तराखंड	2
9	मुख्य चिकित्सा अधिकारी (सीएमओ) उधम सिंह नगर उत्तराखंड	14

तालिका 3.6 : डीप फ्रीजर का विवरण

क्रमांक	डीप फ्रीजर का विवरण	मात्रा
	प्राप्तकर्ता	106
1	एम्स ऋषिकेश	2
2	मुख्य चिकित्सा अधिकारी (सीएमओ) हरिद्वार उत्तराखंड	30
3	मुख्य चिकित्सा अधिकारी (सीएमओ) देहरादून उत्तराखंड को जारी किया गया	20
4	श्री आर.सी. गौतम राज्य कोल्ड चेन अधिकारी देहरादून उत्तराखंड	10
5	मुख्य चिकित्सा अधिकारी (सीएमओ) उधम सिंह नगर उत्तराखंड	20
6	मुख्य चिकित्सा अधिकारी (सीएमओ) चमोली उत्तराखंड	3
7	मुख्य चिकित्सा अधिकारी (सीएमओ) उत्तरकाशी उत्तराखंड	2

क्षमता

उच्च

उत्तराखंड में विभिन्न चिकित्सा सुविधाओं में सभी कोल्ड चेन उपकरणों का उपयोग किया जा रहा था। इन उपकरणों का उपयोग पूरी क्षमता से किया गया, खास तौर पर कोविड के समय में और दवाओं और इंजेक्शन के लिए किसी भी समय 60% से अधिक क्षमता पर उपयोग किया गया। इस प्रकार यह हस्तक्षेप अत्यधिक कुशल है।

प्रभाव

उच्च

टीकाकरण अभियान के दौरान कोल्ड चेन उपकरण अत्यधिक प्रभावी रहे इस कारण कोविड राहत कार्य में प्रमुख भूमिका निभाई। इसका उपयोग दवाओं और टीकों के भंडारण के लिए भी किया जाता है या इसका उपयोग आइस पैक को संग्रहीत करने के लिए किया जा रहा है, जिसका उपयोग वैक्सीन वाहनों में किया जाता है। इस पहल ने पूरे राज्य में टीकाकरण अभियान में प्रमुख भूमिका निभाई और महामारी से राहत दिलाने में मदद की।

सुसंगति

उच्च

भारत सरकार ने राज्य सरकार के साथ मिलकर पहल की है और कॉर्पोरेट समर्थन भी मांगा है। इस प्रकार यह पहल सरकार की कोविड रोकथाम गतिविधि के साथ संरेखित है, इसलिए इसे अत्यधिक सुसंगत माना जाता है।

स्थिरता

उच्च

डीप फ्रीजर और आईएलआर की शेल्फ लाइफ 10 साल है और वॉक इन कूलर की शेल्फ लाइफ 25 साल है। उपकरण को बहुत कम रखरखाव की आवश्यकता होती है और यह संबंधित चिकित्सा सुविधा के लिए उपयोग के लिए एक परिसंपत्ति है। इसलिए यह पहल अत्यधिक टिकाऊ है।

समग्र मूल्यांकन

यह पहल अत्यधिक सफल रही और पूरे राज्य में टीकाकरण अभियान के दौरान कोल्ड चेन उपकरणों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

केस स्टडी

कोविड की दूसरी लहर टियर-2 और टियर-3 शहरों में जानलेवा साबित हुई। ज्वालापुर के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र को कोविड वैक्सीन टीकाकरण केंद्र नामित किया गया था। अस्पताल की सुश्री रुचि मोहन (सहायक नर्स और दाई) ने एसआर एशिया टीम को बताया कि केंद्र के पास टीकों के भंडारण की सीमित सुविधा है। केंद्र ने सीमा बताते हुए एक अनुरोध भेजा था। इसके बाद कोविड वैक्सीन के भंडारण के लिए गोदरेज आइस लाइन रेफ्रिजरेटर प्रदान किया गया। केंद्र को सेवा-टीएचडीसी के माध्यम से आइस लाइन रेफ्रिजरेटर भेजे गए। केंद्र को राज्य कोल्ड चेन से दो (02) गोदरेज आईएलआर प्राप्त हुए। इसके बाद केंद्र परिसर में टीकाकरण शिविर आयोजित करने में सक्षम हुआ।





चित्र 3.14 : श्रीनगर के बेस अस्पताल में वॉक-इन कूलर



चित्र 3.15 : सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, ज्वालापुर, हरिद्वार में आई.एल.आर.



चित्र 3.16 : डूम मेडिकल कॉलेज, देहरादून में आईएलआर

3.4 पोषण पहल

सेवा-टीएचडीसी ने कोटेश्वर, जिला: टिहरी गढ़वाल के विभिन्न गांवों में कोविड महामारी के दौरान भोजन के पैकेट/राशन सामग्री का वितरण भी शुरू किया था।

3.4.1 परियोजना 7

कोटेश्वर, टिहरी, जिला: टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड के विभिन्न गांवों में 'लॉक-डाउन' (कोविड-19 से सुरक्षा के लिए सरकार द्वारा लगाया गया) के कारण प्रभावित 1082 किसानों को खाद्य सामग्री का वितरण



चित्र 3.17 : गांव सैन, कोटेश्वर एचईपी के लाभार्थी

सीएसआर परियोजना 7	कोटेश्वर, टिहरी के विभिन्न गांवों में 'लॉक डाउन' (कोविड-19 से बचाव के लिए सरकार द्वारा लगाया गया) के कारण प्रभावित 1082 किसानों को खाद्य सामग्री का वितरण
लाभार्थियों	कोटेश्वर के विभिन्न गांवों में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग, विधवाएं
स्थान	कोटेश्वर, टिहरी गढ़वाल के विभिन्न गांव
परियोजना लागत	रुपये 6.60 लाख
क्रियान्वयन एजेंसी	सेवा-टीएचडीसी
परियोजना उद्देश्य	लॉकडाउन के दौरान समाज के कमजोर वर्गों को भोजन उपलब्ध कराना

सतत विकास लक्ष्य के अनुरूप



परियोजना का संक्षिप्त विवरण

अपनी सीएसआर पहल के तहत कोटेश्वर, टिहरी गढ़वाल के 62 गांवों में कोविड-19 के प्रसार को रोकने के लिए 'लॉक-डाउन' से प्रभावित 1082 किसानों को खाद्य सामग्री वितरित की गई। महामारी के कारण पीएए के कमजोर वर्गों की मदद के लिए यह पहल की गई थी। प्रदान की गई खाद्य राहत में 5 किलो आटा, 3 किलो चावल, आधा लीटर सरसों का तेल, 100 ग्राम धनिया पाउडर, हल्दी, मिर्च पाउडर और जीरा के पैकेट और 1 किलो नमक शामिल थे। कोटेश्वर के विभिन्न गांवों में किसानों के बीच वितरित किए गए।

पहल का मूल्यांकन

प्रासंगिकता

उच्च

देशव्यापी लॉकडाउन की घोषणा के बाद, दिहाड़ी मजदूरी पर निर्भर लोग, मजदूर और किसान सबसे ज्यादा प्रभावित हुए। सेवा-टीएचडीसी ने कोटेश्वर के 62 गांवों में किसानों को भोजन के पैकेट और राशन उपलब्ध कराने की पहल की। यह पहल बेहद प्रासंगिक थी।

प्रभावशीलता

मध्यम

वितरित किए गए खाद्य पैकेट प्रत्येक परिवार के लिए दो सप्ताह तक चलने के लिए पर्याप्त थे। इस पहल को मध्यम प्रभावशीलता वाला माना जाता है क्योंकि इससे कुछ हद तक राहत मिली है।

क्षमता

मध्यम

कोटेश्वर के 65 गांवों में अनुसूचित जाति, पिछड़ा वर्ग, आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग और विधवाओं से संबंधित 1082 किसानों को राशन वितरित किया गया। इस प्रकार, इसे मध्यम दक्षता का आंका जा सकता है।

प्रभाव

मध्यम

खाद्य आपूर्ति तब उपलब्ध कराई गई जब खेत मजदूरों के पास आय का कोई स्रोत नहीं था। लाभार्थियों को सेवा-टीएचडीसी के माध्यम से प्राप्त खाद्य सामग्री महामारी के दौरान राहत मिली है। लॉकडाउन के 3-4 महीनों के दौरान एकमुश्त वितरण था, इसलिए इसका प्रभाव मध्यम श्रेणी में रखा जा सकता है।

सुसंगति

उच्च

इस पहल को महामारी के दौरान समाज के गरीब और कमजोर वर्गों को खाद्यान्न उपलब्ध कराने के लिए तैयार किया गया है। इसलिए इसमें उच्च सुसंगतता की सूचना दी गई है।

सुसंगति

उच्च

खाद्य वितरण एक बार की गतिविधि थी, यह पहल अपने दृष्टिकोण में टिकाऊ नहीं हो सकती।

समग्र मूल्यांकन

यह पहल कोटेश्वर के लोगों को मुश्किल समय में राहत पहुंचाने के लिए प्रासंगिक थी। यह पहल लॉकडाउन के दौरान अस्थायी राहत प्रदान करने में सफल रही।

निष्कर्ष

सेवा-टीएचडीसी द्वारा शुरू की गई स्वास्थ्य सेवा परियोजनाएँ प्रकृति और भूगोल में विविधतापूर्ण थीं। परियोजनाओं ने सुलभ और सस्ती स्वास्थ्य सेवा प्रदान करके, चिकित्सा बुनियादी ढांचे में सुधार करके और टीकाकरण अभियान के लिए कोल्ड चेन उपकरण प्रदान करके लाभार्थियों के जीवन पर प्रभाव डाला। मोबाइल डिस्पेंसरी जैसी परियोजनाओं का लाभार्थियों के जीवन पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा, लेकिन इसके संचालन की अवधि को देखते हुए स्थिरता कम थी। कोविड राहत के लिए चिकित्सा उपकरणों के प्रावधान और चिकित्सा बुनियादी ढांचे के विकास ने आशाजनक परिणाम दिखाए हैं। कोल्ड चेन उपकरण प्रदान करने की पहल से उत्तराखंड के लोगों को लाभ हुआ और परियोजनाओं की कुल मिलाकर सफलता दर बहुत अधिक रही। परियोजना की एकमुश्त नेचर को देखते हुए, खाद्य सामग्री का वितरण लोगों को अस्थायी राहत प्रदान करता है। स्वास्थ्य सेवा पहल अच्छी तरह से विविधतापूर्ण हैं और परियोजना क्षेत्रों में रहने वाले परियोजना-प्रभावित परिवारों के लिए फायदेमंद हैं।

अध्याय 4: टीएचडीसी जागृति के अंतर्गत

शिक्षा पहल

शिक्षा प्रत्येक नागरिक का मौलिक अधिकार है, जिसे भारत सरकार ने संविधान के अनुच्छेद 21 ए के तहत प्रदान किया है। किसी देश के भविष्य को आकार देने में शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। टीएचडीसीआईएल 1992 से अपने कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के तहत स्कूल चला रहा है, जिसमें आस-पास के गांवों और परियोजना के प्रभावित क्षेत्र के बच्चों को अच्छी शिक्षा प्रदान करने की जिम्मेदारी है। टीएचडीसी एजुकेशन सोसाइटी ने अपनी सीएसआर पहल के तहत युवाओं के बीच शिक्षा के महत्व की पहचान की थी और दो प्रकार की पहलों को लागू किया था; गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना और परियोजना से जुड़े क्षेत्रों में निर्माण, पुनर्निर्माण और मरम्मत पहलों में वित्तीय सहायता प्रदान करना है। इन पहलों का उद्देश्य छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के साथ-साथ पढ़ाई के लिए सक्षम वातावरण बनाना है। वित्त वर्ष 2020-21 में, टीएचडीसी एजुकेशन सोसाइटी और सेवा-टीएचडीसी ने जागृति थीम के तहत पांच पहल की हैं। इन पहलों की चर्चा नीचे तालिका संख्या 4.1 में की गई है।

तालिका 4.1: टीएचडीसी जागृति के अंतर्गत सीएसआर पहलों की सूची

क्र.सं.	परियोजना का नाम	गतिविधि	स्थान	समय अवधि	लागत (लाख में)
गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना					
1	टीएचडीसी शिक्षा समिति के माध्यम से परियोजना प्रभावित एवं व्यावसायिक क्षेत्र के परिवारों के लिए एक हाईस्कूल एवं एक इंटर कॉलेज का संचालन।	स्कूल का संचालन और प्रबंधन करना	ऋषिकेश और टिहरी गढ़वाल	2020-21	405
2	जे.एच. स्कूल का संचालन	निःशुल्क शैक्षणिक शिक्षा के लिए स्कूल को वित्तीय सहायता	कोटेश्वर, जिला टिहरी गढ़वाल	2020-21	31.73
स्कूल में निर्माण, पुनर्निर्माण और मरम्मत					
3.	राजकीय इंटर कॉलेज में प्रयोगशाला का निर्माण	मुख्य विकास अधिकारी, जिला हरिद्वार के माध्यम से प्रयोगशाला निर्माण	पथरी जिला हरिद्वार	2020-21	21.17
4.	सरकारी मिडिल स्कूल की मरम्मत और रखरखाव	उत्तर प्रदेश राजकीय निर्माण निगम के माध्यम से कार्य करें	सुनारगांव (अठुरवाला), जिला देहरादून	2020-21	9.19
5.	राजकीय इंटर कॉलेज की क्षतिग्रस्त छत का पुनः निर्माण एवं मरम्मत कार्य।	पीडब्ल्यूडी, कीर्तिनगर के माध्यम से कार्य	खोला कड़ा कोट, ब्लॉक कीर्तिनगर जिला। पौड़ी गढ़वाल	2020-21	9.19

4.1 गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने की अपनी पहल में टीएचडीसी, ऋषिकेश और टिहरी में दो स्कूलों के संचालन का सपोर्ट्स करता है और कोटेश्वर में एक जूनियर हाई स्कूल को वित्तीय सहायता प्रदान करता है। निम्नलिखित अनुभाग वित्त वर्ष 2020-21 में टीएचडीसी एजुकेशन सोसाइटी द्वारा कार्यान्वित शैक्षिक पहलों पर चर्चा करता है, जिसका उद्देश्य परियोजना प्रभावित और व्यावसायिक क्षेत्र के परिवारों के बच्चों को सस्ती और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है। ऋषिकेश, टिहरी और कोटेश्वर में तीनों स्कूलों को सेवा-टीएचडीसी की प्रबंधन समिति के माध्यम से समर्थन दिया गया था, जिनकी चर्चा नीचे की गई है।

4.1.1 परियोजना 1

ऋषिकेश में टीएचडीसी शिक्षा सोसाइटी के माध्यम से परियोजना प्रभावित और व्यावसायिक क्षेत्र के परिवारों के लिए एक हाई स्कूल और एक इंटर कॉलेज का संचालन



चित्र 4.2 : टीएचडीसी टी.बी.पी. इंटरमीडिएट कॉलेज, टिहरी

चित्र 4.1 : टीएचडीसी हाई स्कूल, ऋषिकेश के प्रधानाचार्य और उपाध्यक्ष के साथ मूल्यांकन दल

सीएसआर परियोजना 1	परियोजना प्रभावित और व्यावसायिक क्षेत्रों के परिवारों के लिए टीएचडीसी एजुकेशन सोसाइटी के माध्यम से एक हाई स्कूल और एक इंटर कॉलेज का संचालन
लाभार्थी	परियोजना प्रभावित क्षेत्र और आस-पास के क्षेत्रों में रहने वाले परिवारों के छात्र।
स्थान	ऋषिकेश और टिहरी गढ़वाल
परियोजना लागत	प्रति वर्ष 4.05 करोड़ रुपये।
क्रियान्वयन एजेंसी	टीएचडीसी एजुकेशन सोसाइटी
परियोजना उद्देश्य	परियोजना से जुड़े लोगों और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को अच्छी गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करना।

सतत विकास लक्ष्य के अनुरूप



परियोजना के बारे में

टीएचडीसी टी.बी.पी. इंटरमीडिएट कॉलेज का निर्माण सिंचाई विभाग द्वारा टिहरी बांध पुनर्वास परियोजना के तहत श्रमिकों, मजदूरों और अधिकारियों के बच्चों की शिक्षा के लिए किया गया था, क्योंकि आस-पास के क्षेत्र में कोई स्कूल नहीं था। इसके बाद स्कूल को टीएचडीसी एजुकेशन सोसाइटी (टीईएस) को सौंप दिया गया।

टीएचडीसी एजुकेशन सोसाइटी (टीईएस) स्कूल के खर्च, शिक्षकों और कर्मचारियों के वेतन का खर्च उठाती है और परियोजना से जुड़े परिवारों और स्थानीय लोगों के बच्चों को मामूली शुल्क पर शिक्षा प्रदान करती है।

पहल का मूल्यांकन

प्रासंगिकता

उच्च

दोनों स्कूलों को पूरी तरह से वित्तीय सहायता दी जाती है, जिससे पीएए और आस-पास के परिवारों के बच्चों को मुफ्त शिक्षा मिल पाती है। इन प्रयासों ने स्कूल परिसर को बनाए रखने और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में योगदान दिया है। इस प्रकार यह योगदान अत्यधिक प्रासंगिक हो गया है।

प्रभावशीलता

उच्च

स्कूल परियोजना प्रभावित क्षेत्रों में गांवों के पास के छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना सुनिश्चित करते हैं। स्कूल रिकॉर्ड के अनुसार, वर्तमान शैक्षणिक वर्ष में लगभग 630 छात्र (जूनियर हाई स्कूल, ऋषिकेश में 390 और टीएचडीसी टीबीपी इंटरमीडिएट कॉलेज में 240) नामांकित हैं। मूल्यांकन दल ने स्कूल के समय में परिसर का दौरा किया और भाषाओं में दक्षता का परीक्षण किया। अवलोकनों को तालिका संख्या 4.2 में संक्षेपित किया गया है। टीएचडीसी की शिक्षा पहल की प्रभावशीलता को टीम द्वारा उच्च दर्जा दिया गया।

तालिका 4.2 : स्कूल का मूल्यांकन

बोर्ड परिणाम	10वीं	12वीं
टीएचडीसी हाईस्कूल	76%	लागू नहीं
इंटरमिडिएट कालेज, टिहरी	100%	100%
भाषा प्रवीणता	पढ़ना और बोलना	विश्वास
टीएचडीसी हाईस्कूल	100%	92.3%
इंटरमिडिएट कालेज, टिहरी	100%	95%
शिक्षकों की पर्याप्तता	शिक्षक: छात्र रेटिंग	टिप्पणी
टीएचडीसी हाईस्कूल	1:24	पर्याप्त
इंटरमिडिएट कालेज, टिहरी	2:37	कम
सुविधाएँ		
पीटीएम	मासिक पीटीएम	
कक्षा	अच्छी तरह से सुसज्जित और हवादार	
स्वच्छता	साफ-सुथरा परिसर, शौचालय में सैनिटरी नैपकिन वितरण मशीन और डस्टबिन, बहता पानी और पीने का पानी	
कैरियर परामर्श	पढ़ाई और करियर जारी रखने के लिए	

मूल्यांकन टीम द्वारा पाया गया कि अच्छी तरह से सुसज्जित कक्षाएँ और प्रयोगशालाएँ, प्रशासनिक कार्यालय, खेल का मैदान जैसी बुनियादी संरचना का पूरी क्षमता से उपयोग किया जा रहा था। छात्रों को उनकी व्यावहारिक कक्षाओं के दौरान प्रयोगशाला में पढ़ाया जाता था; कक्षाएँ पूरी क्षमता से चलाई जा रही थीं; हर कक्षा में शिक्षक मौजूद थे; और स्कूल के संसाधनों का अच्छी तरह से उपयोग और रखरखाव किया जा रहा था, इसलिए यह पहल अत्यधिक कुशल है।

इस हस्तक्षेप के परिणामस्वरूप लाभार्थी परिवारों का वित्तीय बोझ कम हुआ, जिससे स्कूल छोड़ने वालों की संख्या में कमी आई और पीएन में निरंतर शिक्षा सुनिश्चित हुई। उच्च शिक्षा के बारे में छात्रों को परामर्श देने जैसी पहल सफल रही, स्कूल के आंकड़ों के अनुसार 95% छात्र हाई स्कूल पूरा करते हैं और आगे उच्च शिक्षा का विकल्प चुनते हैं, जिससे उनके सुधार में योगदान मिलता है।

यह स्कूल आर्थिक रूप से हाशिए पर पड़े परिवारों के बच्चों को मुफ्त और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करता है, जो आरटीई अधिनियम और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के एसडीजी लक्ष्य: 4 का अनुपालन करता है, जिससे यह अत्यधिक सुसंगत हो जाता है।

यह पहल कमज़ोर सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि वाले छात्रों को सस्ती शिक्षा प्रदान करने के घोषित उद्देश्य को पूरा करती है। स्कूल छात्रों से नाममात्र शुल्क लेता है, जिससे छात्रों और उनके परिवारों में स्कूल के प्रति समावेशिता विकसित होती है। यह पहल अपने दृष्टिकोण में अत्यधिक टिकाऊ है।

समग्र मूल्यांकन

स्कूल गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ-साथ पढ़ाई के लिए अनुकूल माहौल भी प्रदान कर रहे हैं। इमारत का बुनियादी ढांचा अच्छा है, लेकिन कुछ शौचालयों को रखरखाव की आवश्यकता है। स्कूल का समग्र मानक उच्च है और क्षेत्र में उपलब्ध निजी स्कूलों के बराबर है।

सुझाव

शिक्षण और सीखने के तरीकों को बेहतर बनाने के लिए, सभी स्कूलों में स्मार्ट कक्षाएं चलाने के लिए आवश्यक ढांचा तैयार किया जा सकता है।

केस स्टडी

तकनीक से जुड़ना

कोविड-19 के समय "लॉकडाउन" के दौरान, जब सभी स्कूल छात्रों से जुड़ने में असमर्थ थे, ऋषिकेश में टीएचडीसी हाई स्कूल वर्चुअल मोड में छात्रों से जुड़ने वाले पहले स्कूलों में से एक बन गया। लॉकडाउन के ठीक बाद स्कूल के प्रिंसिपल ने छात्रों की उपलब्धता की जाँच करने के लिए सभी छात्रों को एक व्हाट्सएप ग्रुप में जोड़ा। पाया गया कि केवल 68% छात्रों के पास अपने घरों में कम से कम एक स्मार्ट डिवाइस है। पहले दौर के बाद छात्रों को अपने पड़ोसियों या आस-पास के छात्रों से जुड़ने के लिए कहा गया। दूसरे कनेक्शन दौर के बाद 76% छात्र ऑनलाइन मोड में उपलब्ध थे। कुछ समय और कुछ ढीले कोविड प्रतिबंधों के बाद कुछ शिक्षकों ने छात्रों को अपने पुराने मोबाइल दिए, और छात्रों के अध्ययन समूह बनाए गए, जिससे 98% छात्रों को ऑनलाइन मोड में जुड़ने में मदद मिली। शेष छात्रों को नोट्स की हार्ड कॉपी प्रदान की गई। कक्षाएं व्हाट्सएप के माध्यम से ली गईं। जो शिक्षण का सबसे प्रभावी आभासी तरीका पाया गया और इस प्रकार महामारी का मुकाबला आभासी तरीके से किया गया।

केस स्टडी-2

अब नहीं रुकना

सुश्री अनीता निषाद विद्यालय की होनहार छात्रा रही हैं। शुरू से ही वह अपनी कक्षा में प्रथम आती रहीं। उनके पिता का निधन बचपन में ही हो गया था। अनीता अपनी मौसी के साथ गुमानीवाला, ऋषिकेश में रह रही हैं। वर्तमान में वह कक्षा 11 के लिए सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज आवास विकास ऋषिकेश में नामांकित हैं। अनीता ने वर्ष 2020-21 में टीएचडीसी हाईस्कूल प्रगतिपुरम, ऋषिकेश से 90.2% अंकों के साथ 10वीं की परीक्षा उत्तीर्ण की। उत्तराखंड सरकार ने उन्हें विशेष प्रशस्ति पत्र और स्वर्णीय कमला नेहरू पुरस्कार प्रदान किया, जिसे टीईएस सचिव श्री ए.के. विश्वकर्मा और प्रधानाचार्य श्री पी.एस. सैनी ने संयुक्त रूप से प्रदान किया और 1000 रुपये का चेक देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर सभी शिक्षक मौजूद रहे। और विद्यालय प्रशासन को अनीता के इस असाधारण प्रदर्शन पर गर्व है।



4.1.2 परियोजना 2

कोटेश्वर, टिहरी में जे.एच. स्कूल का संचालन

सीएसआर परियोजना 2	स्वामी ओमकारानंद सरस्वती जूनियर हाई स्कूल
लाभार्थी	परियोजना क्षेत्र में और उसके आसपास के निम्न आय वाले परिवारों, दिहाड़ी मजदूरों और अन्य अनौपचारिक व्यवसायों से जुड़े बच्चे।
स्थान	कोटेश्वरपुरम, जिला: टिहरी गढ़वाल
परियोजना लागत	31.73 लाख रुपये
कार्यान्वयन एजेंसी	स्वामी ओमकारानंद सरस्वती पब्लिक स्कूल समिति, कोटेश्वरपुरम टिहरी गढ़वाल
परियोजना का उद्देश्य	केएचडीपी के परियोजना प्रभावित परिवारों के बच्चों को अच्छी गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करना

सतत विकास लक्ष्य के अनुरूप



परियोजना के बारे में

टीएचडीसीआईएल अपने सीएसआर हस्तक्षेप के एक हिस्से के रूप में 2014 से निजी संस्थानों की मदद से कोटेश्वर परियोजना स्थल पर स्वामी ओंकारानंद सरस्वती जूनियर हाई स्कूल, कोटेश्वरपुरम, जिला: टिहरी गढ़वाल को सहायता प्रदान कर रहा है। ओंकारानंद स्कूल की स्थापना 25 जून, 2014 को हुई थी। यह सह-शिक्षा संस्थान कोटेश्वर परियोजना से प्रभावित समुदायों के छात्रों को रचनात्मक शिक्षा प्रदान करता है। 2014 में इस संस्थान में 78 छात्र नामांकित थे; वर्तमान में 239 छात्र हैं। अधिकांश बच्चे बेहद कम आय वाले परिवारों से आते हैं, जिनके माता-पिता दिहाड़ी मजदूर और अन्य अनौपचारिक व्यवसायों में काम करते हैं। छात्रों को ट्यूशन फीस का भुगतान करने की आवश्यकता नहीं है (सीआईएसएफ बच्चों से केवल 70 रुपये की मामूली राशि ली गई) छात्रों को मुफ्त पाठ्यपुस्तकें, कपड़े और जूते, साथ ही अन्य शिक्षण सामग्री प्रदान की जाती है। टीएचडीसी ने बुनियादी ढांचा स्थापित किया और स्कूल के संचालन को पूरी तरह से प्रायोजित किया।

पहल का मूल्यांकन

प्रासंगिकता

उच्च

स्कूल को वित्तीय सहायता दी जाती है, जिससे पीएए और आस-पास के परिवारों के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा प्राप्त करने में सहायता मिलती है। स्कूल को सहायता देने और लाभार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के प्रयासों ने इस योगदान को अत्यधिक प्रासंगिक बना दिया है।

प्रभावशीलता

उच्च

स्कूल ने लाभार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने की दिशा में कई पहल की हैं। प्रयासों का सारांश तालिका संख्या 4.3 में दिया गया है। जांच द्वारा प्रयासों का अवलोकन और मूल्यांकन किया गया तथा प्रभावशीलता के मामले में इसे उच्च दर्जा दिया गया।

क्षमता

उच्च

छात्रों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जाती है। मूल्यांकन दल ने छात्रों की भाषा दक्षता और आत्मविश्वास का परीक्षण किया। शिक्षा की गुणवत्ता का आकलन इस तथ्य से किया जा सकता है कि हर साल 3-4 छात्रों का चयन राज्य के भीतर और बाहर विभिन्न नवोदय विद्यालयों में आगे की शिक्षा के लिए किया जाता है। (तालिका संख्या 4.2 देखें)। मूल्यांकन दल के साथ बातचीत करते समय बच्चों ने आत्मविश्वास दिखाया और अपनी पाठ्यपुस्तकों को स्पष्ट रूप से समझ पाए।

सुसंगति

उच्च

यह पहल भारत सरकार के सर्व शिक्षा अभियान और सतत विकास लक्ष्य 4 के अनुरूप है, तथा इसे अत्यधिक सुसंगत माना गया है।

स्थिरता

कम

यह पहल अत्यधिक प्रभावशाली है और सस्ती तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में सफल है। चूंकि स्कूल सेवा-टीएचडीसी की वित्तीय सहायता से संचालित होता है, इसलिए स्कूल के लिए स्वतंत्र रूप से संचालन करना चुनौती है, जिसके कारण इसकी स्थिरता में गिरावट आई है।

तालिका 4.3 : स्कूल का मूल्यांकन

दक्षता एवं प्रवीणता	पढ़ना और बोलना	विश्वास
ओंकारानंद जे.एच स्कूल	88.23% 90%	
सुविधाएं		
नामांकन	2014 में 78 से बढ़कर 2022 में 239 हो जाएगा	
पीटीएम	मासिक पीटीएम	
कक्षाएं	अच्छी तरह से सुसज्जित और हवादार	
ब्रिज कोर्स	धीमी गति से सीखने वाले और विशेष रूप से सक्षम छात्रों के लिए (01 मूक-बधिर छात्र)	
ईसीए	समग्र विकास के लिए पाठ्येतर गतिविधियाँ और खेल	
वाहन	क्यारी से कोटेश्वरपुरम तक सेवा-टीएचडीसी के माध्यम से दो हल्के वाहन (टैक्सी) उपलब्ध कराए जाते हैं तथा दूसरा मार्ग जखोली से कोटेश्वरपुरम तक है।	
स्वच्छता	साफ-सुथरे परिसर, शौचालय में सेनेटरी नैपकिन डिस्पेंसिंग मशीन और डस्टबिन, कूड़ेदान, बहता पानी और पीने का पानी।	
शिक्षकों की पर्याप्तता	शिक्षक:छात्र अनुपात	टिप्पणी
	22:1	पर्याप्त
कैरियर परामर्श	आगे की पढ़ाई और कैरियर के लिए	

समग्र मूल्यांकन

स्कूल छात्रों को निःशुल्क गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और सीखने का बुनियादी ढांचा प्रदान कर रहा है। स्कूल में सुविधाएँ अच्छी स्थिति में हैं, और स्कूल के शिक्षकों और छात्रों के संयुक्त प्रयासों को स्कूल परिसर में विभिन्न सुविधाओं के रखरखाव और उपयोग में भी देखा जा सकता है। स्कूल का समग्र मानक उच्च है और निजी स्कूलों के बराबर है।

अतिरिक्त कदम उठाते हुए

अमन स्वामी ओमकारानंद सरस्वती स्कूल में कक्षा 2 का छात्र है। उसे 2020-21 में स्कूल में दाखिला मिला था। उसके पिता प्लंबर हैं और वह स्कूल में ही काम करते हैं। अमन जन्म से ही बहरा और गंगा है और स्कूल में आने के बाद उसे शिक्षकों से संवाद करने और काम को समझने में कठिनाई हुई। उसके शामिल होने के शुरुआती समय में शिक्षक ऑनलाइन कक्षाएं ले रहे थे और उसकी मदद करने में असमर्थ थे। लेकिन जैसे ही स्कूल फिर से खुला शिक्षकों ने अमन से संवाद करने का पूरा प्रयास किया। स्कूल खुलने के पहले तीन महीनों के भीतर सभी शिक्षक सांकेतिक भाषा की कुछ बुनियादी बातें सीखने में सक्षम हो गए और अपनी क्षमता के अनुसार उसका मार्गदर्शन करने लगे। अमन ने खुद शिक्षकों को समझने का प्रयास किया और साल के अंत तक वह शिक्षकों को समझने में सक्षम हो गया और इसके विपरीत,



सभी के प्रयासों से अमन अपनी कक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहा है, और मूल्यांकन टीम के साथ बातचीत के दौरान, अमन के पिता ने बताया कि ओमकारानंद शिक्षकों का समर्पण छात्रों और उनके स्कूल के लिए उनके मूल्य को दर्शाता है, जो जबरदस्त है। वह अपने बेटे के लिए ऐसे महान शिक्षकों को पाकर बहुत आभारी हैं।

वादा निभाया

श्री पी.एस. मथुरिया सेवानिवृत्त उप शिक्षा अधिकारी हैं। वर्तमान में वे विद्यालय के प्रधानाचार्य के पद पर कार्यरत हैं। मूल्यांकन दल के दौरे के दौरान उन्होंने बताया कि 2016-17 में आस-पास के इलाकों के अभिभावक विद्यार्थियों को विद्यालय भेजने के पक्ष में नहीं थे।

स्कूल में सभी सुविधाएं उपलब्ध होने के बावजूद भी छात्र नामांकन में वृद्धि नहीं हो रही थी। तब श्री मथुरिया ने खुद ही यह बीड़ा उठाया और आस-पास के हर गांव में जाकर छात्रों और अभिभावकों को शिक्षा के प्रति प्रेरित किया। उनके अभियान के शुरुआती दिनों में लोगों की रुचि नहीं थी। हालांकि जब क्षेत्र के किसी व्यक्ति ने स्कूल में दाखिला लिया, तो वे स्कूल की सुविधाओं और टीएलएम से संतुष्ट हो गए। शिक्षकों के प्रयासों से स्कूल के छात्र नवोदय प्रवेश परीक्षा जैसी विभिन्न परीक्षाओं में भी सफल होने लगे, जिससे छात्रों को स्कूल में दाखिला लेने के लिए और अधिक प्रेरणा मिली। वर्तमान में स्कूल में 239 छात्र हैं और प्रिंसिपल ने बताया कि छात्र प्रवेश के लिए खुद ही आवेदन करने में रुचि रखते हैं। श्री मथुरिया ने बताया कि उन्होंने अपने पिता से वादा किया था कि वह अपनी क्षमता के अनुसार सभी को सर्वोत्तम शिक्षा प्रदान करेंगे और हम केवल इतना कह सकते हैं कि उन्होंने अपना वादा बखूबी निभाया है।



4.2 स्कूल में निर्माण, पुनर्निर्माण और मरम्मत की पहल

इस विषय में वित्त वर्ष 2020-21 के दौरान क्रियान्वित सीएसआर पहलों पर चर्चा की गई है, जिसका उद्देश्य स्कूल के भौतिक बुनियादी ढांचे में सुधार करना और शिक्षा के लिए सक्षम वातावरण बनाना है। ये पहल हरिद्वार, देहरादून और कीर्तिनगर, पौड़ी गढ़वाल में क्रियान्वित की गई। इन पहलों पर नीचे विस्तार से चर्चा की गई है।

4.2.1 परियोजना 3

राजकीय इंटर कॉलेज में प्रयोगशाला का निर्माण



चित्र 4.5 : कक्षा 10 के छात्रों के साथ एसआर एशिया टीम



चित्र 4.6 : भवन की पहली मंजिल पर निर्मित प्रयोगशाला

सीएसआर परियोजना	राजकीय इंटर कॉलेज में प्रयोगशाला का निर्माण
लाभार्थी	पड़ोस के छात्र
स्थान	पथरी, जिला: हरिद्वार
परियोजना लागत	21.17 लाख रुपये
कार्यान्वयन एजेंसी	लोक निर्माण विभाग
परियोजना का उद्देश्य	युवा मन में जिज्ञासा, रचनात्मकता और कल्पना को बढ़ावा देने के लिए स्कूल के बुनियादी ढांचे और सीखने के माहौल में विस्तार।

एसडीजी के अनुरूप



परियोजना के बारे में

जीआईसी, पथरी, हरिद्वार पिछले कुछ वर्षों से विद्यालय परिसर में एक अस्थायी प्रयोगशाला में प्रायोगिक कक्षाएं संचालित कर रहा था। विद्यालय को छात्रों के लिए प्रयोगशाला स्थल की आवश्यकता थी। इसके लिए वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए टीएचडीसी से अनुरोध किया गया था। टीएचडीसी ने प्रयोगशाला के निर्माण में योगदान दिया। प्रयोगशाला का निर्माण प्रयोगों के लिए किया गया था, साथ ही स्लैब और उचित जल निकासी व्यवस्था की सुविधा, सिस्टम की सफाई और रखरखाव की सुविधा और प्रायोगिक उपकरण और उपभोग्य सामग्रियों को संग्रहीत करने के लिए एक स्टोर रूम भी बनाया गया था। प्रयोगशाला सहायक के लिए एक कार्यालय स्थान भी बनाया गया था।

प्रासंगिकता

उच्च

यह पहल अत्यधिक प्रासंगिक थी क्योंकि यह प्रभावी शिक्षण के लिए एक इंटर कॉलेज के लिए एक अनिवार्य आवश्यकता थी।

प्रभावशीलता

उच्च

प्रयोगशाला एक हाई स्कूल-मानक की समग्र प्रयोगशाला है जिसमें लगभग 50 छात्रों को समायोजित करने के लिए एक कमरा है, साथ ही प्रयोगशाला उपकरणों को संग्रहीत करने के लिए एक भंडारण कक्ष भी है। प्रयोगशाला में अब कंक्रीट स्लैब, उचित नालियाँ और सिंक हैं। प्रयोगशाला व्यावहारिक कक्षाओं को संचालित करने के लिए एकदम सही स्थिति में है, साथ ही प्रयोगशाला उपकरणों को रखने के लिए एक अलग स्टोर रूम भी है।

क्षमता

कम

जैसा कि टीम ने देखा है कि प्रयोगशाला का कुशलतापूर्वक उपयोग नहीं किया जा रहा है। अब इसे अस्थायी कक्षा के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है। टीम ने इस पहल को कम दक्षता वाला बताया है।

प्रभाव

कम

छात्रों के पास प्रैक्टिकल असाइनमेंट करने के लिए एक प्रयोगशाला है। प्रयोगशाला इतनी बड़ी है कि इसमें एक समय में लगभग 50 छात्र बैठ सकते हैं और यह स्कूल के बुनियादी ढांचे के लिए एक बड़ी संपत्ति रही है। लेकिन चूंकि छात्र अभी भी इसके लिए संघर्ष कर रहे हैं, इसलिए टीम का सुझाव है कि इस पहल का प्रभाव कम है।

सुसंगति

उच्च

टीएचडीसी द्वारा लैब के निर्माण के लिए शुरू की गई परियोजना का उद्देश्य युवा मन में जिज्ञासा, रचनात्मकता और कल्पनाशीलता को बढ़ावा देना है और इस प्रकार गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना है। इस पहल को सुसंगतता के आधार पर उच्च दर्जा दिया जा सकता है।

स्थिरता

उच्च

सेवा-टीएचडीसी ने प्रयोगशाला का प्रबंधन विद्यालय प्रबंधन समिति को सौंप दिया है। अब विद्यालय इसका उचित उपयोग प्रयोगों और व्यावहारिक प्रदर्शनों के लिए कर सकता है, इसलिए प्रयोगशाला के उन्नयन और इसके पूर्ण उपयोग की पूरी जिम्मेदारी विद्यालय की है।

समग्र मूल्यांकन

इस परियोजना के साथ, स्कूल में एक आवश्यक बुनियादी ढांचा जोड़ा गया है; छात्रों के पास अब एक समर्पित एकीकृत प्रयोगशाला या प्रायोगिक कक्ष है, जिसमें प्रयोगशाला उपकरणों को संग्रहीत करने के लिए एक अतिरिक्त कमरा है। एक बार जब प्रयोगशाला का पूरा उपयोग किया जाएगा तो योगदान एक मूल्यवान परिसंपत्ति होगी।

4.2.2 परियोजना 4

राजकीय माध्यमिक विद्यालय, सुनारगांव (अठुरवाला), देहरादून की मरम्मत एवं रखरखाव



चित्र 4.7 : स्कूल में निर्मित शौचालय



चित्र 4.8 : स्कूल में लगाई गई कृत्रिम छत

सीएसआर परियोजना 4	राजकीय माध्यमिक विद्यालय, सुनारगांव (अठुरवाला), देहरादून की मरम्मत और रखरखाव
लाभार्थी	पड़ोस के छात्र
स्थान	सुनारगांव (अठुरवाला), जिला: देहरादून
परियोजना लागत	9.19 लाख रुपये
कार्यान्वयन एजेंसी	उत्तर प्रदेश राजकीय निर्माण निगम
परियोजना का उद्देश्य	बेहतर शिक्षण वातावरण के लिए स्कूल में निर्माण और मरम्मत कार्य

एसडीजी के अनुरूप



परियोजना का संक्षिप्त विवरण

सेवा-टीएचडीसी को राजकीय माध्यमिक विद्यालय, सुनारगांव (अठुरवाला), देहरादून के प्रधानाचार्य से विद्यालय के बुनियादी ढांचे की मरम्मत और रखरखाव के लिए अनुरोध प्राप्त हुआ। सेवा-टीएचडीसी द्वारा रखरखाव कार्य की समीक्षा करने और सुझाव देने के लिए एक डिजाइन टीम भेजी गई थी। रखरखाव कार्य का विवरण और स्थिति तालिका संख्या 4.4 में दी गई है।

तालिका 4.4: स्कूल में रखरखाव का काम

क्रमांक	विवरण	स्थिति
1	प्री कोटेड जीआई शीट द्वारा फॉल्स सीलिंग के साथ छत का निर्माण।	पूर्ण
2	दीवार और फर्श की मरम्मत	पूर्ण
3	शौचालय का निर्माण	पूर्ण
4	इमारत पर एपेक्स पेंट और दरवाजे और खिड़की की पेंटिंग।	पूर्ण
5	ईट की दीवार और लोहे के गेट सहित लोहे की ग्रिल के साथ बरामदे को बंद करना	पूर्ण
6	इमारत के चारों ओर पीसीसी एप्रोन।	पूर्ण
7	शौचालय के फर्श में टाइलिंग का काम	पूर्ण
8	बिजली की वायरिंग और एस/एफ फिक्सचर।	पूर्ण

पहल का मूल्यांकन

प्रासंगिकता

उच्च

स्कूल की इमारत की हालत बहुत खराब थी। मानसून के दौरान कक्षा की छत से बहुत ज्यादा पानी टपकता था, जिससे कक्षाएँ बाधित होती थीं और कक्षा के फर्नीचर को नुकसान पहुँचता था। शौचालय मानव उपयोग के लिए अनुपयुक्त थे। स्कूल प्रशासन ने सेवा-टीएचडीसी से सहायता मांगी। सेवा-टीएचडीसी के मदत के बाद स्कूल में बुनियादी ढाँचे की मरम्मत की गई है। मदत अत्यधिक प्रासंगिक है।

प्रभावशीलता

उच्च

मदत के बाद स्कूल पहले से ज्यादा सुरक्षित जगह बन गया है और स्कूल का माहौल भी बेहतर हुआ है। खराब बुनियादी ढाँचे के कारण होने वाली कई समस्याओं का समाधान हो गया है। छात्र अब शौचालय का इस्तेमाल कर रहे हैं, जो छात्रों में स्वच्छता और सफाई की अच्छी आदतें हैं। स्कूल के प्रधानाध्यापक और छात्रों ने उन समस्याओं पर चर्चा की जिनका सामना उन्हें पहले करना पड़ता था और इस पहल के लिए सेवा-टीएचडीसी के प्रति आभार व्यक्त किया। इस पहल को बेहद प्रभावी माना जा रहा है।

क्षमता

उच्च

सेवा-टीएचडीसी द्वारा की गई मदत, जो उत्तर प्रदेश राजकीय निर्माण निगम, एक प्रतिष्ठित उत्तर प्रदेश राज्य के स्वामित्व वाली निर्माण निगम द्वारा की गई, जो कि अत्यधिक कुशल साबित हुआ। कक्षाएँ सुचारू रूप से संचालित होती हैं, बंद बरामदे ने स्कूल को सुरक्षित बना दिया है। इस प्रकार इस परियोजना को अत्यधिक कुशल के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।

प्रभाव

उच्च

स्कूल की उन्नत सुविधाओं ने छात्र नामांकन में वृद्धि में योगदान दिया है। 2019-20 और 2020-21 के बीच, 34 छात्रों ने नामांकन किया, जो पिछली दर से 21 छात्रों से अधिक है, और एक नए शिक्षक की नियुक्ति की गई। मरम्मत और रखरखाव कार्य के परिणामस्वरूप स्कूल के लिए एक सुरक्षित और बेहतर वातावरण बन गया। इसलिए, प्रभाव बहुत अधिक है।

सुसंगति

उच्च

यह पहल भारत सरकार के सर्व शिक्षा अभियान के अनुरूप है और इसलिए इस परियोजना की सुसंगतता अधिक है।

स्थिरता

उच्च

कार्यान्वयन एजेंसी ने काम पूरा होने के बाद स्कूल को स्कूल प्रबंधन को सौंप दिया था। यह परियोजना अत्यधिक टिकाऊ है।

समग्र मूल्यांकन

स्कूल के बुनियादी ढाँचे में पूरी तरह से बदलाव आया है। अब स्कूल का माहौल पढ़ाई के लिए अनुकूल है और स्कूल के माहौल की गुणवत्ता में भी उल्लेखनीय सुधार हुआ है।

4.2.3 परियोजना 5

राजकीय इंटर कॉलेज खोला कड़ा कोट ब्लॉक कीर्तिनगर की क्षतिग्रस्त छत का पुनः निर्माण एवं मरम्मत कार्य



चित्र 4.9 : टिन की छत का निर्माण



चित्र 4.10 : स्कूल में लगाई गई कृत्रिम छत

सीएसआर परियोजना 5	राजकीय इंटर कॉलेज, कीर्तिनगर की क्षतिग्रस्त छत का पुनर्निर्माण और मरम्मत कार्य
लाभार्थी	विद्यालय में नामांकित आस-पास के क्षेत्रों के छात्र
स्थान	खोला कड़ा कोट ब्लॉक कीर्तिनगर, जिला: टिहरी गढ़वाल
परियोजना लागत	6.50 लाख रुपये
कार्यान्वयन एजेंसी	पीडब्ल्यूडी, कीर्तिनगर
परियोजना का उद्देश्य	बेहतर शिक्षण वातावरण के लिए विद्यालय में पुनर्निर्माण और मरम्मत कार्य

सतत विकास लक्ष्य के अनुरूप



परियोजना का संक्षिप्त विवरण

स्कूल की इमारत एक पुरानी संरचना में बनी थी। जिसे 1990 के दशक के मध्य में बनाया गया था और छत को सहारा देने के लिए लकड़ी के ब्लॉकों का इस्तेमाल किया गया था। वर्ष 2018 में स्कूल की इमारत में आग लग गई थी, जिसके कारण लकड़ी के खंभे और छत क्षतिग्रस्त हो गई थी। घटना के बाद स्कूल परिसर छात्रों और शिक्षकों के लिए अनुपयुक्त हो गया था, और छात्रों को पास के एक जो बंद हुए प्राथमिक विद्यालय में स्थानांतरित कर दिया गया था। जिसे पुनर्निर्माण और मरम्मत कार्य की आवश्यकता थी, जिसके लिए धन बकाया था लेकिन उपलब्ध नहीं कराया गया। ऐसे में स्कूल प्रबंधन समिति ने पुराने ढांचे के पुनर्निर्माण और मरम्मत में मदद के लिए सेवा-टीएचडीसी से संपर्क किया, जिसे मंजूरी मिल गई। अब निम्नलिखित संरचना का निर्माण किया गया है:

- स्कूल की छत को टिन शेड से पुनर्निर्मित किया गया।
- प्रबलित सीमेंट कंक्रीट की दीवारें बनाई गई हैं।
- फर्श को अब कंक्रीट सीमेंटिंग से मजबूत किया गया है

पहल का मूल्यांकन

प्रासंगिकता

उच्च

आग लगने के बाद स्कूल की इमारत नष्ट हो गई थी, इसलिए इमारत का पुनर्निर्माण आवश्यक था। इसलिए यह पहल अत्यधिक प्रासंगिक थी।

प्रभावशीलता

उच्च

टिन शेड की उचित मरम्मत और निर्माण हो जाने तथा कक्षाएं पुनः शुरू हो जाने के बाद वर्तमान सुविधा का प्रभावी ढंग से उपयोग किया जा सकेगा।

क्षमता

उच्च

नई बिल्डिंग में 9वीं से 12वीं तक की कक्षाएं संचालित की जा रही हैं। नए नामांकन शुरू हो गए हैं, नई बिल्डिंग के चालू होने के बाद करीब 57 नए छात्रों ने प्रवेश लिया है। इस परियोजना को दक्षता के मामले में उच्च दर्जा दिया गया है।

प्रभाव

उच्च

अब उसी परिसर में स्कूल भवन की मरम्मत और पुनर्निर्माण किया गया है और स्कूल संचालन बहाल होने और कक्षाएं शुरू होने से ग्रामीण खुश हैं। परिसर में 9वीं से 12वीं तक की कक्षाएं फिर से शुरू हो गई हैं। वर्तमान में कक्षा 9 से 12 तक के 57 छात्र कक्षाओं में नामांकित हैं। छात्रों को अब अपने स्कूल तक पहुँचने के लिए लंबी दूरी तय नहीं करनी पड़ती।

सुसंगति

उच्च

स्कूल के वातावरण की गुणवत्ता का आकलन शिक्षा का अधिकार अधिनियम और भारत सरकार के समग्र शिक्षा कार्यक्रम से किया जा सकता है, जिससे यह अत्यधिक सुसंगत हो जाता है।

स्थिरता

उच्च

कार्यान्वयन एजेंसी ने काम पूरा होने के बाद परियोजना को स्कूल प्रबंधन को सौंप दिया है। स्कूल प्रबंधन ने अब इमारत की मरम्मत और रखरखाव की जिम्मेदारी ले ली है।

समग्र मूल्यांकन

इस परियोजना के माध्यम से स्कूल के बुनियादी ढांचे में पूर्ण परिवर्तन आया है तथा स्कूल के वातावरण में भी पर्याप्त सुधार हुआ है।

वर्ष 2020-21 में सेवा-टीएचडीसी द्वारा कार्यान्वित सीएसआर परियोजना को दो मुख्य श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया था: (i) गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना और (ii) स्कूल में निर्माण, पुनर्निर्माण और मरम्मत पहल। परियोजनाएँ उत्तराखंड के ऋषिकेश, भागीरथीपुरम, अठूरवाला, कीर्तिनगर और हरिद्वार के विविध भौगोलिक क्षेत्रों में फैली हुई हैं, जो परियोजना से प्रभावित परिवारों और व्यावसायिक क्षेत्रों से संबंधित 1000 से अधिक छात्रों को लक्षित करती हैं।



चित्र 4.11: राजकीय माध्यमिक विद्यालय, अठूरवाला, देहरादून में कक्षा 7 के विद्यार्थी



चित्र 4.12 : टीएचडीसी हाई स्कूल, ऋषिकेश में कक्षा 5 के विद्यार्थी

अध्याय 5: टीएचडीसी दक्ष के अंतर्गत कौशल विकास और आजीविका सृजन पहल

कौशल विकास कंपनी अधिनियम 2013 के अनिवार्य सीएसआर प्रावधानों की धारा 135 में अनुसूची VII में उल्लिखित मुख्य क्षेत्रों में से एक है। इसके अलावा, इस अनुसूची द्वारा निर्धारित कई अन्य गतिविधियाँ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कौशल से संबंधित हैं। कौशल विकास को रोजगार सृजन और रोजगार वृद्धि और उत्पादकता को बढ़ावा देने के सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से एक माना जाता है। टीएचडीसी ने अपने सीएसआर नीति खंड टीएचडीसी दक्ष बाय सेवा-टीएचडीसी के तहत विभिन्न कौशल विकास पहलों को शामिल किया है। परियोजनाओं का विवरण नीचे दिया गया है।

तालिका 5.1: टीएचडीसी दक्ष के अंतर्गत सीएसआर पहलों की सूची

क्रमांक	परियोजना का नाम	गतिविधि	स्थान	समय (अवधि)	लागत (रु.में)
1.	मशरूम प्रशिक्षण एवं उत्पादन केन्द्र का विकास परियोजना	क्रियान्वयन हेतु सीबीईडी को वित्तीय सहायता	ब्लॉक थौलदार, टिहरी गढ़वाल	2020-21	8.79
2.	कौशल विकास के अंतर्गत 20 युवाओं को एनएसक्यूएफ स्तरीय कम्प्यूटर प्रशिक्षण	युवाओं को कंप्यूटर कौशल प्रदान करना और रोजगार के अवसर बढ़ाना	टिहरी गढ़वाल	2020-21	21.23
3.	उपली रमोली पट्टी में सतत आजीविका और संसाधन प्रबंधन	बेहतर आजीविका के अवसरों और प्राकृतिक संसाधनों में सुधार के लिए पहल को बढ़ावा देना	प्रतापनगर ब्लॉक, टिहरी गढ़वाल	2020-21	30.15

5.1 परियोजना 1

ब्लॉक थौलधार जिला: टिहरी गढ़वाल में मशरूम प्रशिक्षण एवं उत्पादन केंद्र

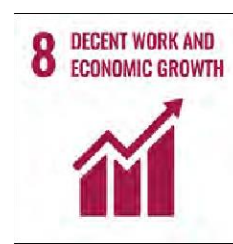


चित्र 5.1: एसआर एशिया टीम हडागी गांव में लाभार्थियों से परामर्श कर रही है



चित्र 5.2 : लाभार्थियों के घर पर न बिके मशरूम

एसडीजी के अनुरूप



सीएसआर परियोजना 1	मशरूम प्रशिक्षण एवं उत्पादन केंद्र
लाभार्थी	गांव हागड़ी, सुनार और कलेथ के 25 लोग
स्थान	ब्लॉक थौलदार के गांव हागड़ी, सुनार और कलेथ
परियोजना लागत	8.79 लाख रुपये
कार्यान्वयन एजेंसी	व्यापार एवं उद्यमिता विकास केंद्र (सीबीईडी)
परियोजना उद्देश्य	मशरूम उत्पादन के माध्यम से आजीविका सृजन

परियोजना के घटक

मशरूम प्रशिक्षण एवं उत्पादन केंद्र ने हागड़ी, सुनार और कलेथ गांव के 25 लोगों को प्रशिक्षित किया। इसका उद्देश्य मशरूम उत्पादन के माध्यम से आजीविका उत्पन्न करना था। परियोजना के निम्नलिखित घटक हैं:

- **जागरूकता बैठकें:** परियोजना और मशरूम की खेती के बारे में ग्रामीण परिवारों को जागरूक करने के लिए गांवों में जागरूकता अभियान की एक श्रृंखला आयोजित की गई। इसमें चर्चाएँ, विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान, वृत्तचित्र और प्रदर्शन दौरे शामिल हैं।
- **लाभार्थियों की पहचान:** लाभार्थियों का चयन करते समय उन परिवारों को प्राथमिकता दी गई जो अत्यंत गरीब थे और उनकी आय मुख्य रूप से कृषि पर निर्भर थी। लाभार्थियों का चयन करते समय महिला किसानों को प्राथमिकता दी गई।
- **समूहों का गठन और अभिमुखीकरण:** सभी गांवों से पहचाने गए सदस्यों को एक साथ समूहबद्ध करके एक आत्मनिर्भर सहकारी समिति बनाई गई। सहकारी समिति के सभी सदस्यों को मशरूम उत्पादन के सभी पहलुओं पर प्रशिक्षित किया गया। परियोजना कर्मचारियों ने सदस्यों को अपनी आय बढ़ाने के लिए सामूहिक रूप से काम करने के लिए प्रेरित किया।

- **मशरूम की खेती के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षण:** मशरूम की मूल बातें, मशरूम की खेती के लिए कमरे की तैयारी, मशरूम की खेती के लिए गुणवत्तापूर्ण स्पॉन, रोग और कीट नियंत्रण, ग्रेडिंग के माध्यम से खेती किए गए उत्पाद का मूल्य संवर्धन, काटे गए मशरूम की पैकेजिंग।
- **गुणवत्तायुक्त स्पॉन का वितरण:** मशरूम उत्पादन के लिए लाभार्थियों को 100 मशरूम बैग (दोनों प्रजातियां: ऑयस्टर मशरूम (प्लुरोटस एसपीपी.) और जी. ल्यूसिडम) प्रदान किए गए।

पहल का मूल्यांकन

प्रासंगिकता

उच्च

परियोजना की प्रासंगिकता को उच्च दर्जा दिया गया क्योंकि इसकी खेती के निम्नलिखित लाभ हैं:

- **पहाड़ियों का प्राकृतिक लाभ:** मशरूम को वनस्पति वृद्धि (स्पॉन रन) के लिए 20 से 28 डिग्री सेल्सियस और प्रजनन वृद्धि के लिए 12 से 18 डिग्री सेल्सियस के बीच तापमान की आवश्यकता होती है। पहाड़ियों की जलवायु परिस्थितियों को देखते हुए, मशरूम के लिए विकास का मौसम लगभग 8 से 10 महीने का होता है, जबकि निचले इलाकों में यह 4-6 महीने का होता है, और संरक्षित खेती में कोई अतिरिक्त खर्च नहीं होता।
- **आय की संभावना:** मशरूम पौष्टिक होते हैं और परियोजना क्षेत्र में इनकी बाजार कीमत 200 रुपये प्रति किलोग्राम तक होती है। इससे ग्रामीण परिवारों की आय बढ़ाने में मदद मिलती है।
- **भूमि की आवश्यकता नहीं:** पहाड़ों में, जहां भूमि की कमी है, वहां भूमि की आवश्यकता के बिना ही पॉली बैग में मशरूम उगाए जाते हैं।
- **महिलाओं के लिए अतिरिक्त आय:** यह एक घरेलू गतिविधि है जिसे महिलाएं प्रभावी ढंग से प्रबंधित कर सकती हैं।

प्रभावशीलता

मध्यम

हगड़ी, सुनार और कलेथ गांव के पच्चीस सदस्यों को मशरूम उत्पादन का प्रशिक्षण दिया गया और वे मशरूम की खेती में भी लगे। बताया जाता है कि 2020-21 में लोगों में इस पहल के प्रति बहुत उत्साह नहीं था और मशरूम का उत्पादन बहुत कम हुआ। निम्नलिखित कारणों से यह पहल सफल नहीं हो पाई:

- पहली तिमाही के दौरान कार्यान्वयन एजेंसी ने किसानों से सारी उपज एकत्र कर ली थी, लेकिन दूसरी तिमाही में राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन के कारण यह संभव नहीं हो सका, जिससे किसानों को नुकसान हुआ।
- मशरूम की खेती के लिए निरंतर निगरानी की आवश्यकता होती है जो ग्रामीणों के लिए संभव नहीं था, जिसके कारण उत्पादन कम हुआ।
- ग्रामीणों को अपनी उपज बेचने के लिए बाजार में जाना मुश्किल हो रहा था, इस प्रकार सभी किसानों ने वर्ष के दौरान ही यह गतिविधि बंद कर दी थी।

क्षमता

कम

ग्रामीणों ने दो प्रकार के मशरूम उगाए (ए) ऑइस्टर मशरूम (खाने के लिए) और (बी) गैनोडर्मा (औषधीय उद्देश्यों के लिए)। चूंकि कोविड-19 लॉकडाउन के कारण कार्यान्वयन एजेंसी किसानों से मशरूम एकत्र कर सकती थी, इसलिए खाने योग्य मशरूम को किसानों ने स्थानीय बाजार में बेच दिया या खुद ही खा लिया, जबकि औषधीय मशरूम का किसी भी उद्देश्य के लिए उपयोग नहीं किया गया और वे बर्बाद हो गए।

प्रभाव

कम

मशरूम उत्पादन पर्याप्त लाभदायक नहीं था क्योंकि लाभार्थियों को औषधीय मशरूम के लिए 5000 रुपये प्रति किलोग्राम देने का वादा किया गया था, लेकिन उन्हें केवल 2500 रुपये प्रति किलोग्राम दिए गए और इसलिए उपज नहीं हुई।

सुसंगति

मध्यम

आजीविका सृजन परियोजना होने के कारण मशरूम परियोजना आर्थिक दृष्टि से योगदान नहीं दे सकी। यद्यपि प्रशिक्षण और कार्यान्वयन संतोषजनक था, फिर भी परियोजना में मध्यम सुसंगतता है।

स्थिरता

कम

उत्पादन की मात्रा अपेक्षित मात्रा से कम है, इसलिए हस्तक्षेप केवल तभी जारी रखा जा सकता है जब उत्पादकता या उपज को कमाई को पूरा करने के लिए बढ़ाया जाए, अन्यथा ये परिवार दैनिक मजदूरी जैसे अन्य स्रोतों से कमाते हैं।

समग्र मूल्यांकन

परियोजना को सफलतापूर्वक शुरू किया गया था ताकि स्थानीय ग्रामीणों को अतिरिक्त आजीविका आय उत्पन्न करने के लिए प्रशिक्षित किया जा सके और व्यक्ति ने विशेषज्ञों द्वारा बहुत अधिक समर्थन के बिना मशरूम का उत्पादन करने का प्रयास किया है। यह देखा गया है कि गांव वाले लाभदायक आय उद्यम के प्रति काम करने के लिए गंभीर नहीं थे।

सुझाव

ऐसे हस्तक्षेपों के लिए प्रगतिशील किसानों को लक्षित किया जा सकता है तथा मशरूम की खेती को एक लाभदायक व्यवसाय के रूप में स्थापित करने के लिए न्यूनतम तीन वर्षों तक निरंतर समर्थन आवश्यक हो सकता है।

केस स्टडी

वर्ष 2020-21 में थौलधार, टिहरी के विभिन्न गांवों के 25 लोगों को उनके गांवों में मशरूम उत्पादन का प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण प्राप्त करने वालों में हडगी गांव की सोना देवी भी शामिल थीं। प्रशिक्षण के बाद उन्हें मशरूम के बीज मिले और उन्होंने अपने घर में ही मशरूम उगाया। उन्होंने खाने योग्य मशरूम लगाया, लेकिन उनकी पहली फसल फंगस से प्रभावित हो गई और उन्हें इसे फेंकना पड़ा। इसके बाद उन्होंने इस बारे में और लोगों से सलाह ली और दूसरी फसल उगाई, जिसमें वह लगभग आधा किलो मशरूम उगाने में सफल रहीं। वर्तमान में वह तीसरी फसल बनाने की तैयारी कर रही हैं। उन्होंने बताया कि उन्होंने अपनी कमियाँ से बहुत कुछ सीखा है और इसे सफल बनाने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं, क्योंकि उन्हें यह काम पसंद है। हम उनकी सफलता की कामना करते हैं।

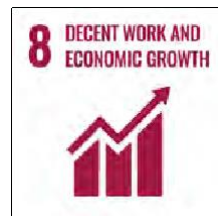


5.2 परियोजना 2

एनएसक्यूएफ स्तर- कौशल विकास के तहत 20 युवाओं को कंप्यूटर प्रशिक्षण

सतत विकास लक्ष्य के अनुरूप

सीएसआर परियोजना 2	एनएसक्यूएफ स्तर- कौशल विकास के तहत 20 युवाओं को कंप्यूटर प्रशिक्षण
लाभार्थी	टिहरी गढ़वाल से 20 युवा
स्थान	टिहरी गढ़वाल में विभिन्न स्थान।
परियोजना लागत	21.23 लाख रुपये
कार्यान्वयन एजेंसी	कंप्यूटर और प्रबंधन प्रशिक्षण अकादमी (एसीएमटी)।
परियोजना उद्देश्य	युवाओं को कंप्यूटर कौशल प्रदान करना और रोजगार के अवसरों में वृद्धि करना



पहल का मूल्यांकन

प्रासंगिकता

उच्च

उत्तराखंड के लगभग एक तिहाई युवा बेरोजगार हैं (एनएसओ डेटा ऑन जॉब्स: 2020 के अनुसार)। युवाओं में रोजगार के अवसर प्राप्त करने के लिए कौशल प्रशिक्षण प्राप्त करने की आवश्यकता थी, इसलिए यह पहल युवाओं के लिए अत्यधिक प्रासंगिक है।

प्रभावशीलता

उच्च

प्रतिष्ठित संस्थान में प्रशिक्षण: कंप्यूटर प्रशिक्षण ए.सी.एम.टी. प्राइवेट आई.टी.आई., ऋषिकेश में कराया गया। ए.सी.एम.टी., एन.सी.वी.टी. के तहत सरकार द्वारा पंजीकृत है। स्क्रीनिंग प्रक्रिया निष्पक्ष: परियोजना ने कंप्यूटर प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के लिए प्रायोजित होने के अवसर के बारे में पत्रक और पोस्टर के माध्यम से व्यापक रूप से विज्ञापन दिया। सभी आवेदकों में से अंतिम बीस को परियोजना कार्यालय में व्यक्तिगत साक्षात्कार के आधार पर चुना गया। सभी सुविधाएँ प्रदान की गईं: चयनित उम्मीदवारों के रहने और खाने-पीने के साथ-साथ अध्ययन सामग्री और संबंधित आवश्यकताओं का पूरा वित्तीय खर्च सेवा-टीएचडीसी द्वारा वहन किया गया।

क्षमता

मध्यम

पाठ्यक्रम की अवधि एक वर्ष थी जो ऑफलाइन कक्षाओं के रूप में शुरू हुई और ऑनलाइन प्रारूप में समाप्त हुई। कोविड प्रकोप के कारण प्रशिक्षण केंद्र के लिए प्रशिक्षुओं को नौकरी दिलाना मुश्किल था।

प्रभाव

मध्यम

20% (4) छात्र अपने-अपने क्षेत्र में सफलतापूर्वक रोजगार प्राप्त कर चुके हैं, जबकि 10% (2) ने अपना स्वयं का व्यवसाय शुरू किया है। उनमें से 50% (10) नौकरी के अवसरों की तलाश कर रहे हैं, जबकि 20% (4) ने अलग-अलग क्षेत्रों में काम करना शुरू कर दिया है। कंप्यूटर प्रशिक्षण ने छात्रों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में कुछ हद तक सुधार किया है। इस प्रकार प्रभाव माध्यम बना है।

सुसंगति

उच्च

यह पहल भारत में युवाओं के कौशल विकास को बढ़ावा देने वाली विभिन्न सरकारी पहलों के अनुरूप है।

स्थिरता

उच्च

युवाओं को कंप्यूटर कौशल का प्रशिक्षण दिया जाता है जिसका उपयोग प्रशिक्षुओं द्वारा उसी क्षेत्र में अपना करियर बनाने के लिए किया जा सकता है। प्रशिक्षु उसी क्षेत्र में अपना खुद का उद्यम खोल सकते हैं और/या बाजार में रोजगार की तलाश कर सकते हैं।

समग्र मूल्यांकन

कंप्यूटर प्रशिक्षण लाभार्थियों को प्रशिक्षण देने में सफल रहा। हालांकि, कोविड महामारी के कारण कार्यान्वयन एजेंसी उम्मीदवारों को प्लेसमेंट प्रदान करने में सक्षम नहीं थी। लेकिन फिर भी लगभग 30% कर्मचारियों ने सफलतापूर्वक उसी क्षेत्र में अपने दम पर रोजगार पाया और 50% कार्यरत हैं।

सुझाव

चूंकि अब कोविड प्रतिबंधों में ढील दी गई है, इसलिए उन उम्मीदवारों के लिए प्लेसमेंट मेले का आयोजन किया जा सकता है जो अभी भी नौकरी की तलाश में हैं।

केस स्टडी-1

महेश, टिहरी गढ़वाल के घोंटी के बनचुरी के निवासी हैं। 12वीं की पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्हें अपने रिश्तेदार के जरिए ऋषिकेश में कंप्यूटर ट्रेनिंग प्रोग्राम के बारे में पता चला। उन्होंने इसके लिए आवेदन किया और टेस्ट और इंटरव्यू पास करने के बाद उनका चयन एक साल के एनएसक्यूएफ लेवल-कंप्यूटर ट्रेनिंग कोर्स के लिए हो गया। उनके रहने, खाने और ट्रेनिंग मटीरियल का सारा खर्च सेवा-टीएचडीसी की ओर से ही दिया गया। कोविड के चलते उनकी आधी कक्षाएं ऑफलाइन और बाकी आधी ऑनलाइन मोड में हुईं। महामारी की वजह से लगाए गए लॉकडाउन की वजह से उन्हें प्लेसमेंट सपोर्ट नहीं मिल पाया, हालांकि उन्होंने खुद ही आवेदन किया और फिलहाल 18000 रुपये प्रतिमाह वेतन पर होटल मैनेजर के तौर पर काम कर रहे हैं। जब उनसे ट्रेनिंग के बारे में पूछा गया तो उन्होंने बताया कि ट्रेनिंग के दौरान सीखी गई सभी चीजों का इस्तेमाल वे अपनी जॉब फील्ड में नियमित तौर पर कर रहे हैं।

केस स्टडी-2

सुश्री सुमन, टिहरी गढ़वाल के छाम के कंडीसौर की निवासी हैं। उनका परिवार 17 सदस्यों का संयुक्त परिवार है। सुमन हाईस्कूल पास थीं, जब उन्हें अपने रिश्तेदार के माध्यम से सेवा-टीएचडीसी द्वारा कंप्यूटर प्रशिक्षण के बारे में पता चला। वह परीक्षा और साक्षात्कार में उत्तीर्ण हुईं और पाठ्यक्रम के लिए चयनित हुईं। उन्हें एसीएमटी ऋषिकेश में प्रशिक्षण दिया गया, जहां उनका सारा खर्च सेवा-टीएचडीसी ने ही वहन किया। उनका आधा कार्यकाल ऑफलाइन मोड में और आधा ऑनलाइन मोड में पूरा हुआ। प्लेसमेंट सपोर्ट न मिलने के कारण वह कुछ समय के लिए बेरोजगार थीं। हालांकि, उन्होंने प्रयास जारी रखा और अब पानीपत के जितेंद्र अस्पताल में सहायक डाटा एंट्री ऑपरेटर के रूप में कार्यरत हैं और 17,000 रुपये प्रति माह कमा रही हैं। मूल्यांकन टीम के साथ चर्चा करने पर उन्होंने बताया कि वह इस पहल से बहुत खुश हैं और उन्हें इस बात का संतोष है कि वह अपने परिवार की आर्थिक मदद कर सकती हैं।

केस स्टडी-2

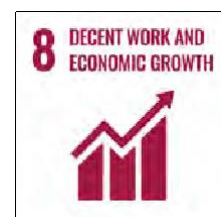
त्रिलोचन सिंह बिष्ट टिहरी गढ़वाल के घनसाली के पिलकिही के मूल निवासी हैं। वह अपने पैतृक क्षेत्र में 8 सदस्यों के संयुक्त परिवार में रहते हैं। उन्होंने वर्ष 2019 में अपनी 12वीं की पढ़ाई पूरी की थी और तब से दिहाड़ी मजदूर के रूप में अपने पिता की मदद कर रहे थे। वर्ष 2020-21 के दौरान, उनके एक रिश्तेदार ने एसीएमटी ऋषिकेश में सेवा-टीएचडीसी के माध्यम से छात्रों को दिए जाने वाले एनएसक्यूएफ लेवल-कंप्यूटर प्रशिक्षण के बारे में बताया। उन्होंने इसके लिए आवेदन किया, परीक्षा दी और इसके लिए इंटरव्यू भी पास किया। इसके बाद उन्होंने एसीएमटी ऋषिकेश में कंप्यूटर प्रशिक्षण प्राप्त किया, जहां उन्हें मुफ्त में आवास, भोजन और अध्ययन सामग्री प्रदान की गई। उन्होंने अपना आधा कोर्स ऑफलाइन मोड में और बाकी ऑनलाइन मोड में पूरा किया क्योंकि कोविड प्रतिबंधों के कारण प्लेसमेंट के अवसर के साथ नौकरी पाना मुश्किल हो गया था, हालांकि, उन्होंने उम्मीद नहीं खोई, खुद से आवेदन किया और अब इंटेलेक्ट नामक कंपनी में डेटा एंट्री ऑपरेटर के रूप में काम कर रहे हैं और प्रति माह 16000 रुपये कमा रहे हैं और अपने परिवार का भरण-पोषण कर रहे हैं।

5.3 परियोजना 3

टिहरी के प्रतापनगर ब्लॉक के उपली रमोली पट्टी में सतत आजीविका और संसाधन प्रबंधन

सतत विकास लक्ष्य के अनुरूप

सीएसआर परियोजना 2	टिहरी के प्रतापनगर ब्लॉक के उपली रमोली पट्टी में सतत आजीविका और संसाधन प्रबंधन
लाभार्थी	प्रतापनगर ब्लॉक के उपली रमोली पट्टी के विभिन्न गांवों के लोग
स्थान	प्रतापनगर ब्लॉक, टिहरी जिला: टिहरी गढ़वाल
परियोजना लागत	30.15 लाख रुपये
कार्यान्वयन एजेंसी परियोजना का उद्देश्य	शहीद भगत सिंह (ई.वी.) कॉलेज दिल्ली बेहतर आजीविका के अवसरों के लिए ग्रामीणों को प्रशिक्षण और सहायता प्रदान करना



चित्र 5.3: परियोजना स्थल पर निर्मित चाल खाल



चित्र 5.4: फार्म मशीन बैंक



शुरू की गई पहल

1. फार्म मशीनरी बैंक
2. वर्षा जल संचयन टैंक
3. उच्च उपज वाली किस्म के बीजों का वितरण
4. मशरूम की खेती
5. सेब का बागान
6. चाल-खाल की खुदाई

प्रासंगिकता

उच्च

जीवित रहने के लिए आवश्यक चीजें उपलब्ध कराना ही आजीविका की परिभाषा है। इस पहल ने लक्षित आबादी को कई तरह के संसाधन उपलब्ध कराए हैं, जिनके माध्यम से वे जीविकोपार्जन की अपनी क्षमता बढ़ा सकते हैं, जिससे उनकी आय में वृद्धि हो सकती है। लक्षित समूह अपने विकास के लिए परियोजना की पहल से खुश थे और उन्होंने संकेत दिया कि वे उस विशेष क्षेत्र में अत्यधिक आवश्यक थे।

प्रभावशीलता

उच्च

परियोजना के अधिकांश उद्देश्य पूरे हो चुके हैं। आय का एक बड़ा और बेहतर स्रोत होने से उपर्युक्त क्षेत्र के व्यक्तियों की उत्पादकता में वृद्धि हुई है। लक्षित दर्शकों को बहुत अच्छा लगा क्योंकि अब वे अपने परिवारों की जरूरतों को अधिक कुशलता से पूरा कर सकते हैं। लक्षित दर्शकों के लिए, यह परियोजना काफी प्रभावी साबित हुई है। परियोजना ने प्रतापनगर ब्लॉक के विभिन्न गाँवों के स्थानीय समुदाय के लिए आजीविका के अवसरों को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया है। इस परियोजना के तहत, कार्यान्वयन एजेंसियों द्वारा कृषि मशीनरी बैंक, सेब और मशरूम के बागान, जल संचयन टैंक के साथ-साथ चाल-खाल जैसी विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की गईं। परियोजना के हस्तक्षेप ने विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से किसान परिवारों के साथ-साथ पूरे समुदाय पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है और उनकी क्षमता निर्माण में संसाधनों का उपयोग किया है।

विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से परियोजना की प्रमुख उपलब्धियाँ

1. कृषि मशीनरी बैंक: परियोजना क्षेत्र में 02 कृषि मशीनरी बैंक स्थापित किए गए। इन मशीनों का उपयोग गांव के लोग अपनी आजीविका कमाने के लिए कर रहे थे। बताया गया कि कृषि मशीनरी बैंक के तहत ग्रिट्स मिल, चावल मिल, हल आदि उपलब्ध कराए गए, जिससे लोगों की आय में वृद्धि हुई, वे बेहतर जीवन जी पाए और अपने परिवार को बेहतर अवसर प्रदान कर पाए। मूल्यांकन दल ने पहल के लाभार्थी नागीलाल से मुलाकात की। उन्होंने बताया कि खरीदे गए उपकरणों से उन्हें लगभग 8000/- रुपये प्रति माह की आय हो रही है, जबकि पहले वे केवल 3500/- रुपये प्रति माह कमाते थे।

2. वर्षा जल संचयन टैंक: दीनगांव क्षेत्र में कुल 40 टैंक बनाए गए। यह देखा गया कि परियोजना के हस्तक्षेप से जीवन की गुणवत्ता में सुधार हुआ है और स्थानीय स्तर पर जल संकट की समस्या कम हुई है। लाभार्थियों ने बताया कि टैंकों ने उन्हें पानी का भंडारण करने और संकट के समय इसका उपयोग करने में मदद की है।

3. उच्च उपज वाली किस्म के बीजों का वितरण: बैलडोगी, बुडकोट, कंडियाल गाँव, सेरा, सदरगाँव, मुखेम, दीनगाँव और घंडियालगाँव के गाँवों में व्यक्तियों के साथ-साथ आठ स्वयं सहायता समूहों के बीच आलू, अदरक, टमाटर, शिमला मिर्च और कद्दू के उच्च किस्म के बीज वितरित किए गए। एसएचजी के साथ-साथ लाभार्थियों ने बताया कि उनके पास उपज की उच्च उपज थी और इससे उन्हें अच्छा मुनाफा हुआ और उनके परिवार के लिए बेहतर आजीविका का अवसर मिला। मूल्यांकन टीम ने जय नाग देवता एसएचजी की श्रीमती सुरजी देवी के यहाँ दौरा किया। उनके एसएचजी को आलू, अदरक, शिमला मिर्च, कद्दू और टमाटर के बीजों के 100 किलोग्राम उच्च किस्म के बीज मिले। समूह में 12 सदस्य थे जिन्होंने बीज उगाए थे और 1,20,000/- रुपये का लाभ कमाया था, जिसे सदस्यों के बीच समान रूप से विभाजित किया गया था। श्रीमती सुरजी देवी ने बताया कि उन्हें हर छह महीने में बीज मिलते हैं और वे इस पहल से बहुत खुश हैं।

4. मशरूम की खेती:

सेरा, मुखेम क्षेत्र में 7 स्वयं सहायता समूहों द्वारा मशरूम की खेती की

गई। उत्पादन का विवरण तालिका 4.2 में दिया गया है। 7 स्वयं सहायता समूहों ने 4.17 क्विंटल मशरूम का उत्पादन किया, जिसकी कीमत 64,050 हजार रुपये थी। जिसमें से कुल उत्पादित मशरूम का 76.50% बेचा गया और शेष 23.50% मशरूम उत्पादकों द्वारा स्वयं उपभोग किया गया।

मशरूम का उपभोग उसके उत्पादकों द्वारा ही किया गया। उत्पादित मशरूम को निकटतम बाजार लम्भगाँव में 150 रुपये प्रति किलोग्राम की दर से लगभग 319 किलोग्राम बेचा गया। इस प्रकार मशरूम उत्पादकों को अच्छा लाभ मिला।

तालिका 5.2: मशरूम उत्पादन का विवरण

समूह संख्या	सदस्य संख्या,	स्वयं सहायता समूह द्वारा शुरू की गई इकाइयाँ	कुल उत्पादन	कुल बिक्री	स्वयं के उपयोग
संख्या	संख्या	संख्या	(किलोग्राम में)	(किलोग्राम में)	(किलोग्राम में)
समूह-1	10	7	160	110	50
समूह-2	3	3	90	80	10
समूह-3	2	2	65	50	15
समूह-4	5	1	40	35	5
समूह-5	4	1	35	15	10
समूह-6	5	1	32	22	10
समूह-7	2	1	15	7	8
योग	31	16	417	319	98

5. सेब का रोपण: टिहरी गढ़वाल जिले के

प्रतापनगर ब्लॉक के ऊँचाई वाले गाँवों में 25 किसानों को 2500 उपलब्ध कराए गए। सेब के पौधे वर्ष 2020-21 में उगाए गए थे और सेब के पौधों ने अभी तक फल देना शुरू नहीं किया है पौधों की देखभाल किसानों द्वारा की जा रही है और उन्हें केवल समर्पित स्थान पर उगाया जा रहा है ताकि अन्य किस्मों के पौधों के साथ पोषक तत्वों के लिए प्रतिस्पर्धा कम हो सके। सेब के बागानों का मूल्यांकन तालिका 4.3 में दिया गया है।

तालिका 5.3: सेब बागान की उत्तरजीविता दर

क्रमांक	कार्यान्वयन एजेंसी का नाम	गाँवों का नाम	साइट विवरण		नमूनाकरण के लिए चयनित किसान		
			किसानों की संख्या	सेब के पौधे रोपे गए	नमूनाकरण के लिए चयनित किसान	उन्हें सेब के पौधे दिए गए	रोपे गए पौधे का जीवित रहना
	डीआरसी	संख्या	संख्या	संख्या	संख्या	संख्या	प्रतिशत
1		मुखेम	6	590	1	120	86
2		दीनगाँव	10	1090	3	460	87
3		सदरगाँव	4	500	1	200	83
		योग	20	2500	5	780	85

किसानों से बातचीत के दौरान पाया गया कि किसान बागानों को सफल बनाने के लिए हरसंभव प्रयास कर रहे हैं। अगर कोई सेब का पौधा मर जाता है तो अगले सीजन में तुरंत उसके स्थान पर नया सेब का पौधा लगाया जाता है, ताकि सेब के बागों की उत्तरजीविता दर में सुधार हो सके। लगाए गए सभी सेब के पौधे स्वस्थ पाए गए। किसान पौधों की उचित देखभाल कर रहे हैं। अपने सेब के बागों को सफल बनाने के लिए वे विशेषज्ञों के साथ-साथ मोरी ब्लॉक के सेब मालिकों से भी उचित मार्गदर्शन ले रहे हैं। ताकि भविष्य में उनकी सेब की बागवानी भी उनकी आय का मुख्य स्रोत बन सके। जिस समय क्षेत्र का दौरा किया गया, वास्तविक परिणाम देखने में लगभग 2-4 साल और लगेंगे।

6. चाल खाल की खुदाई:

हेरवाल गांव में पारंपरिक वर्षा जल संचयन विधियों जैसे चाल और खाल का निर्माण किया गया। दस (10) चाल-खाल का निर्माण जल और मिट्टी के कटाव को रोकने और रिसाव को बढ़ाने के उद्देश्य से किया गया था। ग्रामीणों ने बताया कि यह संरचना बरसात के मौसम में पानी को संग्रहित करती है जो आगे जमीन में रिसता है, जिससे भूजल स्तर बढ़ता है।

क्षमता

उच्च

लक्ष्य समूह के उद्देश्य उचित तरीके से और आवंटित समय सीमा के भीतर पूरे किए गए। वित्तीय सहायता का उचित उपयोग किया गया। यह परियोजना कुशल थी क्योंकि लक्ष्य समूह के पास अब आय के अतिरिक्त स्रोत और बेहतर जीवन स्तर है, जिससे वे समाज का सामना सम्मान के साथ कर सकते हैं। इस प्रकार, दक्षता उच्च मानी जाती है।

प्रभाव

उच्च

आजीविका कार्यक्रमों के सहयोग से लाभार्थी अपनी आय क्षमता बढ़ाने में सक्षम हुए।

सुसंगति

उच्च

उनकी पहल स्वयं सहायता समूहों और लोगों के लिए आजीविका के अवसरों को बढ़ावा देने वाली विभिन्न सरकारी पहलों के अनुरूप है।

स्थिरता

उच्च

सभी व्यक्तियों को उच्च आय और सम्मानजनक जीवन की आवश्यकता होती है। परिणामस्वरूप, इस पहल ने लक्षित आबादी की इन दोनों मांगों को पूरा किया है, और निकट भविष्य में इसी तरह की परियोजनाओं की मांग बढ़ेगी। इस परियोजना का लक्षित आबादी के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। इस तरह की पहल दीर्घकालिक कार्यान्वयन के लिए भी उपयुक्त हैं।

समग्र मूल्यांकन

यह पहल लोगों को आजीविका के अवसर प्रदान करने तथा उनकी कमाई की क्षमता बढ़ाने में अत्यधिक सफल रही।

केस स्टडी 1

कृषि मशीनरी बैंक

नागीलाल दीनगांव के एक किसान हैं। सेवा-टीएचडीसी और सरकारी सहायता से उन्होंने एक हल के साथ एक चक्की और एक चावल मिल खरीदी। चूंकि उन्हें मशीनरी मिल गई थी, इसलिए उन्होंने अपने घर में ही गेहूं और चावल की चक्की खोल ली। आस-पास के लोग उनकी दुकान पर सेवाएं लेने आते हैं। इसके अलावा वे चावल की उपज से प्राप्त भूसी को भी बाजार में बेचते हैं।

जानकारी के लिए बाजार में उन्होंने बताया कि पहले वे



इससे उन्हें प्रति माह 4500 रुपये की अतिरिक्त कमाई हो गई, जिससे उनकी संयुक्त मासिक आय 8000 रुपये हो गई। उन्होंने बताया कि उनकी कमाई बढ़ गई है, जिससे वे अपने परिवार के सदस्यों को बेहतर अवसर प्रदान करने में सक्षम हो गए हैं।



केस स्टडी-2

मशरूम उत्पादन-दीनगांव

दीनगांव में रहने वाले महावीर कंथुरा और धनपाल कंथुरा दो भाई हैं। वे खेतीबाड़ी करते हैं और पार्ट टाइम दुकान भी चलाते हैं। वर्ष 2020-21 में उन्हें सेवा-टीएचडीसी से मशरूम की ट्रेनिंग के लिए बीज और ट्रेनिंग मिली थी और तब से वे इस काम को कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि उनकी संयुक्त संपत्ति है, इसलिए वे मिलकर काम करते हैं।

मशरूम उत्पादन के पहले दौर में इन भाइयों ने 2 कमरों में मशरूम लगाया और स्थानीय स्तर पर 200 रुपये प्रति किलो की दर से उत्पादन बेचा। पहले दौर के बाद उन्हें मशरूम के साथ काम करते समय बरती जाने वाली सावधानियों के बारे में भी पता चला। तब से उन्होंने हर मौसम में मशरूम उत्पादन शुरू किया और उत्पादन की जगह बढ़ाने की कोशिश की। उन्होंने बताया कि हाल ही में उन्होंने 8 कमरों में मशरूम उत्पादन किया और उत्पादन से उन्हें इतनी आय हुई कि वे 7 महीने तक किसी और काम पर निर्भर हुए बिना रह सकते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि उनकी पत्नियाँ भी इसमें उनकी मदद करती हैं और वे मशरूम उत्पादन जारी रखेंगे क्योंकि यह उनके लिए फायदेमंद है।

निष्कर्ष

वित्त वर्ष 2020-21 में सेवा-टीएचडीसी द्वारा की गई सीएसआर पहलों की प्रकृति विविधतापूर्ण है। परियोजनाओं में मशरूम उत्पादन, कंप्यूटर संचालन और सतत आजीविका और संसाधन प्रबंधन में प्रशिक्षण शामिल हैं। ये परियोजनाएँ टिहरी गढ़वाल के क्षेत्र में क्रियान्वित की जा रही हैं। इन परियोजनाओं का लक्ष्य 3000 से अधिक लोगों को बेहतर आय सृजन के अवसर प्रदान करना और बदले में जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना है।

अध्याय 6: टीएचडीसी उत्थान के अंतर्गत

ग्रामीण विकास पहल

यह जरूरी है कि कॉरपोरेट अपने प्रोजेक्ट क्षेत्रों में अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों को पूरा करें और पीएए के आस-पास के ग्रामीण समुदायों की जरूरतों को पूरा करें। वे परियोजना स्थलों पर संसाधनों और कौशल के आदान-प्रदान के माध्यम से ग्रामीण विकास में मूल्य जोड़ सकते हैं। सेवा-टीएचडीसी ने वित्त वर्ष 2020-21 के दौरान टीएचडीसी उत्थान (प्रगति) के तहत विभिन्न ग्रामीण विकास पहलों को लागू किया है। वर्ष के दौरान, नीचे चर्चा की गई शीर्षक के तहत चार पहलों को लागू किया गया।

तालिका 6.1 : सीएसआर परियोजनाओं की सूची

क्रमांक	परियोजना का नाम	गतिविधि	स्थान	समय (अवधि)	लागत (रूपये में)
1.	सामुदायिक केंद्र का निर्माण	निर्माण कार्य हेतु उ0प्र0 राजकीय निर्माण लिमिटेड टिहरी को वित्तीय सहायता	जखोली गांव (खोला), कोटेश्वर, जिला टिहरी	2018-19	45.37
2.	02 बहुउद्देशीय कार्यशाला/भवन का निर्माण	निर्माण कार्य हेतु सीडीओ, हरिद्वार को सहायता	ग्राम पंचायत नूरपुर पंजनहेड़ी और धनपुरा उर्फ पारधार्था, जिला हरिद्वार	2020-21	35.29
3.	विभिन्न सिविल कार्य (नाली कार्य के साथ सामुदायिक भवन की चारदीवारी का निर्माण)	निर्माण कार्य के लिए यूपीआरएनएन, हरिद्वार को सहायता	इंदिरानगर, ऋषिकेश	2020-21	61.26
4.	उत्तराखंड जल संस्थान को ट्रक माउंटेड वाटर टैंकर उपलब्ध कराना	जम पोर्टल के माध्यम से जल संस्थान को ट्रक माउंटेड वाटर टैंकर उपलब्ध कराना	नई टिहरी, टिहरी गढ़वाल	2020-21	15.96

6.1 परियोजना 1

कोटेश्वर के जाखोली गांव में सामुदायिक भवन का निर्माण

सतत विकास लक्ष्य के अनुरूप

सीएसआर परियोजना 1	कोटेश्वर के जाखोली गांव में सामुदायिक भवन का निर्माण
लाभार्थी	तीर्थयात्री, आगंतुक और स्थानीय समुदाय
स्थान	कोटेश्वर बांध के नजदीक डागर गांव के पास
परियोजना लागत	समुदाय 45.37 लाख रुपये
कार्यान्वयन एजेंसी	यू.पी. राजकीय निर्माण निगम लिमिटेड टिहरी
परियोजना का उद्देश्य	कोटेश्वर महादेव मंदिर में तीर्थयात्रियों के लिए ठहरने की सुविधा प्रदान करना



चित्र 6.1: जाखोली गांव में सामुदायिक केंद्र



चित्र 6.2: मंदिर के पुजारी के साथ एसआर एशिया अन्वेषक

परियोजना के बारे में संक्षिप्त जानकारी

कोटेश्वर मंदिर के परिसर में सामुदायिक भवन का निर्माण किया गया है। इस प्रसिद्ध मंदिर के सातवीं पीढ़ी के पुजारी स्वामी बुरानंद ने मंदिर परिसर में सामुदायिक भवन की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि श्रावण (जुलाई-अगस्त) के महीने में लगभग 50,000 से 60,000 भक्त मंदिर में आते हैं, जबकि शिवरात्रि के दौरान यह संख्या लगभग एक लाख हो जाती है। इस स्थान तक पहुँचने में कठिनाई होती है, इसलिए कुछ तीर्थयात्री मंदिर परिसर में ही रात बिताना पसंद करते हैं। जिन तीर्थयात्रियों ने मन्नत मांगी है और उसे पूरा करने के लिए मंदिर गए हैं, उन्हें 1-2 दिनों तक चलने वाले समारोहों से गुजरना पड़ता है और इसलिए उन्हें मंदिर में ही रहना पड़ता है। रहने के लिए दो कमरे उपलब्ध थे, लेकिन वे खराब स्थिति में थे और छत धँसी हुई थी।

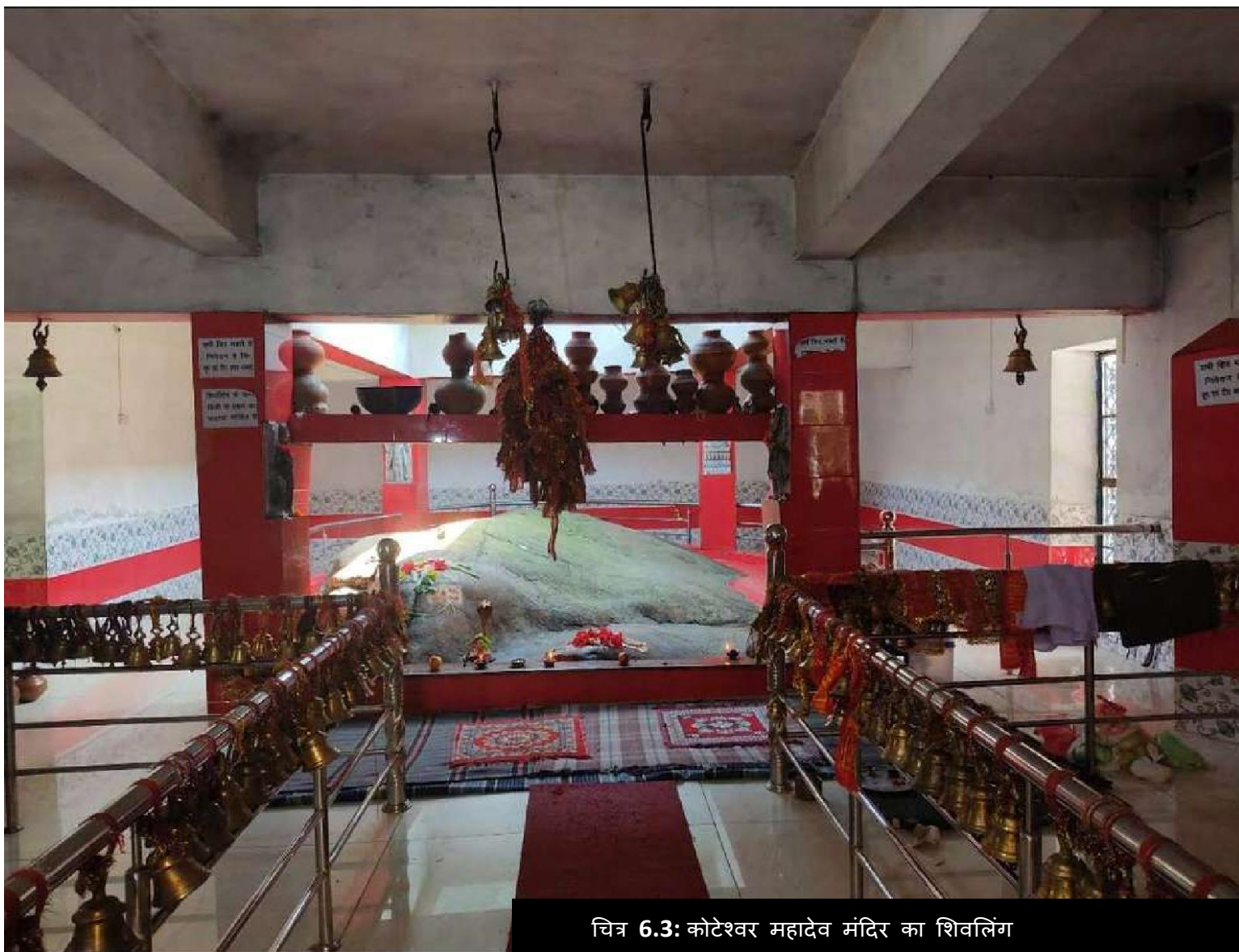
नए सामुदायिक केंद्र में दो हॉल हैं, जिनमें एक रसोई और दो शौचालय-स्नानघर की सुविधा है। एक अलग शौचालय परिसर का निर्माण कार्य चल रहा है। दोनों कमरों में एक समय में पचास लोगों के रहने की क्षमता है। मंदिर परिसर में सामुदायिक हॉल का निर्माण तीर्थयात्रियों के लिए आशाजनक रहा है। अब तीर्थयात्री यह जानकर मंदिर जा सकते हैं कि उनके लिए परिसर में रहने की सुविधा है और वे सभी अनुष्ठान निश्चित होकर कर सकते हैं।

पहल का मूल्यांकन

प्रासंगिकता	प्रभावशीलता	दक्षता	प्रभाव	सुसंगति	स्थिरता
उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च

समग्र मूल्यांकन

इस परियोजना ने समुदाय की बहुत दिनों से लंबित आवश्यकता को पूरा किया तथा ग्रामीण। तीर्थयात्री नवनिर्मित सामुदायिक केंद्र से बहुत खुश हैं। इसमें श्रावण माह के दौरान तीर्थयात्रियों की भारी भीड़ को होती है, जो उन भक्तों के लिए राहत की बात है जो कुछ “मन्नत” लेकर आए हैं और समय पर जाने की जल्दी के बिना पूजा करना चाहते हैं। साथ ही इसने रसोइयों, देखभाल करने वालों आदि के लिए आय उत्पन्न की है।



चित्र 6.3: कोटेश्वर महादेव मंदिर का शिवलिंग

6.2 परियोजना 2

02 बहुउद्देशीय कार्यशाला/भवन का निर्माण

सीएसआर परियोजना 3	02 बहुउद्देशीय कार्यशाला/भवन का निर्माण
लाभार्थी	ग्राम पंचायत नूरपुर पंजनहेड़ी और धनपुरा, पर्दार्था से संबंधित महिला स्वयं सहायता समूह
स्थान	ग्राम पंचायत नूरपुर पंजनहेड़ी और धनपुरा, पर्दार्था, जिला हरिद्वार
परियोजना लागत	35.29 लाख रुपये
कार्यान्वयन एजेंसी	मुख्य विकास अधिकारी (सीडीओ),
परियोजना उद्देश्य	हरिद्वार महिला स्वयं सहायता समूहों को सामुदायिक स्थान का प्रावधान

एसडीजी के अनुरूप



चित्र 6.4: वर्कशॉप-नूरपुर पंजनहेड़ी



चित्र 6.5: कार्यशाला-धनपुरा पर्दार्था

परियोजना का संक्षिप्त विवरण

नूरपुर पंजनहेड़ी और धनपुरा उर्फ पर्दार्था ग्राम पंचायतों में दो बहुउद्देशीय हॉल या कार्यशालाओं का निर्माण किया गया था, जो मुख्य रूप से महिला स्वयं सहायता समूहों के लिए स्थान के भीतर कुछ आजीविका गतिविधियां करने के लिए थे। बहुउद्देशीय हॉल के उपयोग का दायरा सामुदायिक समारोहों, कीर्तन, जन्मदिन समारोह आदि तक भी फैला हुआ है। बहुउद्देशीय हॉल में एक सभा हॉल, एक संलग्न बाथरूम परिसर और एक स्टोर रूम शामिल हैं। नूरपुर पंजनहेड़ी में बहुउद्देशीय हॉल का क्षेत्र में महिला स्वयं सहायता समूहों द्वारा अच्छी तरह से उपयोग किया गया था। हॉल क्षेत्र की सभी महिलाओं के लिए खुला है और समुदाय के सदस्यों द्वारा इसका अच्छी तरह से उपयोग किया गया है। धनपुरा की महिलाओं के लिए बनाया गया बहुउद्देशीय हॉल गांव से कुछ दूरी पर पर्दार्था गांव के भौगोलिक क्षेत्र में स्थित है।

पहल का मूल्यांकन

प्रासंगिकता	प्रभावशीलता	दक्षता	प्रभाव	सुसंगति	स्थिरता
उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च

समग्र मूल्यांकन

यह पहल समुदाय में विशेष रूप से महिलाओं के बीच महसूस की गई आवश्यकता की प्रतिक्रिया है। एसएचजी की आजीविका गतिविधियों को निष्पादित करने के लिए एक स्थान की आवश्यकता थी जिसके साथ वे हैं जुड़े हुए। नूरपुर पंजनहेड़ी में हॉल का अच्छा उपयोग किया जाता है, लेकिन इसकी दुर्गमता के कारण धनपुरा के लोगों द्वारा इसका कुशलतापूर्वक उपयोग नहीं किया जाता था।



चित्र 6.6 : नूरपुर पंजनहेड़ी की महिलाओं से परामर्श

6.3 परियोजना 3

विभिन्न सिविल कार्य (नाली कार्य के साथ सामुदायिक भवन और चारदीवारी का निर्माण)

सीएसआर परियोजना 3	विभिन्न सिविल कार्य (नाली कार्य के साथ सामुदायिक भवन और चारदीवारी का निर्माण)
लाभार्थी	इंद्रा नगर और आस-पास के क्षेत्र के स्थानीय लोग
स्थान	टीएचडीसी कॉलोनी और मीट मार्केट, इंद्रा नगर, ऋषिकेश
परियोजना लागत	61.26 लाख रुपये
कार्यान्वयन एजेंसी	उत्तर प्रदेश राजकीय निर्माण निगम हरिद्वार, यूनिट हरिद्वार
परियोजना का उद्देश्य	इंद्रा नगर में सामुदायिक परिसंपत्तियों का निर्माण

सतत विकास लक्ष्य के अनुरूप



चित्र 6.7 : सामुदायिक भवन-इंद्रा नगर



चित्र 6.8 : सीमा दीवार-208 मीटर

परियोजना की पृष्ठभूमि

टीएचडीसीआईएल सीएसआर गतिविधियों के तहत सेवा-टीएचडीसी के माध्यम से अपने परियोजना प्रभावित क्षेत्र में शिक्षा, स्वास्थ्य, बुनियादी ढांचे के लिए विभिन्न सुविधाओं का विकास कर रहा है। इस कार्यक्रम के तहत इंद्रा नगर/नेहरूग्राम कॉलोनी ऋषिकेश के स्थानीय निवासियों द्वारा सामुदायिक भवन की खराब स्थिति के कारण उसकी छत को तोड़कर नई छत बनाने तथा आर एंड आर फंड से चारदीवारी सहित विभिन्न अन्य सिविल कार्यों की मरम्मत और रखरखाव के लिए प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया है। विनिर्देश इस प्रकार हैं:-

सामुदायिक भवन: इंदिरानगर में सामुदायिक भवन की हालत खराब थी और उसे मरम्मत कार्य के साथ-साथ नई छत की भी आवश्यकता थी। सामुदायिक भवन का निर्माण स्थानीय लोगों के लिए सामाजिक समारोह, विवाह, पार्टी आदि आयोजित करने के लिए महत्वपूर्ण था। सामुदायिक भवन में एक बाथरूम परिसर, विभिन्न समारोहों में भाग लेने वाले मेहमानों की भोजन की जरूरतों को पूरा करने के लिए रसोई और सामुदायिक भवन की बुकिंग के लिए एक अतिरिक्त कार्यालय कक्ष है। हॉल में कुर्सियाँ, लाइट, पंखे और द्वारा उचित जल निकासी प्रणाली है जो लोगों को हॉल बुक करने और अपनी आवश्यकताओं के अनुसार इसका उपयोग करने की अनुमति देता है।

नाले का निर्माण : नाले का निर्माण कार्य इंद्रा नगर में मीट मार्केट में किया गया। पहले मीट मार्केट से निकलने वाला सारा गंदा पानी और कचरा मुख्य बाजार में पहुंचता था, जिससे खाद्य पदार्थ बेचने वाले इलाके में गंदगी फैलती थी।

बॉन्डरी दीवार: बॉन्डरी दीवार रेलवे स्टेशन के पास मानव रहित क्षेत्र से घुसपैठियों और आवारा पशुओं के प्रवेश के रोकने तथा सुरक्षा के रूप में कार्य कर रही है।

पहल का मूल्यांकन

प्रासंगिकता	प्रभावशीलता	दक्षता	प्रभाव	सुसंगति	स्थिरता
उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च

समग्र मूल्यांकन

सामुदायिक केंद्र अब पूरी तरह से चालू है और स्थानीय समुदाय के उपयोग के लिए उपलब्ध है। साक्षात्कार में शामिल सभी 12 उत्तरदाताओं ने दावा किया कि वे सामुदायिक हॉल का उपयोग कर रहे हैं और सुविधाओं और सेवाओं से बहुत संतुष्ट हैं। उन्होंने बताया कि इस पहल से सुरक्षा और संरक्षा बढ़ी है, स्थानीय लोगों में खुशी आई है और स्वच्छता बढ़ी है।

सामुदायिक केंद्र का उपयोग इंद्रा नगर, नेहरू ग्राम और आस-पास के इलाकों के लोग सामाजिक समारोहों, शादियों, कीर्तन, रिसेप्शन पार्टियों आदि के लिए कर रहे हैं। लोगों के पास अब सामाजिक कार्यक्रम आयोजित करने के लिए एक जगह है, जिसमें उनका बहुत समय और पैसा खर्च होता था। सामुदायिक हॉल की बुकिंग करने के लिए उपयोगकर्ता को 4000 रुपये का मामूली शुल्क देना पड़ता है, जबकि बीपीएल श्रेणी के अंतर्गत आने वाले लोगों को केवल 1000 रुपये का भुगतान करना पड़ता है। प्राप्त राशि का उपयोग रखरखाव के उद्देश्य से किया जाता है। सामुदायिक हॉल में एक बार में 200 लोगों को समायोजित किया जा सकता है और स्थानीय लोगों द्वारा कुशलतापूर्वक और आर्थिक रूप से इसका उपयोग किया जा रहा है। लोगों को समारोहों और पार्टियों के लिए सेवाओं का लाभ उठाने के लिए भारी मात्रा में पैसे नहीं देने पड़ते।

निर्मित जल निकासी प्रणाली अच्छी तरह से बनाए रखी गई है और इसमें उपयुक्त जुड़े हुए चैनल हैं जो क्षेत्र से सीवेज के निरंतर निपटान में मदद करते हैं। जल निकासी प्रणाली ने क्षेत्र में जलभराव की समस्या को कम कर दिया है, जिससे क्षेत्र में जलजनित बीमारियों में कमी आई है और इसलिए लोगों का दवाओं पर कम खर्च हो रहा है।

निर्मित बाउंड्री वॉल से इलाके में चोरी की घटनाओं में कमी आई है और आवारा पशुओं के घुसपैठ में भी कमी आई है। बाउंड्री वॉल के निर्माण से पड़ोस में चोरी की घटनाओं में कमी आई है और लोगों में सुरक्षा की भावना पैदा हुई है।

केस स्टडी

सामुदायिक हॉल का निर्माण

निरपाल सिंह सेवा-टीएचडीसी द्वारा मरम्मत और जीर्णोद्धार किए गए सामुदायिक भवन के सचिव हैं। वे अपने परिवार के साथ सामुदायिक भवन के पास ही रहते हैं। श्री सिंह इस स्थान के रखरखाव का ध्यान रखते हैं। सामुदायिक भवन का निर्माण इस स्थान पर सामाजिक कार्यक्रम आयोजित करने के उद्देश्य से किया गया है। एक समय में इस हॉल में 200 लोग बैठ सकते हैं और इसमें बिजली और पानी का कनेक्शन भी है। हॉल के उपयोग के लिए स्थानीय लोगों से न्यूनतम शुल्क लिया जा रहा है। इसके अलावा, बीपीएल लोगों और आध्यात्मिक और अंतिम संस्कार करने वाले लोगों को हॉल के उपयोग के लिए शुल्क में विशेष छूट मिलती है। हमारे क्षेत्रीय दौरे के दौरान, श्री सिंह ने बताया कि हॉल ने आस-पास के क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के जीवन में एक वरदान के रूप में काम किया है और एक सामुदायिक संपत्ति बनाई है जिसका भविष्य में लंबे समय तक उपयोग किया जाएगा। वह इस पहल से बहुत खुश हैं और टीएचडीसी को भविष्य के प्रयासों के लिए शुभकामनाएं देते हैं।



चित्र 6.9 : मीट मार्केट, इंदिरानगर में नाली निर्माण कार्य

6.4 परियोजना 4

उत्तराखंड जल संस्थान, नई टिहरी को ट्रक माउंटेड वॉटर टैंकर उपलब्ध कराना

एसडीजी के अनुरूप



सीएसआर परियोजना 4	उत्तराखंड जल संस्थान, नई टिहरी को ट्रक माउंटेड वाटर टैंकर उपलब्ध कराना
लाभार्थी	नई टिहरी शहर में लगभग 20,000 लोग लाभान्वित होंगे।
स्थान	नई टिहरी शहर, जिला: टिहरी गढ़वाल
परियोजना लागत	15.96 लाख रुपये
कार्यान्वयन एजेंसी	उत्तराखंड जल संस्थान नई टिहरी
परियोजना का उद्देश्य	पुरानी टिहरी के विस्थापित लोगों को पानी की सुविधा उपलब्ध कराना



चित्र 6.10 : अधिशासी अभियंता कार्यालय, जल संस्थान एसआर एशिया टीम के साथ



चित्र 6.11 : कार्यकारी अभियंता, जल संस्थान

परियोजना के बारे में

पुरानी टिहरी के विस्थापितों और टिहरी बांध से प्रभावित बौराड़ी, कुलना, मोलधार के ग्रामीणों को नई टिहरी शहर में बसाया गया। नई टिहरी शहर लगभग 2000 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। नई टिहरी शहर में जलापूर्ति उत्तराखंड जल संस्थान अनुरक्षण प्रभाग द्वारा की जाती है। जहां स्थानीय स्रोत की अनुपलब्धता के कारण भागीरथी नदी से पानी पंप किया जाता है। गर्मियों में 2000 मीटर की अधिक ऊंचाई और भूजल स्तर कम होने के कारण पानी की आपूर्ति बाधित होती रहती है। इसके लिए पूर्व में भी जल संस्थान टिहरी को सीएसआर मद से पेयजल टैंकर उपलब्ध कराया गया था। लेकिन पानी की अधिक आवश्यकता के कारण जल संस्थान टिहरी द्वारा जिलाधिकारी टिहरी के माध्यम से अतिरिक्त पानी का टैंकर उपलब्ध कराने का अनुरोध किया गया। सेवा-टीएचडीसी ने वर्ष 2020-21 में अपने सीएसआर पहल के तहत जल संस्थान को पानी का टैंकर उपलब्ध कराया।

जल संस्थान के पास ट्रक माउंटेड वाटर टैंकर की उपलब्धता से जरूरतमंद लोगों को पीने का पानी उपलब्ध कराना संभव हो गया है। इसके लिए एक ड्राइवर नियुक्त किया गया है। 5000 लीटर की क्षमता वाला जल संस्थान का पानी का टैंकर नई टिहरी के लगभग 20,000 लोगों की पानी की जरूरत को पूरा करता है।

पहल का मूल्यांकन

प्रासंगिकता	प्रभावशीलता	दक्षता	प्रभाव	सुसंगति	स्थिरता
उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च

समग्र मूल्यांकन

पानी के टैंकर का उपयोग लोगों को पानी की आपूर्ति के लिए कुशलतापूर्वक किया जा रहा है, इसलिए, यह पहल सफल है। जल संस्थान ने भविष्य में पानी के टैंकर की मरम्मत और रखरखाव की जिम्मेदारी ली है। इस प्रकार यह पहल अत्यधिक टिकाऊ है।

निष्कर्ष

ग्रामीण विकास के क्षेत्र में विभिन्न सीएसआर हस्तक्षेपों की योजना बनाई गई और उन्हें सेवा-टीएचडीसी द्वारा क्रियान्वित किया गया। ये ग्रामीण विकास परियोजनाएं सामुदायिक स्थानों और जल एवं स्वच्छता तक पहुंच की आवश्यकता को पूरा करती हैं। ये पहल कोटेश्वर, ऋषिकेश, हरिद्वार और टिहरी गढ़वाल के क्षेत्र में फैली हुई थीं। पहलों के समग्र मूल्यांकन से पता चलता है कि सामुदायिक परिसंपत्तियों का निर्माण उच्च गुणवत्ता का था और समुदाय के सदस्यों द्वारा इसका अच्छी तरह से उपयोग किया गया था।

अध्याय 7: विविध परियोजनाएँ

इस अध्याय में टीएचडीसी प्रकृति, टीएचडीसी सक्षम और टीएचडीसी समर्थ के सीएसआर क्षेत्र के अंतर्गत क्रियान्वित विविध सीएसआर पहलों का विवरण है। पर्यावरण संरक्षण, वृद्धों और दिव्यांगों की देखभाल तथा सशक्तिकरण के लिए पहलों पर अगले भाग में चर्चा की गई।

तालिका 7.1 : सीएसआर परियोजनाओं की सूची

क्रम सं.	परियोजना का नाम	गतिविधि	स्थान	समय(अवधि)	लागत (लाखों में)
टीएचडीसी प्रकृति (पर्यावरण) - पर्यावरण संरक्षण पहल					
1.	सनदाना जलसंभर परियोजनाएँ (नाबार्ड/सेवा-टीएचडीसी)	वाटरशेड विकास गतिविधियों का समर्थन करना	ब्लॉक जाखणीधार, टिहरी गढ़वाल	2019-21	29-27
टीएचडीसी सक्षम (सक्षम) - वृद्धों और दिव्यांगों की देखभाल					
2.	हरिद्वार जिले के विभिन्न सरकारी होम्योपैथिक अस्पतालों में शौचालय, रैंप और मरम्मत कार्यों का निर्माण	सीडीओ, हरिद्वार के माध्यम से शौचालय, रैंप और मरम्मत के लिए वित्तीय सहायता	रोशनाबाद और जगजीतपुर जिला हरिद्वार	2020-21	8.81
टीएचडीसी समर्थ (सशक्तिकरण) - सशक्तिकरण पहल					
3.	सैनिटरी नैपकिन उत्पादन की स्थापना	सैनिटरी नैपकिन के लिए प्रशिक्षण और विपणन के लिए समर्थन	जौली ग्रांट, जिला देहरादून	2020-21	8.68
टीएचडीसी विरासत (संस्कृति) - कला और संस्कृति संरक्षण और संवर्धन पहल					
4.	150 महिला मंडल दलों के लिए कीर्तन सामग्री की आपूर्ति	महिला मंडल दलों को कीर्तन सामग्री प्रदान करना	ब्लॉक कीर्तिनगर और हिंडोलाखाल, टिहरी गढ़वाल	2020-21	3.03

7.1 परियोजना 1

ब्लॉक जाखणीधार, टिहरी में सनदाना वाटरशेड परियोजनाएं (नाबार्ड/सेवा-टीएचडीसी)।

सीएसआर परियोजना	ब्लॉक जाखणीधार, टिहरी में सनदाना वाटरशेड परियोजनाएं (न टीएचडीसी)।
लाभार्थियों	कथूली, खोला, सनदाना, बिसातैली, कफलोग, पतुरी, रिंडोल, धारकोट, जवाल गांव मल्ला और जलवाल गांव तल्ला में रहने वाले लोग।
स्थान	कथूली गांव, मखोला, सनदाना, बिसाटली, कफलोग, पतुरी, रिंडोल, धारकोट, जलवाल गांव मल्ला और जलवाल
परियोजना लागत	रु. 29.27 लाख
क्रियान्वयन एजेंसी	श्री भुबनेश्वरी महिला आश्रम
परियोजना का उद्देश्य	वाटरशेड परियोजनाओं का विकास करना तथा लोगों के लिए आजीविका के अवसरों में सुधार करना

सतत विकास लक्ष्य के अनुरूप



चित्र 7.1: वर्मी कम्पोस्ट गड्ढा



चित्र 7.2 : वृक्षारोपण (नेपियर)

प्रारम्भ की गई पहलें

1. रिसाव टैंक
2. आरआर ड्राई मेसनरी दीवार
3. गैबियन चेक डैम
4. बांस रोपण
5. वृक्षारोपण (नेपर)
6. फलदार पौधों का प्रसार
7. कंटूर ट्रेंच
8. नर्सरी विकास
9. पॉलीहाउस
10. वर्मी कम्पोस्ट पिट

प्रासंगिकता

उच्च

सभी पहल वाटरशेड विकास की दिशा में की गई, जो मानव संसाधनों के संरक्षण, पुनर्जनन और उपयोग के लिए एक महत्वपूर्ण घटक है। वाटरशेड विकास के साथ विभिन्न गतिविधियाँ एक तरफ प्राकृतिक संसाधनों और दूसरी तरफ चरने वाले पशुओं के लिए बेहतर चारे के माध्यम से आजीविका सृजन के बीच पर्यावरण में सर्वोत्तम संभव संतुलन लाती हैं। यह गतिविधि अत्यधिक प्रासंगिक है क्योंकि यह भूजल स्तर को बढ़ाने, मिट्टी के कटाव को रोकने, हरित आवरण क्षेत्र को बढ़ाने के साथ-साथ श्रमदान या बढ़ी हुई कृषि उपज के रूप में लोगों को आजीविका प्रदान करने में मदद करती है।

प्रभावशीलता

उच्च

परियोजना का उद्देश्य काफी हद तक हासिल हो चुका है। इस पहल से लोगों को बेहतर आजीविका के अवसर मिले हैं, जिससे उनकी कमाई की क्षमता में वृद्धि हुई है। यह देखा गया कि वाटरशेड घटकों के विकास के बाद से क्षेत्र का हरित आवरण बढ़ा है। इसके अलावा, लोगों ने बताया कि वे अपनी कृषि पद्धतियों के लिए बहते पानी का उपयोग करने में सक्षम थे, जो पहले संभव नहीं था। इस हस्तक्षेप का लाभार्थियों के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है क्योंकि वे वाटरशेड विकास के तहत विभिन्न गतिविधियों के परिणामस्वरूप अधिक कमाने में सक्षम थे।

तालिका संख्या 7.2 : ग्रामीण विकास परियोजनाओं की सूची

क्रमांक	गतिविधि	हस्तक्षेप	विशिष्ट तथ्य	विशेष विवरण लाभ
1.	परकोलेशन टैंक	वाटरशेड विकास	2	भूजल पुनर्भरण, हरियाली में वृद्धि
2.	आरआर ड्राई मेसनरी वॉल	वाटरशेड विकास	81 आर एम	भूस्खलन से बचने के लिए सुरक्षा दीवारें
3.	गैबियन चेक डैम	वाटरशेड विकास	4	मिट्टी के कटाव पर नियंत्रण
4.	बांस प्लांटेशन	वाटरशेड विकास	1200 पौधे	खाली पहाड़ियों पर लगाए जाने वाले पौधे, क्योंकि वे जड़ों को पकड़ते हैं और अपनी जड़ों में पानी को रोक कर रखते हैं
5.	प्लांटेशन (नाइपर)	आजीविका	200 पौधे 51 लाभार्थी	पशुओं के चारे के रूप में इस्तेमाल की जाने वाली घास दूध की गुणवत्ता बढ़ाती है

6.	फलों के पौधों का प्रसार	आजीविका	2160 पौधे	अखरोट, नींबू, सेब और आंवला के पौधे जिनकी उपज बिक्री के लिए उपलब्ध है
7.	समोच्च खाइयां	वाटरशेड	992	सतही जल प्रवाह वेग को कम करना, अंतःस्यंदन को बढ़ावा देना, तथा जल निकायों में जल निकासी के लिए प्रदूषण को रोकना
8.	नर्सरी विकास आजीविका	आजीविका	1	पॉलीहाउस में बीजों की नर्सरी तैयार की गई, जिसे अंकुरित होने पर खेतों में लगाया गया। लाभार्थी ने लगभग एक क्विंटल आलू और प्याज की फसल उगाई और अच्छा मुनाफा कमाया।
9.	पॉलीहाउस	आजीविका	1	प्याज, पपीता, मिर्च, आलू और शलजम की उपज से अच्छा लाभ मिलता है
10.	वर्मी कम्पोस्ट गड्ढा	आजीविका	20	6 में से 4 पूरी तरह कार्यात्मक, 2 भंडारण के रूप में उपयोग किए जाते हैं

क्षमता

उच्च

यह पहल अत्यधिक प्रभावी रही है क्योंकि इसने हरित क्षेत्र और आजीविका के अवसरों के वृद्धि में योगदान दिया है। भूजल पुनर्भरण और मृदा संरक्षण की पहल सफलतापूर्वक पूरी की गई।

प्रभाव

उच्च

हस्तक्षेप के परिणामस्वरूप लाभार्थी अधिक आय अर्जित करने में सक्षम हुए, इसके अलावा वाटरशेड विकास घटकों के निर्माण के बाद से भूस्खलन की कोई सूचना नहीं मिली। हस्तक्षेप के कारण हरित आवरण क्षेत्र में वृद्धि हुई है और बेहतर जल प्रबंधन सुविधाओं के परिणामस्वरूप कृषि पद्धतियों में सुधार हुआ है।

सुसंगति

उच्च

यह पहल सेवा-टीएचडीसी, नाबार्ड, एसबीएमए के साथ-साथ सामुदायिक भागीदारी का एक संयुक्त प्रयास है और पर्यावरण की आवश्यकता के साथ अत्यधिक सुसंगत है।

यह पहल अपने में टिकाऊ है क्योंकि निर्मित संरचनाएं भविष्य में लंबे समय तक उपयोग की जाने वाली थीं। इसके अलावा, पॉलीहाउस, नर्सरी और फलों के बागान भी भविष्य में लंबे समय तक लोगों को लाभान्वित करने वाले थे। इसलिए, यह पहल अपने दृष्टिकोण में टिकाऊ है।

समग्र मूल्यांकन

संदाना वाटरशेड परियोजना में 10 अलग-अलग पहल शामिल हैं। इस परियोजना ने क्षेत्र के हरित आवरण में उल्लेखनीय सुधार किया और जल संरक्षण, मृदा अपरदन की रोकथाम और पीएचडी की आजीविका को बढ़ाने में योगदान दिया। परियोजना का समग्र प्रदर्शन अच्छा रहा।

केस स्टडी-1 पॉलीहाउस- रमेश चंद्र

श्री रमेश चंद्र पेशे से किसान हैं। उनका 11 सदस्यों का संयुक्त परिवार है, जिसमें केवल उनके भाई और वह कमाने वाले सदस्य थे। उनके भाई दिहाड़ी मजदूरी करते हैं, जबकि वह खेती का काम करते थे। वर्ष 2020-21 के दौरान, नाबार्ड के सहयोग से सेवा-टीएचडीसी द्वारा विभिन्न पहल के तहत रमेश चंद्र ने सब्जियों की खेती के लिए पॉलीहाउस बनवाया। अपनी पहली उपज के दौरान उन्हें सहायता प्रदान की गई और उन्हें अपनी उपज की देखभाल और रखरखाव के बारे में सिखाया गया। परिणाम अच्छे थे, लेकिन बहुत अधिक लाभ मार्जिन नहीं था। हालांकि, रमेश ने उम्मीद नहीं छोड़ी और अपने पूरे परिवार के सहयोग से उन्होंने अगले सीजन में पॉलीहाउस में आलू उगाए। उन्होंने 2 क्विंटल आलू और प्याज का उत्पादन किया और इससे बहुत अच्छा लाभ कमाया। मूल्यांकन टीम के साथ बातचीत के दौरान, उन्होंने बताया कि उनके परिवार की महिलाओं ने भी पॉलीहाउस में उपज की देखभाल के लिए उनका समर्थन किया है और वह इस पहल से बहुत खुश हैं और उन्हें यह अवसर देने के लिए सेवा-टीएचडीसी का हमेशा आभारी हैं।



केस स्टडी-2

सेब का पौधारोपण

वर्ष 2020-21 में -टीएचडीसी ने नाबार्ड के सहयोग से फलों के पौधे उपलब्ध कराए। कई किसानों को बीज, पौधे और देखभाल के लिए प्रशिक्षण मिला और उन्होंने पौधारोपण बढ़ाया। श्री रणवीर सिंह पंवार को भी बीज और प्रशिक्षण के साथ कुछ पौधे मिले। उन्हें सेब के पौधों के लिए प्रशिक्षण के साथ-साथ सहायता भी मिली। अपने शुरुआती वर्षों में उन्होंने पौधों की देखभाल की और इससे उन्हें कुछ भी कमाई नहीं हुई। उनके कई अधीनस्थ किसानों ने प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद हार मान ली, लेकिन उन्होंने अपना प्रयास जारी रखा। आज उनके पास लगभग 25 नाली जगह में सेब के बागान हैं और हाल ही में उन्होंने अपनी उपज से 35,000 रुपये कमाए हैं।

7.2 परियोजना 2

विभिन्न सरकारी होम्योपैथिक अस्पतालों में शौचालय, रैंप का निर्माण और मरम्मत कार्य

सतत विकास लक्ष्य के अनुरूप



सीएसआर परियोजना 2	हरिद्वार जिले के विभिन्न सरकारी होम्योपैथिक अस्पतालों में शौचालय, रैंप का निर्माण और मरम्मत कार्य
लाभार्थी	दिव्यांगजन, वृद्ध लोग, गठिया/ऑस्टियोपोरोसिस के रोगी आदि
स्थान	होम्योपैथिक अस्पताल, जिला: हरिद्वार
परियोजना लागत	8.81 लाख रुपये
कार्यान्वयन एजेंसी	मुख्य विकास अधिकारी (सीडीओ) जिला हरिद्वार
परियोजना का उद्देश्य	सभी लोगों के बीच समावेशिता को बढ़ावा देने के लिए शौचालय और रैंप का प्रावधान



चित्र 7.3 : जिला होम्योपैथिक चिकित्सालय कार्यालय, हरिद्वार



चित्र 7.4 : जिला होम्योपैथिक अस्पताल, रोशनाबाद में निर्मित शौचालय

परियोजना का संक्षिप्त विवरण

सेवा-टीएचडीसी ने अपनी सीएसआर पहल के तहत हरिद्वार जिले के विभिन्न सरकारी होम्योपैथिक अस्पतालों में शौचालय, रैंप और मरम्मत कार्य का निर्माण किया। विभिन्न अस्पताल जहां शौचालय, रैंप और मरम्मत कार्य किए गए हैं, वे हैं:

- राजकीय होम्योपैथिक अस्पताल, जिला अस्पताल, हरिद्वार
- राजकीय होम्योपैथिक अस्पताल, रोशनाबाद, हरिद्वार
- राजकीय होम्योपैथिक अस्पताल, जगजीतपुर, हरिद्वार एवं
- जिला होम्योपैथिक चिकित्सा अधिकारी का कार्यालय, रोशनाबाद, हरिद्वार

पहल का मूल्यांकन

प्रासंगिकता

उच्च

यह परियोजना इसलिए प्रासंगिक है क्योंकि यह होम्योपैथिक अस्पताल में आने वाले दिव्यांगजनों और वृद्ध लोगों के लिए गतिशीलता और स्वच्छता संबंधी मुद्दों को संबोधित करती है। अस्पताल में आने वाले वृद्ध लोगों ने बताया कि रैंप के बिना उन्हें कठिनाई का सामना करना पड़ता था।

प्रभावशीलता

उच्च

इन रैम्पों का उपयोग दिव्यांगजनों और बुजुर्गों के साथ-साथ गठिया और ऑस्टियोपोरोसिस से पीड़ित रोगियों द्वारा किया जा रहा है। होम्योपैथिक अस्पताल में निर्मित शौचालय अब रोगियों को स्वच्छता सुविधा की उपलब्धता में मदद कर रहे हैं।

क्षमता

उच्च

निर्मित सुविधाएं पूरी तरह से चालू हैं और सभी रोगियों और आगंतुकों के उपयोग के लिए उपलब्ध हैं।

प्रभाव

उच्च

बुजुर्ग और दिव्यांगजनों के लिए अब अस्पताल आना सुविधाजनक हो गया है क्योंकि वे आसानी से व्हीलचेयर का उपयोग कर सकते हैं। परिणामस्वरूप, अस्पताल परिसर में स्वच्छता और सफाई के मानक में सुधार हुआ है।

सुसंगति

उच्च

यद्यपि वृद्धजनों और दिव्यांगजनों की सुविधा के लिए कई सरकारी योजनाएं हैं, फिर भी भविष्य में हस्तक्षेप की योजना व्यवहार्यता के अनुसार बनाई जा सकती है।

स्थिरता

उच्च

निर्मित सुविधा को भविष्य में मरम्मत और रखरखाव के लिए अस्पताल प्रशासन को सौंप दिया गया है तथा विभागीय बजट से उपलब्ध कराई गई धनराशि से इसका रखरखाव किया जा सकेगा।

समग्र मूल्यांकन

इस पहल से होम्योपैथिक अस्पतालों के साथ बुनियादी सुविधाएं भी जुड़ीं, जिनका उपयोग वृद्ध लोगों, गठिया/ऑस्टियोपोरोसिस के रोगियों आदि द्वारा सक्रिय रूप से किया गया।

जिला अस्पताल रोशनाबाद में रैंप का निर्माण:

होम्योपैथिक जिला अस्पताल रोशनाबाद में काफी समय से दिव्यांगजन मरीजों की आमद देखी जा रही है, लेकिन अस्पताल में इन मरीजों के लिए सुविधाओं का अभाव है, जिससे उन्हें कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ता है। वर्ष 2020-21 में सेवा-टीएचडीसी ने अपनी सीएसआर पहल के तहत अस्पताल परिसर में दिव्यांगजन मरीजों के लिए शौचालय और रैंप का निर्माण कराया था। रैंप के कारण अब मरीजों को अस्पताल की सुविधाओं तक आसानी से पहुंच मिल रही है। वे सीढ़ियों पर किसी की मदद के बजाय खुद ओपीडी तक पहुंच सकते हैं। इसके अलावा दिव्यांगजन परिसर में शौचालय की सुविधा का आसानी से उपयोग कर सकते हैं। चिकित्सा अधिकारी से चर्चा करने पर उन्होंने बताया कि रैंप और वॉशरूम ने परिसर में लोगों के लिए समावेशिता पैदा की है और दिव्यांगजनों के अलावा, सुविधाओं का उपयोग वृद्ध लोग, गठिया/ऑस्टियोपोरोसिस के रोगी आदि भी करते हैं। साथ ही उन्होंने बताया कि लोग इस पहल से संतुष्ट हैं।



7.3 परियोजना 3

सैनिटरी नैपकिन उत्पादन इकाई की स्थापना

सीएसआर परियोजना 2	सैनिटरी नैपकिन उत्पादन इकाई की स्थापना
लाभार्थी	जॉली ग्रांट क्षेत्र में महिला एसएचजी
स्थान	जॉली ग्रांट, जिला: देहरादून
परियोजना लागत	8.68 लाख रुपये
कार्यान्वयन एजेंसी	पीएचडी ग्रामीण विकास फाउंडेशन
परियोजना का उद्देश्य	एसएचजी महिलाओं को सैनिटरी नैपकिन उत्पादन कौशल प्रदान करना, जिससे आजीविका के अवसर पैदा होंगे।

सतत विकास लक्ष्य के अनुरूप



चित्र 7.5 : स्वयं सहायता समूह द्वारा सैनिटरी नैपकिन पैक



चित्र 7.6 : उत्पादन केंद्र पर स्वयं सहायता समूह "सहज" के सदस्य

परियोजना के बारे में

महिलाओं के लिए आजीविका सृजन: आजीविका सृजन के लिए सैनिटरी सेवा-टीएचडीसी द्वारा सीएसआर पहल के तहत जॉली ग्रांट स्थित सामाजिक एवं पर्यावरण केंद्र में सैनिटरी नैपकिन उत्पादन इकाई की स्थापना की गई। परियोजना से प्रभावित परिवारों की महिलाओं को "सहज" नामक स्वयं सहायता समूह में शामिल किया गया। इस पहल की स्थापना निम्नलिखित घटकों के आधार पर की गई: नैपकिन के उत्पादन और विपणन के लिए "सहज" नामक एक महिला स्वयं सहायता समूह का गठन किया गया।

प्रशिक्षण एवं कच्चा माल: पीएचडी ग्रामीण विकास फाउंडेशन द्वारा स्वयं सहायता समूह के लिए सैनिटरी नैपकिन उत्पादन और पैकेजिंग का प्रशिक्षण आयोजित किया गया तथा समूह को कार्य आरंभ करने के लिए कच्चा माल भी उपलब्ध कराया गया।

जागरूकता पैदा करना: महिलाओं में सैनिटरी नैपकिन के उपयोग के महत्व के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए आस-पास के इलाकों में जागरूकता शिविर आयोजित किए गए। अभियान के दौरान महिलाओं को मासिक धर्म स्वच्छता के बारे में जानकारी दी गई। साथ ही मुफ्त सैनिटरी पैक भी वितरित किए गए।

पहल का मूल्यांकन

प्रासंगिकता

उच्च

स्वयं सहायता समूह के माध्यम से महिला सशक्तिकरण समय की कसौटी पर खरा उतरा है और जॉलीग्रान्ट क्षेत्र में निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर की महिला समूह के लिए भी यही मॉडल अपनाया गया है। सैनिटरी नैपकिन उत्पादन इकाई को चलाने और प्रबंधित करने के लिए "सहज" नामक एक स्वयं सहायता संगठन बनाया गया था। स्वयं सहायता समूह के सदस्यों को सैनिटरी नैपकिन के उत्पादन तकनीकों और पैकेजिंग में प्रशिक्षित किया गया, जिन्हें स्वयं सहायता समूह के बैनर तले बेचा जाता है।

प्रभावशीलता

कम

इस पहल की शुरुआत वंचित महिलाओं के लिए कम लागत पर सैनिटरी नैपकिन बनाने के उद्देश्य से की गई थी। यह स्वयं सहायता समूह के सदस्यों के लिए आजीविका का साधन भी था। चूंकि उत्पाद हाथ से बनाया गया था, इसलिए इसमें फिनिशिंग की कमी थी। "सहज" अपने प्रतिस्पर्धियों की तुलना में महंगा साबित हुआ। इससे लाभ नहीं हुआ और अंततः इसे बंद कर दिया गया।

क्षमता

कम

सैनिटरी नैपकिन का प्रति यूनिट उत्पादन दूसरों की तुलना में कम था। चूंकि नैपकिन हाथ से बनाए जाते थे, इसलिए प्रतिदिन केवल 600 पैड ही बनाए जा सकते थे, जबकि अध्ययनों से अनुमान लगाया गया है कि कम से कम 1500 पैड (खाताबुक: सैनिटरी नैपकिन निर्माण व्यवसाय शुरू करना के अनुसार [1]) बनाए जा सकते हैं।

प्रभाव

मध्यम

हालांकि जागरूकता अभियान बहुत सफल रहा। जॉली ग्रान्ट और उसके आसपास के इलाकों में शिविर आयोजित किए गए। हालांकि निवासियों ने सैनिटरी नैपकिन के उपयोग के महत्व को पहचानना शुरू कर दिया और अब इसका उपयोग करना शुरू कर दिया है। चूंकि पहल बंद हो गई है, इसलिए इसका प्रभाव मध्यम श्रेणी का है।

सुसंगति

उच्च

यह पहल सेवा-टीएचडीसी और पीएचडी ग्रामीण विकास फाउंडेशन द्वारा महिला स्वयं सहायता समूहों के लिए आजीविका सृजन और महिलाओं में स्वच्छता के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए संयुक्त प्रयास है। यह पहल भारत सरकार की मासिक धर्म स्वच्छता योजना के साथ संरेखित है।

[1] <https://khatabook.com/blog/sanitary-napkin-business/>

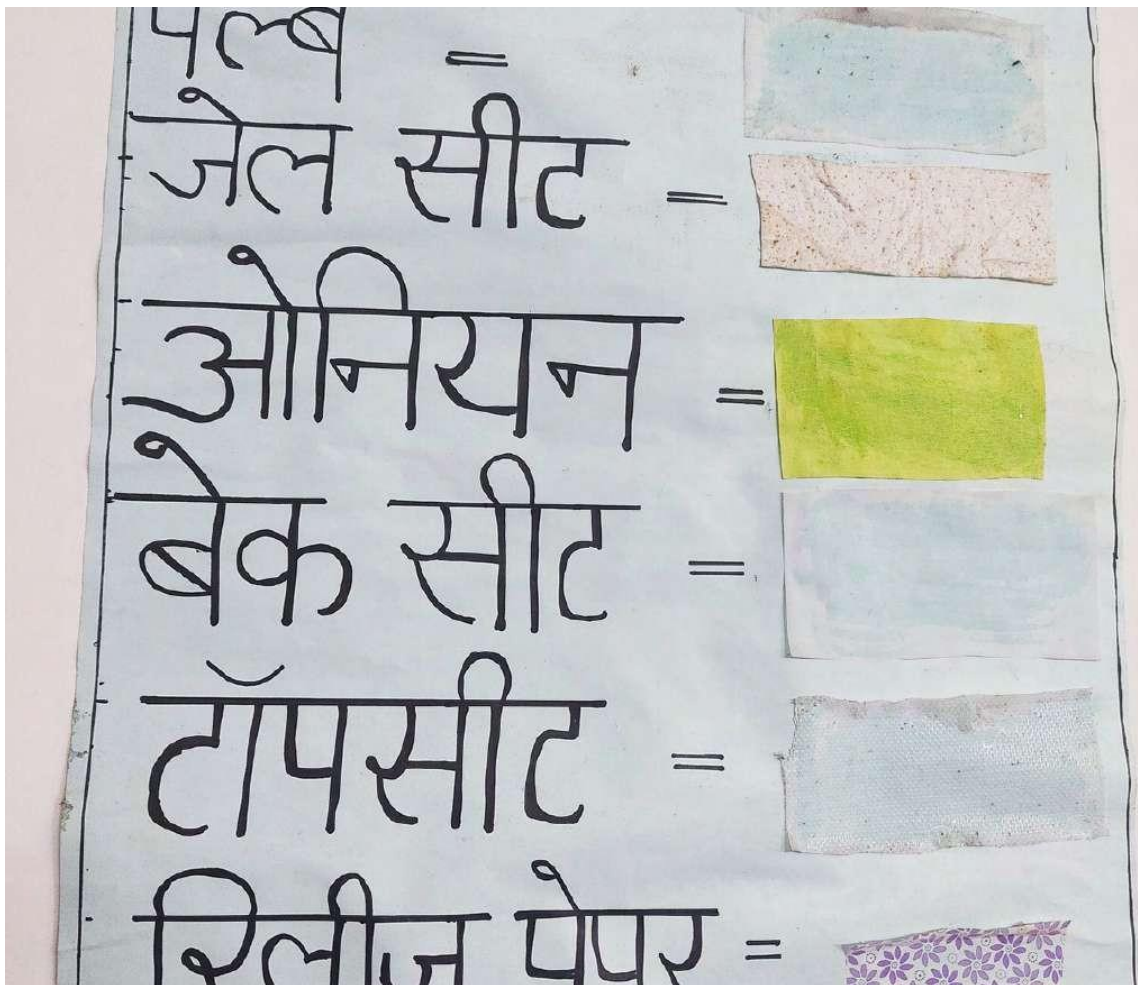
चूंकि यह लाभ कमाने में असमर्थ था, इसलिए यह प्रयास खुद को बनाए रखने में सक्षम नहीं था। पीएचडी ग्रामीण विकास फाउंडेशन या सेवा-टीएचडीसी के समर्थन के बिना एसएचजी के लिए पहल का लाभ मार्जिन बहुत कम था।

समग्र मूल्यांकन

यह पहल सैनिटरी नैपकिन के उत्पादन के बारे में प्रशिक्षण प्रदान करने में सफल रही, हालांकि यह आय पैदा करने वाली गतिविधि नहीं बन सकी। यह गतिविधि अत्यधिक सुसंगत है।

सुझाव

संयंत्र को पुनर्जीवित करने के लिए कच्चे माल की खरीद के लिए स्वयं सहायता समूह का सीधा संपर्क और उत्पाद की बिक्री के लिए सीधा बाजार संपर्क स्थापित किया जा सकता है। अंततः उत्पाद की गुणवत्ता में सुधार के लिए और अधिक तकनीकें अपनाई जा सकती हैं।



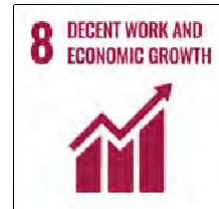
चित्र 7.7 : सैनिटरी नैपकिन बनाने में प्रयुक्त कच्चा माल

7.4 परियोजना 4

ब्लॉक कीर्तिनगर एवं हिंडोलाखाल (टिहरी) के 150 महिला मंडल दलों के लिए कीर्तन सामग्री की आपूर्ति

सीएसआर परियोजना 2	150 महिला मंडल दल के लिए कीर्तन सामग्री की आपूर्ति
लाभार्थी	ब्लॉक कीर्तिनगर और हिंडोलाखाल, जिला: टिहरी गढ़वाल
स्थान	ब्लॉक कीर्तिनगर और हिंडोलाखाल, जिला: टिहरी गढ़वाल
परियोजना लागत	रु. 3.03 लाख
कार्यान्वयन एजेंसी	सेवा-टीएचडीसी
परियोजना उद्देश्य	सामुदायिक गतिविधियों के लिए महिला मंडल दल के समर्थन के लिए कीर्तन सामग्री का प्रावधान

एसडीजी के अनुरूप



चित्र 7.8 : महिला मंडल दल को
कीर्तन सामग्री दी गई

परियोजना के बारे में संक्षिप्त जानकारी

कला और संस्कृति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से, सेवा-टीएचडीसी ने ब्लॉक कीर्तिनगर और हिंडोलाखाल में महिला मंडलों (150) की पहचान की। प्रत्येक को एक सेट कीर्तन सामग्री दी गई जिसमें मंजीरा सेट, चिमटा पीतल चढ़ाया हुआ मंजीरा सेट, ढोलक, हाथ करताल और दरी शामिल हैं। इन महिला दलों ने त्योहारों, विवाह, जन्मदिन, समारोह और विशिष्ट पूजा के अवसर पर भजन/कीर्तन कार्यक्रम आयोजित किए।

पहल का मूल्यांकन

प्रासंगिकता

उच्च

महिला मंडल दल को कीर्तन सामग्री उपलब्ध कराई गई, जिसकी उन्हें अपने समुदायों में विभिन्न धार्मिक भजन और कीर्तन कार्यक्रम आयोजित करने के लिए आवश्यकता थी, जिससे कीर्तन की संस्कृति को बढ़ावा मिला। इस प्रकार यह योगदान अत्यंत प्रासंगिक था।

प्रभावशीलता

उच्च

मूल्यांकन दल ने महिला मंडल दल से बातचीत की, जिन्होंने बताया कि वे अवसरों और त्योहारों के दौरान भजन/कीर्तन करते हैं। वे उत्सव के अवसर के आधार पर 500 रुपये से लेकर 3000 रुपये तक का शुल्क लेते हैं। यह शुल्क दल द्वारा साझा किया जाता है और इस प्रकार वे अपने परिवार के खर्चों में आर्थिक रूप से योगदान करते हैं। इस प्रकार यह पहल प्रभावी है।

क्षमता

मध्यम

वैसे तो यह पहल महिला मंडल दल के लिए बहुत मददगार है, लेकिन वर्ष 2020-21 के दौरान सार्वजनिक समारोहों (कोविड-19 प्रोटोकॉल) पर प्रतिबंध के कारण महिला दल की आय प्रभावित हुई। इसलिए वर्ष 2020-21 के लिए पहल की दक्षता मध्यम मानी जाती है।

प्रभाव

उच्च

महिला मंडल दल को कीर्तन के लिए वाद्य यंत्र उपलब्ध कराए गए हैं, ताकि वे विभिन्न सांस्कृतिक और कीर्तन/भजन कार्यक्रम आयोजित कर सकें, जिससे वे अपना भरण-पोषण कर सकें और परिवार की आय में योगदान दे सकें। इस हस्तक्षेप के कारण, 900 से अधिक महिलाएँ अपने परिवार की आय में योगदान दे सकीं। इसलिए प्रभाव को उच्च श्रेणी में रखा गया है।

सुसंगति

उच्च

महिला मंडल दल एक समूह के रूप में कार्य कर रहे हैं और भजन और कीर्तन की संस्कृति और परंपरा के संरक्षण में योगदान दे रहे हैं, जिससे कला और संस्कृति को बढ़ावा देने में सहायता मिलती है।

स्थिरता

उच्च

महिला मंडल दल विभिन्न समारोहों में भजन/कीर्तन का आयोजन करता है और अपनी आजीविका चलाता है। महिला मंडल दल भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन करेगा, ताकि इस पहल की उच्च स्थिरता सुनिश्चित हो सके।

समग्र मूल्यांकन

यह पहल महिला मंडल दल को बुनियादी कीर्तन सामग्री उपलब्ध कराने और उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार लाने में सफल रही है।

निष्कर्ष

सेवा-टीएचडीसी द्वारा की गई सीएसआर पहलों में विविधता देखने को मिलती है। इस अध्याय में टीएचडीसी प्रकृति, टीएचडीसी समर्थ, टीएचडीसी सक्षम और टीएचडीसी विरासत के उपक्षेत्र के अंतर्गत सीएसआर परियोजनाओं को प्रस्तुत किया गया है। उत्पाद की निम्न गुणवत्ता के कारण सैनिटरी नैपकिन उत्पादन इकाई की स्थापना को छोड़कर सभी परियोजनाओं को उच्च दर्जा दिया गया। सीएसआर पहलों ने जॉली ग्रांट, टिहरी गढ़वाल, देहरादून और हरिद्वार के क्षेत्र से परियोजना से जुड़े परिवारों को लक्षित किया था।

अध्याय 8: खोज और निष्कर्ष

कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व एक कंपनी द्वारा किया जाने वाला रणनीतिक निवेश है जो व्यवसाय संचालन के दौरान अपनी सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक और पर्यावरणीय चिंताओं को परिभाषित करने और नकारात्मक प्रभाव को कम करने और सामाजिक प्रभाव से प्रेरित स्केलेबल टिकाऊ और सार्थक सीएसआर पहलों के माध्यम से सकारात्मक प्रभाव को बढ़ाने के लिए गतिविधियों की एक श्रृंखला की योजना बनाने और उसे शुरू करने में सहायता करता है। सीएसआर नियमों में हाल ही में किया गया संशोधन 2021 सीएसआर परिचय > 1 करोड़ और 10 करोड़ रुपये (बाहरी स्वतंत्र एजेंसी के माध्यम से) के साथ अनिवार्य सीएसआर प्रभाव आकलन के लिए दिशानिर्देश प्रदान करता है।

सीएसआर रणनीतियाँ कंपनी को पर्यावरण और शेयरधारकों, उपभोक्ताओं, कर्मचारियों, निवेशकों, समुदायों और अन्य सहित हितधारकों पर सकारात्मक प्रभाव डालने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। अक्सर संगठनात्मक स्तर पर एक अभिन्न व्यावसायिक कार्य के रूप में माना जाता है जो ब्रांड की प्रतिष्ठा में योगदान देता है टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी पहल सफल होने के लिए, सुसंगत होना चाहिए और इसे अपनी व्यावसायिक रणनीति में शामिल किया जाना चाहिए" टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड रणनीतिक या नैतिक कारणों से भी सीएसआर में संलग्न है। ये क्रियाएं रणनीतिक दृष्टिकोण से व्यावसायिक लाभप्रदता में योगदान करती हैं, खासकर जब कंपनियां अपनी गतिविधियों के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभावों की सक्रिय रूप से स्वयं रिपोर्ट करती हैं। ये लाभ आंशिक रूप से अनुकूल सार्वजनिक संबंधों में सुधार और कंपनी की कार्रवाइयों के लिए जिम्मेदारी स्वीकार करके व्यावसायिक और कानूनी जोखिम को कम करने के लिए उच्च नैतिक मानकों को बनाए रखने से प्राप्त होते हैं। सीएसआर के दो बुनियादी मार्गदर्शक सिद्धांत सीएसआर प्रभाव आकलन की योजना बनाने, संचालन करने और उसका विश्लेषण करने में सबसे आगे रहे हैं 1) ट्रिपल बॉटम लाइन दृष्टिकोण (लाभ के साथ-साथ ग्रह और लोगों की चिंता) 2) हितधारक जुड़ाव (सीएसआर योजना और कार्यान्वयन में प्रभावी और प्रासंगिक हितधारक संवाद और भागीदारी)।

वर्तमान अध्याय वित्त वर्ष 2020-21 में सेवा-टीएचडीसी द्वारा निष्पादित 25 सीएसआर परियोजनाओं के व्यापक स्पेक्ट्रम के मूल्यांकन के माध्यम से उभरने वाले और प्राप्त निष्कर्षों की झलक प्रदान करता है।

सीएसआर प्रभाव आकलन और समीक्षा से प्राप्त प्रमुख निष्कर्ष संक्षेप इस प्रकार हैं:

*** लाभार्थियों की संख्या और प्रभावितों की संख्या:** टीएचडीसीआईएल ने अपने सीएसआर हस्तक्षेपों के माध्यम से लगभग 4 लाख लोगों के जीवन को प्रभावित किया है। स्वास्थ्य, शिक्षा, पर्यावरण, ग्रामीण विकास, महिला सशक्तिकरण और कौशल विकास के क्षेत्र में सेवा-टीएचडीसी द्वारा कार्यान्वित सीएसआर पहलों के माध्यम से 392043 से अधिक लाभार्थियों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से लाभ पहुंचाया गया है।

*** पहुँचे और प्रभावित हुए गाँवों की संख्या:** उत्तराखंड के 6 प्रमुख जिलों के लगभग 150 गाँव। परियोजनाओं को ऋषिकेश, देहरादून, हरिद्वार, टिहरी, कोटेश्वर और श्रीनगर के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में लागू किया गया। सीएसआर पहलों की विविधतापूर्ण प्रकृति ग्रामीण क्षेत्रों में 150 से अधिक गाँवों तक पहुँची, जिसका विभिन्न जनसंख्या समूहों, विशेष रूप से वंचित, ज़रूरतमंद और गरीबों पर विभिन्न सामाजिक प्रभाव पहलों के पैमाने और भूगोल पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

*** स्वास्थ्य क्षेत्र पर प्रभाव:** स्वास्थ्य पहल सबसे बड़ी और विविध थी जो स्थानीय क्षेत्र की बुनियादी स्वास्थ्य आवश्यकताओं, सेवाओं और स्वास्थ्य अवसंरचना और सहायक उपकरणों की आवश्यकता के साथ-साथ विभिन्न जनसंख्या समूहों विशेष रूप से बच्चों, महिलाओं और बुजुर्गों के मौजूदा स्वास्थ्य मुद्दों और चुनौतियों के आधार पर नियोजित निवारक और उपचारात्मक स्वास्थ्य सेवाओं पर निर्भर थी।

*** कोविड महामारी स्वास्थ्य राहत, पुनर्वास और स्वास्थ्य सेवा वितरण :** संकट में फंसे स्थानीय ग्रामीणों की चिकित्सा सहायता, नैदानिक, सुरक्षात्मक और उपचारात्मक स्वास्थ्य सेवाओं की गहन आवश्यकता के कारण कोविड राहत उपायों पर सीएसआर प्रयासों का विशेष जोर और एकाग्रता केंद्रित की गई। पहल का उद्देश्य स्थानीय जरूरतों के आधार पर दूरस्थ और दूरदराज के गाँवों तक विभिन्न स्वास्थ्य सुरक्षा उपकरण, चिकित्सा सहायता और राहत सेवाएं प्रदान करना है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि कोई भी जरूरतमंद या पीड़ित व्यक्ति वंचित न रहे, साथ ही जमीनी स्तर पर कोविड राहत और स्वास्थ्य देखभाल हस्तक्षेपों तक समान पहुंच के लिए विविधता समावेशन और समानता का दृष्टिकोण अपनाया गया।

*** शिक्षा और सीखने पर केंद्रित प्रभाव हस्तक्षेप:** शिक्षा क्षेत्र में सीएसआर पहल की योजना बनाई गई और शैक्षिक किट वितरण, महामारी के प्रकोप के कारण बाधित स्कूलों को नियमित करने, स्कूलों को सहायता देकर अनुकूल शिक्षण वातावरण बनाने, शिक्षण उपकरण सहायता और जहाँ भी आवश्यक हो, बुनियादी ढाँचे का समर्थन करने के इर्द-गिर्द केंद्रित थी। पहल को अधिकांश मापदंडों पर उच्च दर्जा दिया गया, सिवाय स्थिरता के, क्योंकि स्कूल वर्तमान में सेवा-टीएचडीसी से तकनीकी वित्तीय और बुनियादी ढाँचे के समर्थन के बिना एक स्वतंत्र निकाय के रूप में नहीं चल सकता है।

*** कौशल संवर्धन आजीविका सहायता और उद्यमशीलता प्रशिक्षण और विकास पहल:** ग्रामीण/शहरी युवाओं के लिए पीआरए और आरआरए तथा अन्य गुणात्मक शोध विधियों पर आधारित विविध आवश्यकता आधारित गतिविधियों की योजना बनाई गई और उन्हें संचालित किया गया, ताकि उनके करियर के अवसरों में वृद्धि हो, आजीविका के अवसरों का दायरा बढ़े और स्थानीय उद्योगों की मांग के आधार पर नए कौशल विकास की जानकारी मिले। प्रमुख युवा विकास गतिविधियों में युवा कंप्यूटर प्रशिक्षण, मशरूम उत्पादन प्रशिक्षण, सतत आजीविका पहल और वाटरशेड विकास पहल शामिल थीं।

* **सामुदायिक परिसंपत्तियां और अवसंरचना समर्थन एवं विकास:** ग्रामीण विकास पहल गांवों की स्थानीय आवश्यकताओं के आसपास केंद्रित है, जैसे सामुदायिक केंद्र में सुविधाएं, बुनियादी स्वास्थ्य और शिक्षा अवसंरचना का उन्नयन और आय सृजन सहायता और अनुपूरण के लिए स्वयं सहायता समूहों का निर्माण, साथ ही जल संरक्षण पहल। इन पहलों की लोगों द्वारा अत्यधिक सराहना की गई और सामुदायिक समर्थन अवसंरचना और सेवाओं से उभरकर 25,000 से अधिक लोगों के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

* **कमज़ोर, हाशिए और जोखिम में पड़े समूह:** वर्ष के दौरान वृद्धों और दिव्यांगों की देखभाल के लिए सहायक उपकरण, स्थानीय सांस्कृतिक पहलों का समर्थन और महिला सशक्तिकरण की दिशा में कई पहल की गईं। लाभार्थियों द्वारा इन पहलों की बहुत सराहना की गई और इससे उनके जीवन में समग्र रूप से सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

* **पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन पहल:** स्थानीय ग्रामीणों की आवश्यकताओं के आधार पर पर्यावरण संरक्षण एवं स्वच्छता, संरक्षण, हरियाली और जलाशयों/झीलों के संरक्षण के साथ-साथ स्थानीय खेती/कृषि में सहायता के लिए पहल की गई।

ओईसीडी मानदंड और रूपरेखा पर आधारित निष्कर्ष (वित्त वर्ष 20-21)

* **सीएसआर पहलों की प्रासंगिकता की सीमा:** सेवा-टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड द्वारा कार्यान्वित की गई 100% सीएसआर पहल सार्थक और प्रासंगिक पाई गईं। यह दर्शाता है कि सीएसआर पहलों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण, लाभार्थियों के आवश्यकता आधारित सर्वेक्षण के साथ-साथ सामुदायिक आवश्यकता पहचान के अन्य तरीकों के आधार पर चरणबद्ध तरीके से भागीदारी दृष्टिकोण के साथ सावधानीपूर्वक योजना और निष्पादन को दर्शाते हुए कार्यान्वित किया गया था।

* **सीएसआर पहलों की सुसंगतता की सीमा:** मूल्यांकन दल ने निष्कर्ष निकाला कि 96% पहल प्रकृति में सुसंगत थीं, जिनमें आगे के संबंध, करीबी निगरानी फीडबैक, कई सरकारी पहलों के साथ समन्वय में कुछ मध्य-पाठ्यक्रम सुधारों, राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य और रोजगार और शिक्षा अभियान पहलों और नीतियों की गुंजाइश थी, जिसमें यह रोडमैप प्रस्तुत करने की क्षमता थी कि आज के विकल्प भविष्य में जनसंख्या को कैसे प्रभावित कर सकते हैं।

* **सीएसआर पहलों की प्रभावशीलता की सीमा विभिन्न क्षेत्र (स्वास्थ्य, शिक्षा, आजीविका सहायता, सामुदायिक बुनियादी ढाँचा) से जुड़ी अधिकांश (80%) पहल लाभार्थियों के लिए अत्यधिक प्रभावी पाई गईं।** हालाँकि, 20% पहलों, यानी खाद्य वितरण, प्रयोगशाला का निर्माण, मशरूम प्रशिक्षण और उत्पादन केंद्र की स्थापना, जखोली गाँव में सामुदायिक केंद्र का निर्माण और सैनिटरी नैपकिन उत्पादन की स्थापना को गंभीरता के 3-बिंदु पैमाने पर मध्यम और निम्न माना गया। कम प्रभावशीलता परिचालन और कार्यान्वयन प्रभावशीलता और/या आय सृजन समर्थन पहलों में कम लाभ मार्जिन के कारण लाभार्थियों की कम भागीदारी के मुद्दों के कारण है।

*** सीएसआर पहलों की दक्षता की सीमा 74%** पहलों को उच्च दक्षता पर रेट किया गया जबकि 36% पहलों की दक्षता मध्यम से कम थी, अंतर्निहित कारण यह था कि पहलों से प्राप्त इनपुट वांछित परिणाम और इच्छित प्रभाव लाने में सक्षम नहीं थे। अन्य कारणों में लाभार्थियों की भागीदारी और प्रतिक्रिया की कमी के साथ-साथ परियोजना कार्यान्वयन एजेंसी और कर्मियों का दृष्टिकोण भी शामिल था, पहलों से प्राप्त इनपुट का पर्याप्त रूप से पालन नहीं किया गया था, परिणाम और प्रभाव निर्धारित करने के लिए निगरानी नहीं की गई थी। यह कमी परिचालन एजेंसी या लाभार्थियों की ओर से संसाधनों के वितरण और/या उपयोग में पाई गई।

*** सीएसआर पहलों की स्थिरता की सीमा अधिकांश (76%)** पहल टिकाऊ पाई गई, क्योंकि इन्हें बिना किसी निर्भरता के स्वामित्व और प्रबंधन के लिए समुदाय को सौंप दिया गया।

वर्ष 20-21 के लिए किए गए सीएसआर पहल विभिन्न जनसंख्या समूहों और क्षेत्रों में समुदायों की वास्तविक जरूरतों की एक विस्तृत श्रृंखला को संबोधित करने में सहायक थे। स्वास्थ्य, विकलांगता, शिक्षा, कौशल विकास, युवा और महिला सशक्तिकरण, प्रकृति संरक्षण, कोविड राहत और सहायता, उद्यमिता प्रशिक्षण और विकास और टिकाऊ सामुदायिक परिसंपत्तियों और बुनियादी ढांचे के निर्माण के क्षेत्र में अनुकूलित सार्थक और प्रासंगिक क्षेत्रवार हस्तक्षेपों से उत्तराखंड राज्य में टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के आसपास के 6 प्रमुख जिलों में फैले 150 से अधिक गांवों में सकारात्मक परिणाम और प्रभाव पड़ा है। विभिन्न विकास हस्तक्षेपों और क्षेत्रीय पहलों के माध्यम से जीवन में परिवर्तनकारी बदलाव के साथ, सेवा-टीएचडीसी सीएसआर पहल के माध्यम से उत्तराखंड राज्य में लगभग 4 लाख लोगों के जीवन को प्रभावित किया है।

अध्याय 9: सुझाव और अनुशंसा

आगे की राह.....

एसआर एशिया ने वित्त वर्ष 2020-21 में सेवा-टीएचडीसी द्वारा की गई सीएसआर पहलों के लिए प्रभाव आकलन अध्ययन किया। आकलन और समीक्षा प्रक्रिया में मूल्यांकन करने के लिए विभिन्न वैज्ञानिक और मजबूत लागू सामाजिक विज्ञान अनुसंधान उपकरणों का उपयोग किया गया। सीएसआर पहलों में सुधार के क्षेत्रों और नीति कार्यान्वयन के दृष्टिकोणों के लिए कुछ प्रमुख सुझाव और सिफारिशें इस प्रकार हैं।

- **सीएसआर कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के लिए समुदाय के नेतृत्व में भागीदारीपूर्ण योजना और निर्णय लेना:**

सीएसआर नीति नियोजन, क्रियान्वयन और निगरानी के प्रत्येक चरण में कार्यक्रम नियोजन और समुदाय की आवश्यकता की पहचान के लिए स्थानीय समुदायों के साथ भागीदारीपूर्ण दृष्टिकोण संरचित, सुनियोजित और सार्थक विकास केन्द्रित समुदाय के नेतृत्व में गुणवत्तापूर्ण सीएसआर हस्तक्षेप के लिए एक पूर्वापेक्षा है और इससे बेहतर परिणाम प्राप्त होंगे।

- **आईसीडीपी और क्षेत्रीय हस्तक्षेपों पर सीएसआर समिति का दोहरा फोकस** (जैसा कि टीएचडीसी नीति दृष्टिकोण और योजना के तहत पहले से ही परिकल्पित है) मुख्य रूप से एकीकृत सामुदायिक विकास कार्यक्रम (आईसीडीपी) पर, टिकाऊ सामुदायिक परिसंपत्तियों और बुनियादी ढांचे के निर्माण के संदर्भ में, जिसे बाद में स्थानीय समुदाय के नेताओं और ग्राम अधिकारियों द्वारा स्वामित्व और प्रबंधित किया जाएगा और संबंधित व्यापक उद्देश्यों के साथ-साथ स्वास्थ्य और विकासांगता, शिक्षा, कौशल विकास और उद्यमिता, महिला और युवा सशक्तिकरण के क्षेत्र में क्षेत्रीय हस्तक्षेप स्थितिजन्य विश्लेषण या सामुदायिक आवश्यकता पहचान सर्वेक्षण के आधार पर स्पष्ट रूप से पहचाने गए इनपुट आउटपुट प्रक्रिया और परिणाम संकेतकों को सुगम और मजबूत करेगा ताकि इच्छित प्रभाव को मापा और मूल्यांकन किया जा सके।

- **कौशल विकास, उद्यमिता प्रशिक्षण और आय सृजन सहायता पहलों के लिए सतत परिणाम हेतु बाजार समर्थन, सहायता और अग्रगामी एकीकरण संपर्क:** i) कौशल विकास और आय सृजन/आजीविका समर्थन सृजन से संबंधित परियोजनाओं के लिए, लाभार्थियों और बाजार के बीच एक संपर्क केवल प्रारंभिक चरणों में ही स्थापित किया जा सकता है, ताकि लाभार्थी कार्यान्वयन एजेंसी पर न्यूनतम निर्भरता के साथ सीधे बाजार में अपनी उपज बेच सकें। (ii) स्वयं-राजस्व सृजन प्रणाली का विकास, विशेष रूप से स्कूल परिसर में शाम को वैकल्पिक सुविधा/योग कक्षा आदि चलाकर स्कूल चलाने के लिए। इससे भवन से राजस्व बढ़ाने में मदद मिलेगी और उस धन का उपयोग स्कूल सुविधाओं को बेहतर बनाने के लिए किया जा सकता है।

- **भविष्य में पहल की आसान ट्रैकिंग और मूल्यांकन के लिए डेटाबेस प्रबंधन और पुनर्प्राप्ति जैसे कि आधारभूत जानकारी, लाभार्थियों के आंकड़े, कार्यान्वयन एजेंसी का विवरण, प्रगति रिपोर्ट आदि के लिए एक परियोजना आधारित प्रौद्योगिकी प्रबंधन प्रणाली की स्थापना की दृढ़ता से अनुशंसा की जाती है।** भविष्य में पहल की आसान ट्रैकिंग और मूल्यांकन के लिए डेटाबेस प्रबंधन और पुनर्प्राप्ति के लिए एक परियोजना आधारित प्रौद्योगिकी प्रबंधन प्रणाली स्थापित करने की दृढ़ता से अनुशंसा की जाती है, जैसे कि आधारभूत जानकारी, लाभार्थियों का डेटा, कार्यान्वयन एजेंसी का विवरण, प्रगति रिपोर्ट आदि।
- **सावधानीपूर्वक योजना एवं निकास रणनीति-सेवा-टीएचडीसी को सीएसआर कार्यान्वयन प्रक्रिया में लाभार्थियों और गैर सरकारी संगठनों की पूर्ण भागीदारी सुनिश्चित करनी चाहिए और तत्पश्चात निगरानी, फीडबैक और मूल्यांकन सुनिश्चित करना चाहिए, जिससे परियोजना कार्यान्वयन एजेंसी को परियोजना से स्पष्ट निकास में सुविधा होगी और पहल की दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित होगी।**
- **कार्यान्वयन में अंतराल की पहचान करने और यदि कोई समस्या हो तो उसे कम करने के लिए आवधिक एसडबलूओटी विश्लेषण, नकारात्मक प्रभाव को कम करने, कार्यक्रम की प्रभावशीलता और कार्यान्वयन की सीमा की पहचान करने के लिए लाभकारी होगा, ताकि अपेक्षित सकारात्मक परिणाम और प्रभाव को बढ़ाया जा सके।**
- **प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक हितधारकों के साथ सीएसआर परियोजना कार्यान्वयन के प्रत्येक चरण में विविध बहु-हितधारक संवाद और सहभागिता से आगामी चरणों में अपेक्षित पहलों की श्रृंखला को और बढ़ावा मिलेगा, विशेष रूप से स्थानीय विकास प्राधिकरणों, जमीनी स्तर के गैर सरकारी संगठनों और स्थानीय गांव और युवा नेताओं के साथ-साथ दूरदराज के आदिवासी गांवों के अल्पसंख्यक और जातीय समूहों सहित विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक क्षेत्रीय समूहों के नेताओं के साथ संवाद।**
- **कमजोर, वंचित और जोखिम वाले समूहों को प्राथमिकता देते हुए सीएसआर कार्यक्रम विकलांग व्यक्तियों, बुजुर्गों, गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाओं और बच्चों जैसे कमजोर समूहों की पहचान करने और उनके साथ मिलकर काम करने पर विशेष ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।**
- **सामाजिक प्रभाव कहानियों/प्रभाव पहलों के माध्यम से टीएचडीसी वार्षिक स्थिरता रिपोर्ट में सीएसआर नीतियों और कार्यक्रम परिणामों का एकीकरण और सामुदायिक विकास और पर्यावरण संरक्षण पहलों के लिए केस स्टडीज का दस्तावेजीकरण, जिसका उद्देश्य टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के आसपास के समुदायों के जीवन को बदलना और समुदायों के जीवन को बदलने में इसकी भूमिका और एसडीजी संचालित समुदाय केंद्रित सीएसआर नेतृत्व और स्थिरता पहलों के माध्यम से पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव डालना है।**

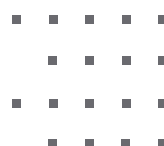
फोटो गैलरी

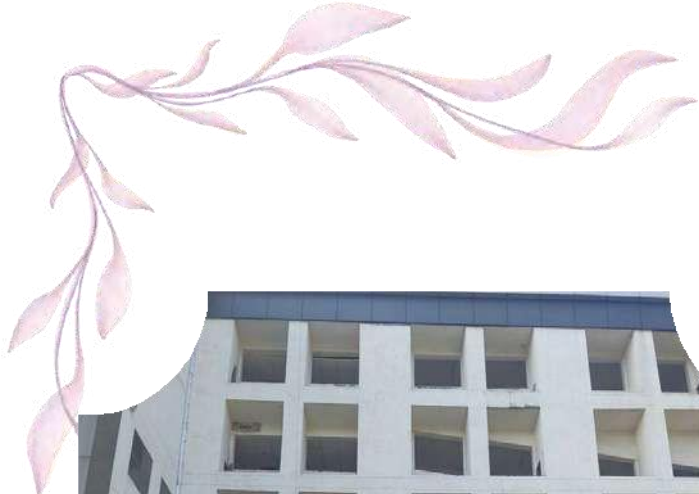




Haridwar, Uttarakhand, India
X3C6+W6H, Setor 8 A, BHEL Township, Haridwar,
Uttarakhand 249403, India
Lat 29.972404°
Long 78.060684°
26/11/22 12:05 PM GMT +05:30

Haridwar, Uttarakhand, India
NH 58, Bahadurabad, Haridwar, Uttarakhand 249403, India
Lat 29.921581°
Long 78.039187°
26/11/22 12:39 PM GMT +05:30





Dehradun, Uttarakhand, India
82CR+8PQ, Nardev Shastri Marg, Tehsil Chowk, R
Course, Dehradun, Uttarakhand 248001, India
Lat 30.32064°
Long 78.042027°
29/11/22 03:04 PM GMT +05:30



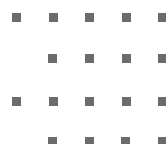
Dehradun, Uttarakhand, India
74, 74, Pritam Rd, Panchpuri Colony, Dalanwala,
Dehradun, Uttarakhand 248001, India
Lat 30.312642°
Long 78.052789°
29/11/22 02:36 PM GMT +05:30

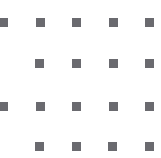


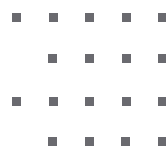
Dehradun, Uttarakhand, India
29/30, East Rest Camp, Govind Nagar, Race Course
Dehradun, Uttarakhand 248001, India
Lat 30.31172°
Long 78.038445°
29/11/22 03:54 PM GMT +05:30



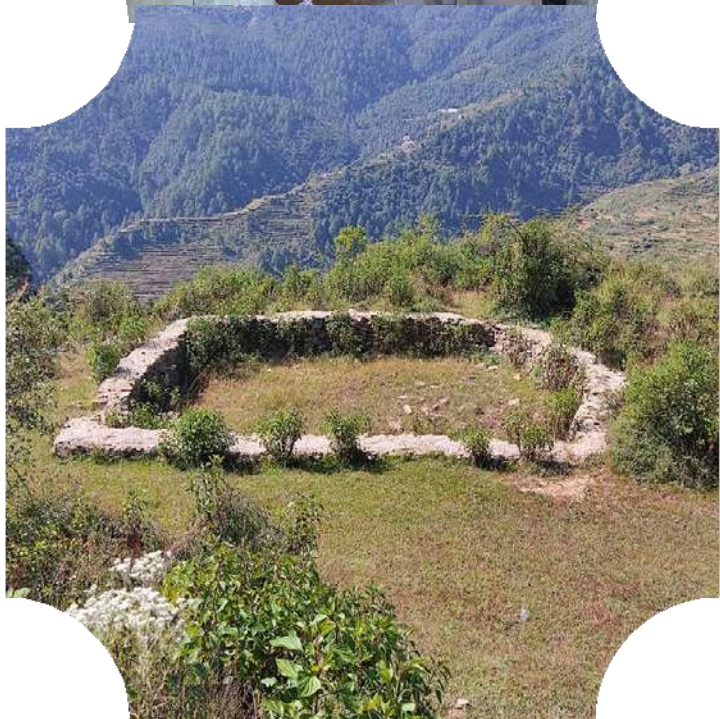
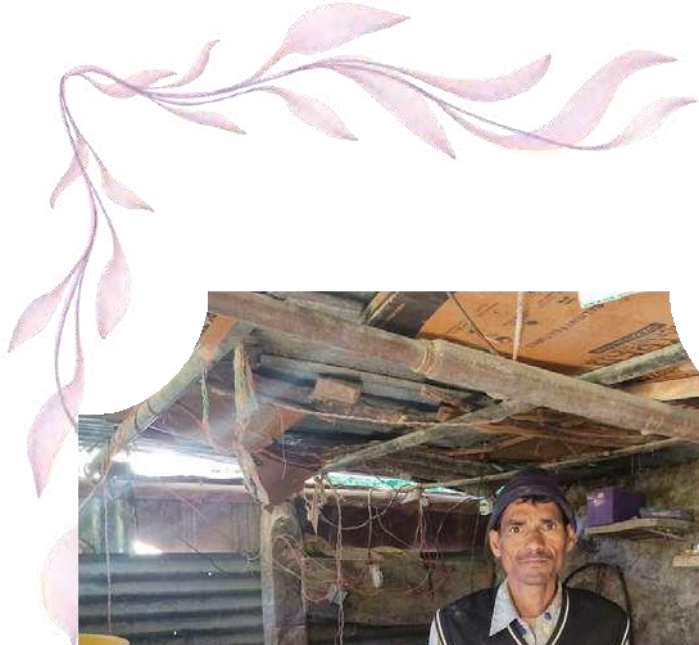
Dehradun, Uttarakhand, India
29/30, East Rest Camp, Govind Nagar, Race Course
Dehradun, Uttarakhand 248001, India
Lat 30.311711°
Long 78.038465°
29/11/22 03:54 PM GMT +05:30

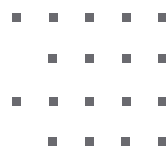




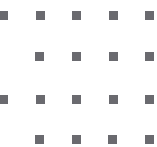














सीएसआर प्रभाव आकलन रिपोर्ट

तैयारकर्ता एसआर एशिया

4एफ-सीएस-25 और 26, अंसल प्लाजा मॉल,
सेक्टर-1, वैशाली, गाजियाबाद,
उत्तर प्रदेश 201010